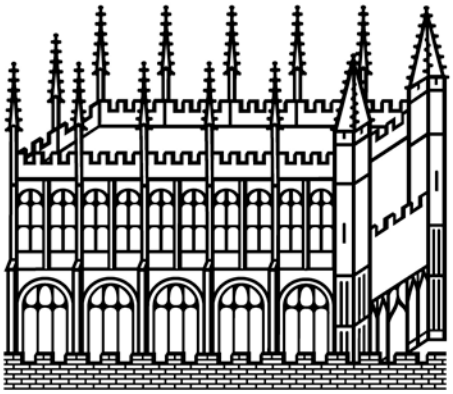


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

ग्वाल कवि कृत

भक्तभावन

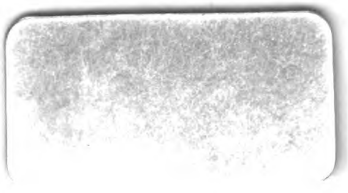
डॉ० प्रेमलता बाफना

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

9/99



Hindi Grad 1



ग्वाल कवि कृत

भक्तभावन

संपादिका
डां० प्रेमलता बाफना
रीडर, हिन्दी विभाग
महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

BHAKTBHAWAN

by

Gwal Kavi

ISBN-81-7124-092-5

प्रथम संस्करण : १९९१ ई०



प्रकाशक :

विश्वविद्यालय प्रकाशन

चौक, वाराणसी-२२१००१

मुद्रक :

शीला प्रिण्टर्स

लहरतारा, वाराणसी

पूज्य पिताजी

की

पावन स्मृति में

आभार

महाकवि ग्वाल 'भक्तभावन' की पाण्डुलिपि महाराज सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा के प्राच्य विद्यामंदिर (ओरिएण्टल इंस्टीट्यूट) के हस्तलिखित विभाग में सुरक्षित है। इस पाण्डुलिपि को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान करने के लिए मैं प्राच्य विद्यामंदिर के पदाधिकारियों की आभारी हूँ। विशेष रूप से मैं तत्कालीन डायरेक्टर महोदय प्रो० एस० जी० कांटावाला के प्रति अपना आभार व्यक्त करती हूँ। इस पुस्तक की प्रस्तावना स्वरूप दो शब्द लिखने के लिए भूतपूर्व हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो० एम० जी० गुप्त के प्रति भी मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

–प्रेमलता बाफना

प्रस्तावना

रीति-परम्परा के कवि और आचार्य ग्वाल व्यापक काव्य-चेतना से सम्पन्न काव्यकार हैं। जिन्हें भारतीय इतिहास का ज्ञान है वे इस तथ्य से सहमत होंगे कि उनके अन्तिम दिनों में भी आधुनिक नव-जागरण अथवा दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान का आरम्भ नहीं हुआ था। उनके मृत्युकाल (सं० १९२४ या सन् १८६७ ई०) में भारतेन्दु जी ने अपनी कलम सँभालो ही थी और आरम्भ काल के लगभग चौदह वर्षों तक उनके नाटक और कविताएँ मध्यकालीन चेतना के ही परिचायक थे। तदनन्तर 'भारत दुर्दशा' नाटक और मुकरियाँ निश्चय ही आधुनिकता की धरती पर प्रतिष्ठित कही जा सकती हैं। जहाँ तक हिन्दी कविता की प्रधान धारा का विषय है वह द्विवेदी युग के आरम्भ तक रीतिकालीन चेतना से मुख्यतः जुड़ी रही है। अन्तर इतना ही है कि सन्दर्भ की दृष्टि से भारतेन्दु युग में दरबारी काव्य के स्थान पर गोष्ठी काव्य की रचना आरम्भ हो गयी, किन्तु प्रवृत्ति में कोई विशेष अन्तर नहीं परिलक्षित होता। हिन्दी क्षेत्र में जब देशी राज्य और उनके दरबार ही न रहे हों, तो यह स्वाभाविक ही था। जहाँ तक कविता में मिलनेवाली घनाक्षरी-कवित्त-सवैया की शैली, शब्द-चयन, अलंकार-योजना, वाग्विदग्धता आदि विशेषताओं का ही विषय है द्विवेदी युग के आरम्भ तक की हिन्दी कविता प्रधानतया मध्यकालीन काव्य-चेतना से ही परिलक्षित है।

उपर्युक्त तथ्यों के प्रकाश में हम ग्वाल कवि के कविता काल तथा निजी कृतित्व की पूर्ववर्ती तथा परवर्ती परम्परा का निदर्शन कर सकते हैं और इस निदर्शन के प्रकाश में डॉ० (कु०) प्रेमलता बाफना द्वारा प्रस्तुत कवि के मूल्यांकन को यथेष्ट न्याय-पावना दे सकते हैं। रीति और भक्ति काव्य ग्वाल के पश्चात् भी लिखा गया है और उसकी पुष्कल-सामग्री गुणवत्ता में ग्वाल की कविता से निर्बल भी नहीं कही जा सकती। कवि गोविन्द गिल्लाभाई, दत्त द्विजेन्द्र, रसराशि, द्विजदेव जैसे समर्थ कवियां को यहाँ स्मरण करा देना पर्याप्त होगा। अतः रीतिकाव्य की सीमा रेखा उनके कविता काल की समाप्ति से खींच देना नितान्त उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। आचार्यत्व के भी साक्ष्य ग्वाल के बाद में प्राप्त होते हैं, फिर भी ग्वाल के विषय में डॉ० कु० बाफना की एतद्विषयक स्थापना को एक प्रकार से सटीक कहा जायेगा। उन्होंने बड़े मनोयोगपूर्वक 'भक्तभावन' संग्रह की छोटी-बड़ी कृतियों का पाठालोचन प्रस्तुत करके रीति-परम्परा की एक अल्पज्ञात और एक प्रकार से अज्ञातप्राय कड़ी को प्रकाश में लाने का प्रयास किया है। भूमिका में कवि के कृतित्व के समग्रतया मूल्यांकन का संकेतमात्र देकर उन्होंने अपने विवेचन को इन्हीं कृतियों तक सीमित रखा है। यह विवेचन विषयवस्तु का सम्यक् विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

क्रमशः प्रकाश में आनेवाले अनेक महत्वपूर्ण तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अठारहवीं शताब्दी ईस्वी तक की रीतिकालीन कविता का जितना विस्तृत अध्ययन प्रकाश में आया है, परवर्ती एक शती के कवियों और उनकी कृतियों पर

बहुत कम विचार हुआ है। बहुत बड़ी मात्रा में ऐसी सामग्री राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, बिहार के संग्रहों तथा नाभा-पटियाला, और पंजाब की कुछ छोटी-बड़ी पुरानी रियासतों में वर्तमान है। यह सम्भव है कि उसके यथेष्ट अनुशीलन के उपरान्त हमें अपनी पूर्ववर्ती धारणाओं को बदलना पड़े। कवि ग्वाल की रचनाएँ जिस कोटि की हैं, उस कोटि की तथा अनेक तो गुणवत्ता की दृष्टि से उससे कुछ ऊपर-नीचे की भूमियों की भी हैं। अतः मुझे विश्वास है कि ग्वाल के पश्चात् 'रीतिकाव्य की अटूट परम्परा का वैसा आलोक पुनः दिखाई नहीं देता'—विषयक लेखिका के निष्कर्षों में भविष्य में यत्किंचित् परिवर्तन करना पड़ेगा। इस सम्भावना के लिए भी उसका द्वार खोलनेवाली डॉ० बाफना हमारे साधुवाद की अधिकारिणी ही कही जायेंगी क्योंकि उन्होंने इस अन्तिम कड़ी के एक पक्ष को पहले-पहल साहित्य जगत् में प्रस्तुत किया है।

मुझे विश्वास है कि प्राचीन काव्य-सामग्री के सम्यक् अध्ययन की दिशा में लेखिका का यह प्रयास एक सुदृढ़ और सराहनीय पदन्यास सिद्ध होगा। आशा है सुधी विद्वज्जनों के बीच इस शोध-सामग्री का समुचित स्वागत होगा।

–मदन गोपाल गुप्त

२५-५-१९९१

भू० पू० प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
महाराज सयाजीराव वि० वि०, बड़ौदा

अनुक्रम

भूमिका : जीवन-परिचय, काव्य-परिचय, समीक्षासार ९–२६

मूलपाठ :

१. यमुना लहरी १
२. नखशिख २१
३. गोपी पचीसी ३१
४. राधाष्टक ३६
५. कृष्णाष्टक ३८
६. रामाष्टक ४०
७. गंगा स्तुति ४२
८. दशमहाविद्यान की स्तुति ४५
९. ज्वालाष्टक ४७
१०. पहिला गणेशाष्टक ४९
११. दूसरा गणेशाष्टक ५१
१२. शिवादि देवतान की स्तुति ५३
१३. षट्ऋतु वर्णन तथा अन्योक्ति वर्णन ५९
१४. प्रस्तावक नीति कवित्त ८१
१५. द्रगशतकम् ८८
१६. भक्ति और शांतरस के कवित्त ९५

भूमिका

रीति परम्परा के अंतिम आचार्य-कवि ग्वाल (सं० १८५९–१९२४ वि०) रीतिकाल को आलोकित करने वाले एक ऐसे नक्षत्र हैं, जिनकी कृतियों में रीतिकाव्य अपनी पूर्णता को प्राप्त कर अस्त होने लगता है। वस्तुतः ग्वाल का काव्य रीतिकाव्य चेतना का वह निर्वाणोन्मुख दीपक है जिसके पश्चात् रीतिकाव्य की अटूट परम्परा का वैसा आलोक पुनः दिखाई नहीं देता है। अतएव यह कहा जा सकता है कि ग्वाल तथा उनका कृतित्व रीतिकाल की अंतिम सीमारेखा का निर्माण करने वाला केन्द्र बिन्दु है। ब्रजभाषा काव्य के प्रकाण्ड पंडित आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने ग्वाल कवि के महत्व के सम्बन्ध में लिखा है—"ग्वाल कवि ने रीति ग्रन्थों के लिए संस्कृत का पर्याप्त वाङ्मय आलोड़ित किया था। कवि रूप में ग्वाल कवि का महत्व चाहे उतना न हो पर रीति ग्रन्थकार के रूप में उनका पूरा महत्व माना जाना चाहिए। हिन्दी रीति साहित्य की परम्परा में संस्कृत आधार ग्रन्थों का कदाचित सबसे अधिक आलोड़न करने वाले ये ही हुए हैं।"

जीवन परिचय

ग्वाल कवि का समस्त जीवन काव्य-रचना करने में ही व्यतीत हुआ था। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि काव्य ही उनका मनोरंजन था और वही उनकी जीविकोपार्जन का साधन भी। ऐसे महत्वपूर्ण कवि के जीवन-वृत्त एवं रचनाओं की प्रचुर प्रामाणिक जानकारी तत्कालीन युग के अन्य कवियों की भाँति ही अनुपलब्ध है। पण्डित विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, डॉ० किशोरीलाल गुप्त, डॉ० ब्रजनारायण सिंह तथा डॉ० भगवान सहाय पचौरी आदि विद्वान् मुन्शी अमीर अहमद मीनाई साहब की प्रसिद्ध पुस्तक 'इन्तखाबे यादगार' के आधार पर ग्वाल की जन्मतिथि सं० १८५९ वि० मानते हैं, जो अधिक प्रामाणिक प्रतीत होती है। ग्वाल के सम्बन्ध में सर्वाधिक प्राचीन लेख मीनाई साहब का ही मिलता है। वे अपने युग के एक ख्यातनामा शायर थे और रियासत रामपुर में लगभग चालीस वर्ष तक राज्याश्रित रहे थे। ग्वाल भी रामपुर दरबार में कुछ वर्ष राज्याश्रित रहे थे। मीनाई साहब उनके समसामयिक और अभिन्न मित्र थे।

ग्वाल के पिता का नाम सेवाराम राय था और ये जाति से ब्रह्मभट (बन्दीजन) थे। इनका आरम्भिक जीवन वृन्दावन मथुरा में व्यतीत हुआ था। कवि नवनीत चतुर्वेदी के अनुसार जब ग्वाल केवल आठ वर्ष के थे तभी इनके पिता की मृत्यु हो गयी थी। बालक ग्वाल के पालन-पोषण और शिक्षा-दीक्षा की समस्त जिम्मेदारी इनकी निराश्रित माता के कन्धों पर आ गयी। रायों के कुल-धर्मानुसार ग्वाल की माता भी उनको किसी काव्य-शिक्षक से शिक्षा दिलाने के लिए बड़ी बेचैन रही। उन दिनों वृन्दावन में दयानिधि गोस्वामी अपनी पाठशाला में कवियों को शिक्षा देते थे। ग्वाल की माता ने पुत्र को दयानिधि के चरणों में डाल दिया। इसी पाठशाला में प्रसिद्ध कवि गोपाल सिंह नवीन भी पढ़े थे। कवि हरदेव ग्वाल के सहपाठी

थे। किन्तु ग्वाल की शिक्षा यहाँ अधिक दिन तक न चल सकी।[१] ग्वाल की माता ग्वाल को लेकर अपने पितृगृह काशी चली गयी। वहाँ चार-पाँच वर्षों तक ग्वाल ने बड़े मनोयोग पूर्वक संस्कृत के काव्यशास्त्रीय ग्रन्थों का अध्ययन किया। काशी से लौटकर ग्वाल ने बरेली के खुशहालराय नामक कवि को काव्य-गुरु बनाया। बरेली में इनकी एक पाठशाला चलती थी, जिसमें कविगण शिक्षा पाते थे। ग्वाल ने इनको सर्वत्र सम्मान सहित स्मरण किया है तथा 'कवि मुकुट मणि' विशेषण के साथ स्पष्टतः गुरु घोषित किया है।

"श्री खुसाल कवि मुकुटमनि ताकरि सिष्य विकास।
वासी वृन्दा विपिन के श्री मथुरा सुखवास॥"[२]

कविता काल

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सं० १८७९ वि० से सं० १९१८ वि० तक ग्वाल का कविता काल माना है।[३] अधिकांश विद्वान् यद्यपि इसी मत के पोषक हैं किन्तु डॉ० भगवान सहाय पचौरी के अनुसार आरम्भिक ग्रन्थों 'निम्बार्क स्वाम्यष्टक' और 'नेह निबाह' तथा परवर्ती रचना 'दृगशतक' के उपलब्ध होने के पश्चात् दोनों ही तिथियाँ परिवर्तित हो जाती हैं। 'निम्बार्क स्वाम्यष्टक' एवं 'नेह निबाह' दोनों ही लघु ग्रन्थ भाव, भाषा और शैली को देखते हुए कवि के आरम्भिक काव्याभ्यासकाल की अत्यन्त सामान्य कोटि की कृतियाँ सिद्ध होती हैं। भले ही इनमें रचनाकाल का उल्लेख नहीं है परन्तु ये प्रत्येक दशा में 'यमुना लहरी' और 'रसिकानन्द' के पहले लिखी गयी हैं। अतः इनका कविताकाल १८७९ वि० से पूर्व ही मानना उचित है।[४] भक्तभावन का संग्रह काल सं० १९१९ वि० है। इस प्रकार इनका कविताकाल सं० १८७९ वि० के पूर्व से सं० १९१९ वि० तक कहा जा सकता है।

राज्याश्रय

काव्य रचना में पारंगत हो जाने पर ग्वाल देशाटन करते हुए नाभा राज्य के महाराजा जसवंतसिंह की सेवा में उपस्थित हुए। महाराजा जसवंतसिंह काव्य प्रेमी और कवियों के आश्रयदाता होने के साथ ही साथ स्वयं भी एक अच्छे कवि थे। उन्होंने महाकवि ग्वाल को अपने दरबार में रख लिया। नाभा दरबार में उस समय जितने राज्याश्रित कवि थे उनमें वृन्दावन निवासी गोपालराय 'नवीन' प्रमुख थे; जिनसे ग्वालजी का अच्छा परिचय था। बचपन में दोनों ने वृन्दावन में गोस्वामी दयानिधि की पाठशाला में एक साथ काव्यशिक्षा प्राप्त की थी। बहुत संभव है कि नवीनजी की प्रेरणा से ही ग्वाल नाभा दरबार में पहुँचे हों। रसिकानन्द ग्रन्थ की रचना सं० १८७९ वि० में नाभा में हुई थी। इससे अनुमान होता है कि ग्वाल सं० १८७९ वि० के पूर्व नाभा गये थे। अंतर्साक्ष्य के आधार पर सं० १८९१ वि० में 'कवि दर्पण' तथा सं० १८९३ वि० में 'हमीरहठ' की रचना अमृतसर में की गयी थी। कवि उस समय सरदार लहनासिंह का आश्रित था। इतिहासकार सैयद मुहम्मद लतीफ के अनुसार सरदार लहनासिंह देशराजसिंह मजीठिया का पुत्र था जो महाराजा रणजीतसिंह द्वारा पहाड़ी राज्य का शासक नियुक्त किया था। परन्तु वह अमृतसर में रहकर ही राजकाज करता था।[५] लहनासिंह कई भाषाओं के ज्ञाता और ज्योतिष के अच्छे जानकार थे। लाहौर के महाराजा रणजीतसिंह (सं० १८३७–१८९६ वि०) ने अल्पावस्था में ही सं० १८४७ वि०

में राजकाज सँभाला था और सं० १८५८ वि० में महाराजा की उपाधि धारण की और उनकी मृत्यु सं० १८९६ वि० में हुई। अंतर्साक्ष्य के आधार पर 'विजय विनोद' की रचना सं० १९०१ वि० में पूर्ण हुई। महाराजा शेरसिंह की मृत्यु सं० १९०३ वि० में हुई। 'विजय विनोद' में महाराजा रणजीतसिंह के राज्य से शेरसिंह के काल तक का, लाहौर दरबार के षड्यंत्रों और युद्धों का कवि ने ऐसा सजीव चित्रण किया है कि कवि ने जैसे सब कुछ अपनी आँखों से देखा हो। ये जीते जागते चित्र महाराजा रणजीतसिंह के दरबार में ग्वाल की उपस्थिति के प्रबल प्रमाण हैं। परन्तु कवि लाहौर दरबार में किस संवत् में उपस्थित हुआ, इसका स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता। कवि सं० १८९३ वि० तक अमृतसर में था। इसके पश्चात् ही कभी वह रणजीतसिंह की मृत्यु (सं० १८९६ वि०) के पूर्व लाहौर पहुँचा होगा, जहाँ पर संवत् १८९१ वि० तक उसका रहना प्रमाणित होता है। पं० चन्द्रकान्त बाली के मतानुसार ग्वाल कवि लाहौर दरबार छोड़कर पुनः नाभा गये थे।[६] राजा जसवंत सिंह की मृत्यु (सं० १८९७ वि०) के उपरांत उनके अठारह वर्षीय पुत्र देवेन्द्रसिंह अपदस्थ कर दिये गये। इसके पश्चात् उनके पुत्र भरपूरसिंह आठ वर्ष की उम्र में ही राजा बनाये गये।[७] ग्वाल भरपूरसिंह के दरबार में रहे और यहीं उन्होंने 'गुरु पचासा' की रचना की। सं० १९१७ वि० में उन्होंने यहीं रहते हुए मीरहसन को प्रसिद्ध मसनवी 'सिहर उल बयान' का 'इश्क लहर दरयाव' नाम से काव्यानुवाद प्रस्तुत किया। अंतर्साक्ष्य के आधार पर यह ग्रन्थ राजाज्ञा से ही लिखा गया था। अतएव नाभा में कवि ग्वाल दूसरी बार भी रहे, यह प्रमाणित हो जाता है। कवि नवनीत चतुर्वेदी ने लिखा है कि ग्वाल ने लाहौर से चलकर पंजाब की सुकेतमंडी में अपना डेरा डाला। वहाँ के शासक ने उनका स्वागत किया। ग्वाल वहीं रहने लगे और अपने दोनों लड़कों—खूबचन्द और खेमचन्द को भी वहीं बुला लिया। यहाँ ग्वाल को जीविका के लिए एक गाँव भी मिला था। कुछ समय पश्चात् ग्वाल खूबचन्द के साथ मथुरा आ गये और खेमचन्द को वहीं मण्डी में गाँव आदि के प्रबन्ध के लिए छोड़ दिया। मथुरा आने के बाद ग्वाल कभी-कभी राजपूताने की रियासतों में भी दौरा लगा आते थे। टोंक के नबाब के लिए उन्होंने खड़ी बोली में 'कृष्णाष्टक' की रचना की जिसे उन्होंने खूब पसन्द किया।[८] किन्तु यह प्रमाणित नहीं होता। ग्वाल का अन्तिम समय रामपुर में व्यतीत हुआ था। वहाँ के शासक हिन्दी-उर्दू के ज्ञाता और काव्य-मर्मज्ञ थे। नवाबजादा इमदादुल्लाखाँ 'ताब' ग्वाल के शिष्य हो गये थे। यहीं ग्वाल का देहान्त हुआ जिसका मुंशी अहमद मीनाई 'अमीर' साहब ने अपने ग्वाल विषयक संस्मरणों में उल्लेख किया है।

वंश परिचय

ग्वालजी के दो पुत्र थे—खूबचन्द और खेमचन्द। दोनों ही विवाहित थे। कविता करने की प्रतिभा दोनों में थी। नवनीतजी के अनुसार निःसंतान खूबचन्द की युवावस्था में ही मृत्यु हो गयी थी। खेमचन्द कवि के साथ मण्डी में रहने लगा था। जहाँ से वह वापिस लौटकर मथुरा नहीं आया। उसकी पत्नी कवि की मृत्यु तक मथुरा में ग्वाल की हवेली में ही रही किन्तु उसके भी कोई सन्तान नहीं थी। अतएव ग्वाल का वंश आगे नचल सका।

सम्प्रदाय

ग्वाल किस सम्प्रदाय से जुड़े हुए थे तथा उनके इष्टदेव कौन थे ? आदि प्रश्न विवाद-ग्रस्त रहे हैं। ग्वाल के पिता राधावल्लभीय गोस्वामियों के राय थे। ग्वाल ने स्वयं राधा-वल्लभीय गोस्वामियों के गुरु दयानिधि से आरम्भिक शिक्षा प्राप्त की थी। राधाकृष्ण और गोप-गोपियों सम्बन्धी भक्तिपरक साहित्य की रचना के कारण उनको कुछ विद्वान् वैष्णव अथवा राधावल्लभीय मानते हैं। 'निम्बार्क स्वाम्यष्टक' की रचना करने के कारण कुछ विद्वान् उन्हें निम्बार्कमतावलम्बी मानते हैं। जगदम्बा का भी ग्वाल ने पर्याप्त वर्णन किया है। इसलिए कुछ उन्हें शाक्त भी कहते हैं। वस्तुतः उनकी रचनाओं के सूक्ष्म अध्ययन से यह प्रमाणित होता है कि कवि किसी सम्प्रदाय विशेष का अनुगामी अथवा आग्रही न था। एक भक्त के रूप में उसने सभी देवी-देवताओं की स्तुति की है। सामान्य रूप से कवि शिवजी का उपासक था और जगदम्बा उनकी इष्टदेवी थी। ग्वाल का बनवाया हुआ शिव-जगदम्बा का ग्वालेश्वर मन्दिर इस मान्यता का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

व्यक्तित्व

महाकवि ग्वाल की आकृति बड़ी भव्य और आकर्षक थी। उनका कद मझोला और वर्ण श्याम था। वे अपने मस्तक पर सदैव केसरिया अर्द्धचन्द्र लगाया करते थे और तन पर बढ़िया अँगरखा तथा सिर पर केसरिया पाग पहिना करते थे। वे कंधे पर गर्मी व वर्षा में बनारसी सेला और जाड़े में काश्मीरी दुशाला धारण करते थे। उनकी प्रकृति ओजपूर्ण थी और वे स्वभाव से कुछ अक्खड़ थे। उन्हें अपने पांडित्य का अभिमान था। अतः किसी भी कवि पण्डित से शास्त्रार्थ करने को वे सदैव तैयार रहते थे। उन्होंने अपने 'कविदर्पण' ग्रन्थ में अनेक कवियों के दोषों का कथन किया है। इसलिए समकालीन कवि समाज उनसे रुष्ट भी रहा करता था। फिर भी उनके पाण्डित्य और काव्य चमत्कार का सभी लोहा मानते थे। दूर दूर से कवि लोग ग्वाल से काव्य-शिक्षा ग्रहण करने आते थे। इनके शिष्यों की भी एक लम्बी सूची है जिनमें से खड्गसिंह किशोर और साधुराम प्रसिद्ध कवि हुए हैं। कवि ग्वाल में आचार्यसुलभ स्वाभिमान था। उन्होंने अपने विस्तृत देशाटन के अनुभवों से व्यवहार कुशलता, वाग्विदग्धता और प्रत्युत्पन्नमतित्व को प्रखर और परिपक्व किया था जिससे हिन्दू होते हुए भी कवि मुसलमान और सिखों द्वारा प्रशंसित तथा पुरस्कृत हुआ था। संक्षेप में कहा जा सकता है कि ग्वाल का व्यक्तित्व असाधारण था। मीनाई साहब के अनुसार ग्वाल की मृत्यु सं० १९२४ वि० में हुई थी।

रचनाएँ

ग्वालजी की मृत्यु के अनन्तर उनके तथाकथित मित्र नाथूलाल शाह ग्वाल की जमा की हुई समस्त संपत्ति हड़प गये और षड्यन्त्र कर ग्वाल की पुत्रवधू को भी हवेली से निकाल दिया। जब यह मामला अदालत में गया तो उक्त हवेली से ग्वालजी का सम्बन्ध सिद्ध न हो, इसलिए उसमें रखे हुए कागज-पत्रों में आग लगवा दी गयी जिससे कवि ग्वाल के कई ग्रन्थों की हस्तलिखित प्रतियाँ तथा उनके संगृहीत अनेक दुर्लभ हस्तलिखित ग्रन्थ भी जलकर भस्म हो गये। ग्वालजी के समकालीन कवि नवनीत के वंशजों से ज्ञात हुआ कि कुछ ग्रन्थ नवनीत

जी ने जलते हुए मकान में घुस कर बचा लिये थे। इस प्रकार ग्वालजी के अभिन्न मित्र के कारण ही यशकीर्तिस्वरूप उनका साहित्य दुर्लभ हो गया।

अब तक विद्वानों ने महाकवि ग्वाल के इकतीस प्रामाणिक ग्रन्थ स्वीकार किये हैं जिनमें रसरंग, कविदर्पण, प्रस्तार प्रकाश, साहित्यानन्द, रसिकानंद, हमीर हठ, विजय विनोद, नेह निबाह, वंशीवीसा, निम्बार्क स्वाम्यष्टक, गुरुपचासा, इश्क लहर दरयाव आदि इनकी मुख्य रचनाएँ हैं। इनकी अन्तिम रचना 'भक्तभावन' है। 'भक्तभावन' ग्वाल की भक्ति-परक रचनाओं का संग्रह है जिसका संकलन स्वयं कवि ने सं० १९१९ वि० में मथुरा में किया था। हस्तलिखित प्रति में इसका उल्लेख इस प्रकार किया गया है।

'तिनके चरनांबुजन को, करि साष्टांग प्रनाम।
ग्रन्थ फुटकरन को करत, एक ग्रन्थ अभिराम।
बंदी विप्रसु ग्वाल कवि, श्री मथुरा सुखधाम।
'भक्तभावन' जु ग्रन्थ को, धर्‌यो बुद्धि बल नाम।
संवत निधि ससि निधि ससी, मास अषाढ बखान।
सितपख दुनिया रवि विषै, प्रगट्यौ ग्रंथ सुजान।'

हस्तलिखित प्रति और प्रतिलिपिकार

सुप्रसिद्ध परवर्ती रीतिकालीन कवि ग्वाल द्वारा विरचित 'भक्तभावन' की हस्तलिखित प्रति महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग द्वारा आयोजित शोधयात्राओं में गुजरात के शोधक, विद्वान, कवि एवं आचार्य गोविन्द गिल्लाभाई के निजी संग्रह से बड़े यत्न-पूर्वक प्राप्त हुई है। सम्प्रति यह प्रति महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय के प्राच्य विद्या-मन्दिर के हस्तलिखित विभाग में सुरक्षित है। वास्तव में 'भक्तभावन' महाकवि ग्वाल का कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ न होकर अनेक भक्तिप्रधान मुक्तक ग्रन्थों का संग्रह है जिसे स्वयं कवि ग्वाल ने अपने जीवन के अन्तिम दशक में किया था। सम्भवतः भक्तिप्रधान रचनाओं का संकलन होने के कारण ही ग्वाल ने इसका नामकरण 'भक्तभावन' किया था।

प्रस्तुत हस्तलिखित प्रति के प्रतिलिपिकार गुजरात के प्रसिद्ध कवि गोविन्द गिल्ला-भाई हैं जिन्होंने स्वयं हिन्दी भाषा में अनेक ग्रन्थों का प्रणयन करके हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाया है। इसकी मूल प्रति उन्हें मथुरा निवासी ग्वाल के समकालीन कवि नवनीत चतुर्वेदी से प्राप्त हुई थी। इसका उल्लेख हस्तलिखित प्रति के अन्त में अंकित 'पुष्पिका' में इस प्रकार किया गया है : ''विक्रम संवत् १९५३ का माघ वदी १० शुक्रवार के दिन श्री सिहोर में गोविन्द गिलाभाई ने यह ग्रन्थ मथुरा से कवि नवनीत जी की पास से मँगाय के उन प्रति पर से यह प्रति स्वार्थे स्वहस्ते लिखके पूरी की है।''

डॉ० भगवानसहाय पचौरी के पास भी 'भक्तभावन' की प्रतिलिपि है। यह प्रतिलिपि उन्होंने कवि नवनीत के पास की हस्तलिखित प्रति से की हैं। उनके अनुसार कवि नवनीत के पास की हस्तलिखित प्रति स्याही, कागज तथा लिखावट की दृष्टि से स्वयं ग्वाल लिखित है। हमारा अनुमान है कि गोविन्द गिल्लाभाई तथा डॉ० भगवानसहाय पचौरी दोनों ने ही

कवि नवनीत के पास उपलब्ध हस्तलिखित प्रति पर से प्रतिलिपि की है। अतएव दोनों प्रतिलिपियों में विशेष अन्तर की सम्भावना नहीं है। इस दृष्टि से प्रस्तुत हस्तलिखित प्रतिलिपि की प्रामाणिकता असंदिग्ध रूप से स्वीकार की जा सकती है। खेद है कि हमें प्रयास करने के बाद भी डॉ० पचौरी के पासवाली सम्पूर्ण प्रतिलिपि प्राप्त नहीं हो सकी।

हस्तलिखित प्रति का विवरण

यह प्रतिलिपि एक सौ दो पूर्ण साइज के पृष्ठों में लिखी हुई है। परिशिष्ट में ग्वाल कृत नेह निबाह, बंशी वीसा तथा कुब्जाष्टक पृथक्-पृथक् रूप से दिये हुए हैं। परिशिष्ट को मिलाकर कुल पत्र संख्या एक सौ सोलह है। लिखावट अत्यन्त स्वच्छ एवं यथासंभव वर्त्तनी के दोषों से मुक्त है। इसमें सोलह छोटे-छोटे ग्रन्थ पृथक्-पृथक् नामोल्लेख सहित संगृहीत हैं। प्रत्येक ग्रन्थ की छन्द क्रमसंख्या एक से आरम्भ की गयी है और अन्त में ग्रन्थ 'सम्पूर्ण' का भी उल्लेख किया गया है जिससे इनके पृथक्करण की समस्या भी भलीभाँति समाधान पा जाती है। संगृहीत ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

१. **यमुनालहरी**—छन्द संख्या १०८ कवित्त, ५ दोहे, कुल मिलाकर ११३ छन्द। पत्र संख्या १ से २१ तक सम्पूर्ण।

२. **श्रीकृष्णजू को नखसिख**—छन्द संख्या १ से ६५ तक। पत्र संख्या २१ से ३२ तक, सम्पूर्ण।

३. **गोपी पचीसी**—छन्द संख्या १ से २५ तक। पत्र संख्या ३३ से ३७ तक, सम्पूर्ण।

४. **राधाष्टक**—छन्द संख्या १ वे ८ तक। पत्र संख्या ३७ से ३८ तक, सम्पूर्ण।

५. **कृष्णाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ३९ से ४० तक, सम्पूर्ण।

६. **रामाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ४० से ४१ तक, सम्पूर्ण।

७. **गंगास्तुति**—छन्द संख्या १ से १५ तक। पत्र संख्या ४२ से ४५ तक, सम्पूर्ण।

८. **दशमहाविद्यान की स्तुति**—छन्द संख्या १ से १२ तक। पत्र संख्या ४५ से ४७ तक, सम्पूर्ण।

९. **ज्वालाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ४८ से ५० तक, सम्पूर्ण।

१०. **प्रथम गणेशाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ५१ से ५३ तक, सम्पूर्ण।

११. **द्वितीय गणेशाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ५४ से ५५ तक, सम्पूर्ण।

१२. **शिवादि देवतान की स्तुति**—छन्द संख्या १ से ३४ तक। पत्र संख्या ५५ से ६० तक, सम्पूर्ण।

१३. **षट्ऋतु वर्णन तथा अन्योक्ति**—छन्द संख्या १ से १२४ तक। पत्र संख्या ६० से ८३ तक, सम्पूर्ण।

१४. **प्रस्तावक नीति कवित्त**—छन्द संख्या १ से ४० तक। पत्र संख्या ८३ से ९० तक, सम्पूर्ण।

१५. **वृगशतक**—छन्द संख्या १ से १०३ तक। पत्र संख्या ९० से ९८ तक, सम्पूर्ण।

१६. **भक्ति और शान्तरस के कवित्त**—छन्द संख्या १ से २३ तक। पत्र संख्या ९८ से १०२ तक, सम्पूर्ण।

इति भक्तभावन ग्रन्थ पूर्णम्।

परिशिष्ट

१. **नेह निबाह ग्रन्थ**—छन्द संख्या १ से ३० तक। पत्र संख्या १०५ से ११० तक, सम्पूर्ण।

२. **बंशी बीसा**—छन्द संख्या १ से २० तक। पत्र संख्या १११ से ११४ तक, सम्पूर्ण।

३. **कुब्जाष्टक**—छन्द संख्या १ से ८ तक। पत्र संख्या ११५ से ११६ तक, सम्पूर्ण।

काव्यपरिचय

इनमें से यमुना लहरी[९], श्रीकृष्णजू को नखशिख[१०] तथा षट्ऋतु वर्णन[११] प्रकाशित हैं। किन्तु इनके प्रकाशित संस्करण संप्रति अनुपलब्ध ही हैं। संभवतः अन्य सभी रचनाएँ अप्रकाशित हैं। संगृहीत ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. **यमुनालहरी**—यह यमुना स्तुति में लिखी गयी महाकवि ग्वाल की प्रथम प्रसिद्ध रचना है। प्रारम्भ के मंगलाचरण के दोहे में राधा की स्तुति की गयी है :—

श्रीवृषभान कुमारिका, त्रिभुवन तारक नाम।
सीस नवावत ग्वाल कवि, सिद्ध कीजिये काम।

बाद के दोहों में ग्वालजी ने अपना परिचय इस प्रकार प्रस्तुत किया है:—

वासी वृन्दा विपिन के, श्री मथुरा सुखवास,
श्री जगदम्बा दई हमें, कविता विमल विकास।
विदित विप्र बन्दी विशद, बरने व्यास पुरान।
ताकुल सेवाराम को, सुत कवि ग्वाल सुजान।

ग्रन्थ के अन्त में इसका रचनाकाल कार्तिक पूर्णमासी सं० १८७९ वि० दिया हुआ है :—

संवत निधि[०] रिसि[७] सिद्धि[८] ससि[१] कातिक मास सुजान।
पूरनमासी परमप्रिय राधा हरिकौ ध्यान।
भयौ प्रगट वाही सुदिन, यमुना लहरी ग्रन्थ।
पढ़ै सुनै आनन्द मिलै जानि परै सब पन्थ।

वामगणना से सं० १८७९ वि० ही निकलता है तथा विद्वानों के द्वारा भी यही रचनाकाल मान्य है।

प्रस्तुत रचना में ग्वालजी ने यमुना के माहात्म्य का बड़ा ही रसपूर्ण चित्रण किया है। कवि ने यमुना की पावनता, नाम महिमा, यश-कीर्ति-दर्शन-फल, लोक प्रसिद्धि, पापनाशिनी,

पतितता रिणी, स्नान माहात्म्य का वर्णन करने के साथ ही साथ उसके धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पौराणिक एवं नैतिक पक्षों का भी बड़ा ही मनोज्ञ, भाववाही और काव्यमय चित्रण किया है। निम्नलिखित कवित्त में दिनेश-तनया की महिमा का इस प्रकार गुणगान किया गया है :—

गावैं गुन नारद न पावैं पार सनकादि,
बन्दीजन हारै हरी मेधा मंजु सेस की।
दास किये तें अति हरस सरस होत,
परम पुनीत होत पदवी सुरेस की।
ग्वाल कवि महिमा कही न परै काहु विधि,
बैठी रहै महिमा दसा हैं यो गनेस की।
तारक जमेंस की विदारक कलेस की है,
तारक हमेंस की है तनया दिनेस की।

इसमें ग्वाल ने अपने प्रिय विषय नवरस और षट्ऋतुओं का भी वर्णन किया है जिसके लिए उन्हें आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का कोप भाजन बनना पड़ा था।[१२] वीर रस का एक उदाहरण प्रस्तुत है :—

दीह दुराचारी व्यभिचारी अनाचारी एक,
न्हाई जमुना में कह्यो कैसे में उधरिहों।
फेर प्रान त्यागे भुज चार भई ताही ठौर,
आयौ जमदूत कहे तोहि में पकरिहों।
ग्वाल कवि एतो सुनि भाग्यबलि भाख्यो वह,
निज भुजदण्ड को घमण्ड अनुसरिहों।
तोरि जम दण्ड को मरोरि बाहु दण्ड को सु,
फोरि फारि मंडल अखंड खंड करिहों।

विद्वानों का अभिमत है कि यह रचना महाकवि पद्माकर की सुप्रसिद्ध रचना 'गंगा-लहरी' के आधार पर लिखी गयी है। किन्तु डॉ० भगवानसहाय पचौरी का मत है कि यह कवि का तृतीय ग्रंथ है तथा इसे लिखने को प्रेरणा उन्हें पण्डितराज जगन्नाथ की संस्कृत रचना गंगालहरी से मिली, पद्माकर की गंगालहरी से नहीं। पद्माकर की गंगालहरी वस्तुतः ग्वाल की यमुना लहरी के चार-पाँच वर्ष उपरांत की रचना है।[१३]

२. श्रीकृष्णजू को नखशिख :

यह महाकवि ग्वाल की एक अति प्रसिद्ध शृङ्गारिक रचना मानी जाती है। इसमें श्रीकृष्ण के नखशिख का रीतिकालीन पद्धति के अनुसार अत्यन्त सुन्दर विवेचन किया गया है। 'नखशिख' के अनेक छंद कवि के रसिकानंद, रसरंग, साहित्यानंद आदि ग्रंथों में भी प्राप्त होते हैं। भक्तभावन में ग्वालजी ने इसे अविकल रूप में संगृहीत किया है।[१४] इसका रचना-काल इस प्रकार दिया हुआ है :—

वेद[४] सिद्धि[८] अहि[८] [१]रैनिकर संवत आश्विन मास
भयो दशहरा को प्रगट नखशिख सरस प्रकाश।

वामगणना से सं० १८८४ वि० ही निकलता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ० किशोरीलाल गुप्त तथा डॉ० महेन्द्रकुमार ने भी अंतर्साक्ष्य के आधार पर इसी तिथि को मान्य किया है।

काव्य का प्रारम्भ कवि ने मंगलाचरण से किया है जिसमें उसने राधा और सरस्वती की श्लेष से सुन्दर वंदना प्रस्तुत की है। उसके पश्चात् कृष्ण, महेश, गणेश, गुरु, जगदम्बा तथा पिता का स्मरण किया है। कवि ने श्रीकृष्ण को आलम्बन बनाकर उनके चरण, चरणनख, चरणभूषण, जंघा, नितम्ब, कटि, काछनी, नाभि, त्रिबली, रोमराजि, उदर, भृगुलता, वक्षस्थल, वनमाल, कर, लकुट, बाँसुरी, कंठ, कंठमाल, चोटी, चिबुक, अधर, दशन, रसना, मुखसुवास, हास्य, नासिका, कपोल, कर्ण, कर्णाभूषण, नेत्र, चितवन, भृकुटी, भाल, मुखमण्डल, मोरमुकुट, गति, पीटपट तथा सम्पूर्ण मूर्ति का विशद काव्यमय चित्र प्रस्तुत किया है। प्रधान रूप से सभी रीतिकालीन कवियों ने नायक की अपेक्षा नायिका के नखशिख का बड़े ही विस्तार से कलात्मक चित्रण किया है। किन्तु महाकवि ग्वाल के सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि उन्होंने प्रस्तुत रचना में नायक के नखशिख का बहुत ही सुन्दर, ललित, मधुर तथा कलापूर्ण चित्र अंकित किया है। भाषा काव्यानुरूप है। इस नखशिख वर्णन में शृंगार की अपेक्षा भक्ति की प्रधानता दिखाई पड़ती है। कायिक सौन्दर्य के साथ ही अन्तर्वर्ती सौन्दर्य का उद्घाटन करना भी कवि का लक्ष्य रहा है। एक उदाहरण प्रस्तुत है।

मीन मृग खंजन खिस्यान भरे मैन बान,
अधिक गिलान भरे कंज फल ताल के।

राधिका छबीली की छहर छवि छाक भरे,
छैलता के छौर भरे भरे छबि जाल के।

ग्वाल कवि आन भरे सान भरे तान भरे,
कछु अलसान भरे भरे मान भाल के।

लाज भरे लाग भरे लोभ भरे शोभ भरे,
लाली भरे लाड़ भरे लोचन है लाल के।

३. गोपी पचीसी : यह काव्य की पचीसी परम्परा में पच्चीस कवित्त सवैयों का कृष्ण भक्तिपरक एक उपालम्भ काव्य है। इसके रचना काल के सम्बन्ध में अलग से कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। 'भक्तभावन' में नखशिख के बाद यह रचना संगृहीत है। अतएव पूर्वापर क्रम के अनुसार सम्भव है 'नखशिख' के बाद इसकी रचना की गयी हो।

कृष्णमित्र उद्धव जी ब्रज में ब्रजबालाओं को ज्ञानयोग की शिक्षा प्रदान करने आते हैं। किन्तु बेचारी गोपियाँ साक्षात् रसरूप श्रीकृष्ण की रसिक लीलाओं को छोड़कर उद्धवजी के शुष्क ज्ञानयोग के उपदेश को ग्रहण करना नहीं चाहती हैं। उन्हें तो वहाँ उद्धवजी की उपस्थिति ही मर्मान्तिक पीड़ा का अनुभव कराती हैं। वे उद्धव के व्याज से कृष्ण को उपालम्भ देती हैं। देखिये—

गोपिन के काज जोग साज दै पठायौ ऊधौ
आवत न लाज डीठ प्रानन पियौ चहै।
बरी ही वियोग - बिरहाग्नि भभूकन में,
ता पर सलूक लूक लाखन दियौ चहै।
ग्वाल कवि कान्हर की कौन कुटिलाई कहै
जरै पै लगावै नोन, काटन हियौ चहै।
कंस की जो चेली, ताको चेला भयो हाय दैया,
हमें भेज सेली चेली आपुन कियौ चहै।

४. **राधाष्टक** : काव्य की अष्टक परम्परा में यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसके रचना-काल का कोई प्रामाणिक आधार प्राप्त नहीं होता है। 'भक्तभावन' में यह रचना 'गोपी पचीसी' के बाद संकलित है। यह भक्तिकाव्य है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि यद्यपि कवि ने राधारानी के वर्णन में रीतिकालीन तामझाम और उपकरण ग्रहण किये हैं फिर भी उसका एकमात्र लक्ष्य और उद्देश्य राधा की स्तुति ही रहा है। एक उदाहरण प्रस्तुत है :—

राधा महारानी मनि मन्दिर विराजमान,
मुकुर मयंक से जहाँ जड़ावकारी में।
बादले बनाव के बिछौने बिछे बेसुमार,
बीजुरी बिरी बनाय देत बलिहारी में।
ग्वाल कवि सुमन सुगन्धित केसर ले ले,
सची सुकुमार सो सुँघाये शोम भारी में।
दारा देवतान की दिमाकदार दिस दिस,
द्वार-द्वार दौरि फिरे खिदमतदारी में।

५. **कृष्णाष्टक** : यह रचना भी काव्य की अष्टक परम्परा में श्री कृष्ण को लक्ष्य करके रची गयी है। इसके रचना काल का भी कोई आधारभूत प्रमाण प्राप्त नहीं होता है। किन्तु ब्रजभाषा काव्य के प्रसिद्ध विद्वान् प्रभुदयाल मित्तल का मत है कि ग्वाल ने इसकी रचना टोंक के नबाब के लिए की थी।[१५] किन्तु टोंक दरबार में भी इसका कोई आलेख-प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है और न ही कोई अन्तर्साक्ष्य इस बात को प्रमाणित करने के लिए ही प्राप्त होता है। अतएव यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि इसकी रचना कब और किसके लिए की गयी होगी।[१६] इसमें आठ कवित्त हैं जिनका अन्तिम चरण सर्वत्र एक जैसा है :—

"चार सर वाले से कारिंदे हैं जिसी के वही
बंदे पे मेहरबान नजर बुलन्द है।"

हमारा अनुमान है कि ग्वालजी ने यह रचना समस्यापूर्ति के रूप में की होगी। उस समय राजदरबारों में आशुकवियों द्वारा समस्या पूर्ति की प्रथा भी प्रचलित थी। इसमें उर्दू, फारसी मिश्रित खड़ी बोली को ब्रजभाषा के परम्परागत छन्द कवित्त में ढालने का सफल और स्तुत्य प्रयास कवि ने किया है। खड़ी बोली के प्रयोग तथा विकास की दृष्टि से इस रचना का एक विशेष महत्व स्वीकार किया जा सकता है।

६. **रामाष्टक** : हमारा अनुमान है कि भक्ति की लोक सामान्य धारणा के कारण 'कृष्णाष्टक के साथ ही साथ कवि ने 'रामाष्टक' की भी रचना की होगी। इसमें भगवान राम की स्तुति की गयी है। अपने आपको पापी मानते हुए अन्य भक्त कवियों के समान ही ग्वाल भी प्रभु राम को उसी प्रकार की चुनौती देते हुए दिखाई पड़ते हैं—

गीधैं गीधै तारिकें सुतारिकै उतारिकै जू;
धारिके हिये में निज बात जटि जायगी।
तारिकै अवधि करी अवधि सुतारिबै की,
विपति विदारिबै की फाँस कटि जायगी।
ग्वाल कवि सहज न तारिबो हमारौ गिनौ,
कठिन परैगी पाप पाँति पढ़ि जायगी।
यातें जो न तारिहों तिहारी सौंह रघुनाथ,
अधम उधारिबे की साख घटि जायगी।

भक्ति की अनन्यता और तल्लीनता इसमें दिखाई पड़ती है। भाषा भी मंजुल, मनोहर और भाववाही है। इसके रचनाकाल का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। किन्तु इसका एक कवित्त 'रसरंग' में कवि ने उद्धृत किया है। 'रसरंग' का रचनाकाल १९०४ वि० है। अतएव कहा जा सकता है कि इसकी रचना इससे पूर्व हुई होगी।[१७]

७. **गंगास्तुति** : यह भी भक्तिकाव्य है और इसमें गंगा की स्तुति की गयी है। गंगा के माहात्म्य का वर्णन करना ही कवि का उद्देश्य रहा है। सम्भव है ग्वाल ने पद्माकर की गंगा लहरी से प्रेरणा लेकर इसकी रचना की हो। एक उदाहरण प्रस्तुत है :—

आई कढ़ि गंगे तू पहार बिंद मंदिर तें,
याही ते गुविंद गात स्याम हर औरे हैं।
फेर धँसि निकस परी है तू कमंडल तें,
याही तें विरंचि परे पीरे चहुँ कोरे हैं।
ग्वाल कवि कहैं तेरे विरही विरंग ऐसे,
गिरही तिहारे तें बखाने रिस जोरे हैं।
स्याम रंग अंगन तौ चाहियै तमोगुनी को,
धारी सीस ईस यातें अंग अंग गौरे हैं।

इसका एक छन्द रसिकानन्द में २।१३३ और एक छन्द 'रसरंग' में ८।७० प्राप्त होता है। अतएव यही कहा जा सकता है कि सं० १८७९ वि० से १९०४ वि० के मध्य इसकी रचना हुई होगी।[१८]

८. **दशमहाविद्यान की स्तुति** : संस्कृत साहित्य में देवी-देवताओं को लेकर स्तोत्र काव्य लिखने की परम्परा रही है। इसी परम्परा को लेकर ब्रजभाषा में लिखी गयी यह रचना प्रतीत होती है। इसमें महाकाली, तारा, विद्याषोडशो, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता धूमावती, बगुलामुखी, मातंगी, कमला की वन्दना में कवित्त लिखे गये हैं। रचनातिथि के

सम्बन्ध में कोई ठोस प्रमाण उपलब्ध नहीं होता है किन्तु भाषाशैली के आधार पर यह कवि के प्रौढ़काल की रचना ज्ञात होती है। ताराजी की वन्दना इस प्रकार की गयी है :—

दशन दुभुज अधकर्त्री ऊर्ध खड्ग खुल्यो,
वाम अध कर में कपाल है विराजमान।
ऊर्ध्वकर नीलकंज चारोकर अरुनाई,
नील घन दुति देह दन्त खर्व कुन्द जान।
ग्वाल कवि जिह्वा दीह तीन द्रग शशिभाल,
बद्धित सुकेश शशि पाँचन सों शोभवान।
बहुमुख सर्प सेत शीश पें सो छत्र रहे,
द्वितीया श्री ताराजी को ऐसें करो नित ध्यान।

९. ज्वालाष्टक : ज्वालादेवी की वन्दना में यह अष्टक काव्य लिखा गया है। इसका रचनाकाल भी प्रामाणिक रूप से उपलब्ध नहीं होता है। किन्तु रसिकानन्द, गुरुपचासा और कवि-हृदय विनोद में भी इसके छन्द प्राप्त होते हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि इसके छन्द सं० १८७९ वि० और १९१७ वि० के मध्य कभी लिखे गये होंगे।[1] प्रस्तुत कवित्त में ज्वाला देवी के स्वरूप का कवि ने बड़ा ही सुन्दर चित्रण किया है—

एरी मात ज्वाला जोति जाला की कहो में कहा,
कौतुक विशाला गति अद्भुत तेरी है।
मानतें कशान तेंसु चक्रहू ते पुष्ट झार,
दुष्टन के दल पें दवरि होत बेरी है।
ग्वाल कवि दासन कों शीतल सदाई ऐसी,
जैसी है सु तैसी सो कहे क्यों मति मेरी है।
चंदन सी चंद्रमासी चंद्रिका तें चौगुनी सी,
जलसी हिमंत सी हिमालय सी हेरी है।

१०-११. प्रथम तथा द्वितीय गणेशाष्टक : ये भी भक्ति की रचनाएँ हैं। दोनों की ही रचनातिथि का कोई प्रामाणिक आधार प्राप्त नहीं होता है। दोनों अष्टकों में गणेशजी की पारम्परिक रूप से ही वन्दना की गयी है। प्रथम गणेशाष्टक के आठों कवित्तों में निम्न पंक्ति सर्वत्र प्रयुक्त हुई है—

"रीझैं बार - बार बार लावे नहिं एको बार,
ऐसो को उदार जग महिमा अपार हैं।"

द्वितीय गणेशाष्टक के आठों छन्दों की अन्तिम पंक्ति इस प्रकार है—

"सुजस सुवासन के दायक हुलासन के,
नाम के प्रकाशन गनेश महाराज है।"

ऐसा प्रतीत होता है कि ग्वाल ने कवि जीवन के प्रारम्भ में विघ्न विनाशक देवता गणेशजी की

वन्दना में ये कवित्त लिखे होंगे। भाषा की दृष्टि से भी ये उनके प्रारम्भिक काल की रचनाएँ ही ज्ञात होती हैं।

१२. शिवादि देवतान की स्तुति—इसमें शिवजी, हनुमान, भैरों, सूर्य, त्रिवेणी, स्वामी कार्तिकेय, ब्रह्मा, इन्द्र, काली, मनसा, भवानी, नैनादेवी आदि अनेक देवी-देवताओं की स्तुति की गयी है। साथ ही मधुपुरी, वृन्दावन, काशी, त्रिवेणी आदि के माहात्म्य का भी वर्णन किया गया है। त्रिवेणी का वर्णन कवि ने इस प्रकार किया है—

दारिद दरैनी सुभ संपति भरैनी भूर,
पूरन सरेनी जसभक्ति रंग रैनी है।
चैनी जमराज की अचैनी जी जरैनी जोर,
बोर देनी कागद गुपित्र के गरैनी है।
ग्वाल कवि न्हैयत तरैनी वितरैनी तेंज,
मुक्ति परसैनी तिहुंपुर दरसैनी है।
पापन कों तापन कों छेनी अति पैनी ऐनी,
सुरगन सैनी सुख दैनी ये त्रिवेणी है।

१३. षट्ऋतु तथा अन्योक्ति वर्णन—ग्रन्थ में रचना तिथि का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है किन्तु षट्ऋतु वर्णन के अनेक छन्द रसिकानन्द (१८७९ वि०) रसरंग, (१९०४ वि०), साहित्यानन्द (१९०५ वि०) तथा बलवीर विनोद (१९०२ वि०) में उपलब्ध होते हैं। अतएव स्पष्ट है कि सं० १८७९ वि० से १९०५ वि० के मध्य फुटकर रूप से षट्-ऋतु के छन्द लिखे गये होंगे किन्तु भक्तभावन में ये अविकल रूप से संगृहीत किये गये हैं।[१०] इसमें षट्ऋतुओं का बड़ा ही वैविध्यपूर्ण और सुन्दर चित्रण किया गया है। यहाँ एक उदाहरण प्रस्तुत है जिसमें ग्वाल ने बसंत की बहार का अत्यन्त मनोहारी चित्र अंकित किया है—

सरसों के खेत की बिछायत बसंत बनी,
तामें खड़ी चाँदनी बसंती रतिकन्त की।
सोने के पलंग पर बसन बसंती वेस;
सोनजुही माले हालें हिय हुलसंत की।
ग्वाल कवि प्यारो पुखराजन को प्यालो पूरि,
प्यावत प्रिया कों करे बात बिलसंत की।
राग में बसंत बाग बाग में बसंत फूल्यो,
लाग में बसंत क्या बहार है बसंत की।

ग्रन्थ के अन्त में लगभग चौबीस छन्दों में तोता, गुलाब, मालती, कदम्ब, बागवान, भौंरा, हाथी, उलूक, कौआ, हंस, कमल आदि पर अन्योक्तियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। अधिकतर वर्णन उद्दीपन रूप में ही किया गया है। किन्तु कहीं-कहीं स्वतन्त्र रूप से भी प्रकृति का चित्रण सुन्दर बन पड़ा है।

१४. प्रस्तावक नीति कवित्त—ये छन्द भी समय-समय पर लिखे गये प्रतीत होते हैं।

इसलिए इनकी कोई निश्चित रचना तिथि का उल्लेख प्राप्त नहीं होता है। संभव है कि प्रथम बार ही स्वयं ग्वाल द्वारा 'भक्तभावन' में इनका संग्रह किया गया हो। अतएव इनका रचनाकल भी सं० १९१९ वि० के पूर्व मानना ही उपयुक्त होगा। इनमें नीतिकथन है। ऐसा अनुमान होता है कि ग्वालजी ने परम्परानुसार जीवन तथा समाज के खट्टे-मीठे-कड़ुए-अनुभवों को काव्यभाषा में लिपिबद्ध कर दिया है। इसमें मानवता, मित्रता, शत्रुता, प्रेम निर्वाह, कविकर्म, दुर्जन-सज्जन, मूर्ख, दरिद्रता, पण्डित, लम्पट, व्यभिचारी आदि पर कवित्त प्रस्तुत किये गये हैं। उदाहरण स्वरूप मूर्ख पर लिखा गया कवित्त देखिए :—

बैठबे की उठबे की बोलिबे की चलिबे की,
जानत न एको चाल आइ जग ढाँचे में।
देखत में मानुष की आकृति दिखाई परे,
पर नर पशु औ परन्द है न जाँचे में।
ग्वाल कवि जानि कें विरंचि तुच्छ जंतुन को,
डारै और ठौर लखि ख्याल ही के खाँचे में।
कूकरतें सूकरतें गर्दभ तें उलूकतें,
काढ़ि काढ़ि जीव डारे मानुष के साँचे में।

१५. दृगशतक—यह काव्य की शतक परम्परा में लिखी गई रचना है। इसमें नेत्रों को आलम्बन बनाकर सुन्दर काव्यात्मक उक्तियाँ प्रस्तुत की गयी हैं। प्रारम्भ के दो दोहों में मंगलाचरण है। तीसरे दोहे में ग्रन्थ रचना का उल्लेख इस प्रकार किया गया है —

संवत निधि शशि निधि शशी, फागुन पख उजियार।
द्वितीया रवि आरम्भ किय, द्रगसत सुख कौ सार।

अतएव स्पष्ट है कि सं० १९१९ वि० में इसकी रचना हुई है। रचना के प्रारम्भ में मंगलाचरण के बाद कविविषे तथा ग्रन्थ का परिचय दिया गया है। तत्पश्चात् शतक परम्परा में कवि ने आँख पर सौ दोहे प्रस्तुत किये हैं जिनमें कवि के काव्यकौशल के दर्शन होते हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है—

प्यारी तो तन ताल में फूले दृग अरविन्द,
चितवनि रस मकरन्द हित, मो मन भयो मलिन्द।

राधिका के तन रूपी सरोवर में दृगरूपी कमल खिले हुए हैं जिसके चितवन रूपी मकरन्द रस का पान करने के लिए मन रूपी भौंरा मुग्ध हो गया है। अर्थात् सांगरूपक के द्वारा कवि ने नेत्रों के आकर्षण का वर्णन किया है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि ग्वाल के समकालीन लगभग सभी कवियों में मुक्तक रूप से नेत्रों पर अनेक छन्द लिखे हैं। किन्तु अपने युग में नेत्रों पर शतक लिखने वाले संभवतः वे अकेले ही कवि हैं।

१६. भक्ति और शान्त रस के कवित्त—इसके तीन छन्द रसिकानन्द में तथा तेरह छन्द रसरंग में संगृहीत हैं। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि इन छन्दों की रचना सं० १८७९ वि० के पूर्व हुई होगी।[११] जैसा कि शीर्षक से ज्ञात होता है कि ये भक्ति और शान्तरस

को लेकर लिखे गये कवित्त हैं। अन्त में एक कवित्त दीवाली का देकर समापन का दोहा दिया हुआ है। कवित्त इस प्रकार है :—

छाई छवि छिति पे छहर छवि छैलन की,
छमके छपाकर छटा सी बाल त्यारी पे।
उन्नत अनार अलगारन अगारन पे,
आसमान तार उठे ऊपर अगारी पे।
ग्वाल कवि जाहर जवाहर जमत जोर,
जागत जुआरी जाम जाम जर जारी पे।
दीप दीप दीपन की दीपति दवारि आई,
जंबू दीप दीपन में दिपति दीवारी पे।

जगदम्बा राधा की स्तुति करते हुए कवि ने ग्रन्थ को समाप्त किया है :—

श्री जगदम्बा राधिका त्रिभुवन पति की प्रान
तिनके पद में मन रहै श्रीसिव दीजै दान।
इति श्री ग्वाल कवि कृत भक्तभावन ग्रन्थ सम्पूर्णम्।

इनमें से कुछ ग्रन्थ स्वतन्त्र हैं और कुछ प्रथम बार 'भक्तभावन' में ही संगृहीत किये गये हैं। अतएव 'भक्तभावन' ग्वाल कवि के समस्त भक्ति सम्बन्धी फुटकर ग्रन्थों का एक संग्रह मात्र है।

समीक्षासार

उपर्युक्त सभी ग्रन्थों का सम्यक् अनुशीलन करने के बाद हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँचते हैं :—

१. प्रायः सभी कृतियाँ राधाकृष्ण को ही आलम्बन बनाकर लिखी गयी हैं यद्यपि कहीं-कहीं कवि की भावात्मक विह्वलता भी दृष्टिगत होती है परन्तु मूलतः शृंगारी कवि होने के कारण ग्वाल के हृदय में भी अन्य रीतिकवियों की भाँति भक्ति की कोई स्थायी पद्धति स्थापित नहीं हो सकी। वैसे ग्वाल निम्बार्क सम्प्रदाय में दीक्षित थे किन्तु अपनी समसामयिक परिस्थितियों से मजबूर होकर उन्हें राधाकृष्ण से माफी माँगनी पड़ी थी—

श्री राधा पद पदम को, प्रनमि प्रनमि कवि ग्वाल,
छमवत है अपराध को, कियो जु कथन रसाल।

२. इन भक्तिपरक रचनाओं का सृजन कवि ने प्रायः दो कारणों से किया होगा। पहला कारण तो यह है कि रीतिकाल के पूर्व भक्ति का जो स्फीत और अखण्ड प्रवाह दिखाई पड़ता है उसके सर्वथा प्रतिकूल जाने का साहस अन्य रीति-कवियों की भाँति ग्वाल का भी न हुआ। दूसरा कारण यह है कि जीवन की अतिशय रसिकता और शृंगारिकता से ऊबकर मन की विश्रांति के लिए कवि ने भक्तिपरक रचनाएँ कीं जो मन के अवसाद से पूर्ण हैं तथा भक्ति के सहजोल्लास, गहन आत्मनिवेदन अथवा आत्मसमर्पण के भाव से प्रायः रहित हैं।

३. भगवान् के प्रति रागभावना से अनुप्राणित होने के कारण अपनी अभिव्यक्ति में कवि सच्चाई को लिये हुए है। किन्तु सच्चाई और अविचल निष्ठा पर्याय नहीं है। अतएव ईमानदारी के होते हुए भी ग्वाल की भक्तिभावना पूर्ववर्ती भक्त कवियों सी अविचल निष्ठा, गहनता और लोकव्यापी विस्तार को प्राप्त नहीं कर सकी।

४. रीतिकाव्य की अभिव्यंजना प्रणाली और प्रतीक योजनाओं को न्यूनाधिक अंश में ग्रहण करते हुए भी ग्वाल का दृष्टिकोण इन रचनाओं में इस प्रकार व्यक्त हुआ है कि उनके भक्त होने में किसी प्रकार का संदेह नहीं किया जा सकता। दार्शनिक शब्दावली में कहा जा सकता है कि इनका प्रेम चिन्मुख है तो रीतिकवियों का जड़ोन्मुख।

५. संस्कृत-साहित्य में देवी-देवताओं के स्तोत्र लिखने की परम्परा रही है। महाकवि ग्वाल पर भी इसका प्रभाव दिखाई पड़ता है। उन्होंने भी लगभग सभी लोकप्रचलित देवी-देवताओं को लेकर छंद लिखे हैं जिनमें उनकी स्तुति और वंदना की गयी है। इससे भी कवि की उदार भक्तिपूर्ण दृष्टि का ही परिचय प्राप्त होता है।

६. प्रायः सभी रीतिकालीन कवियों ने कवित्त-सवैयों और दोहों में ही रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। ग्वाल ने भी इन सभी कृतियों में इसी शैली को अपनाया है। ऐसा प्रतीत होता है कि ग्वाल ने 'भक्तभावन' संग्रह भक्तों के लिए किया था। इसी कारण आचार्य होने के बावजूद इन कृतियों में पांडित्य-प्रदर्शन करना उनका लक्ष्य अथवा उद्देश्य नहीं है और न ही रीतिकालीन परम्पराओं का पूर्ण निर्वाह करने में ही कवि सजग दिखाई देता है।

७. इन सभी रचनाओं में संस्कृत, अरबी, फारसी, पंजाबी, खड़ी बोली आदि की शब्दावली का प्रयोग कवि ने निःसंकोच रूप से किया है। विशेष रूप से उल्लेखनीय यह है कि ब्रजभाषा के परम्परागत छन्दों-कवित्त-सवैयों-को खड़ी बोली में ढालने का कवि ने स्तुत्य प्रयास किया है। उर्दू-फारसी मिश्रित खड़ी बोली का प्रारम्भिक स्वरूप कवि की 'कृष्णाष्टक' आदि कृतियों में प्राप्त होता है। ऐसी कृतियों का खड़ी बोली के विकास की दृष्टि से ऐतिहासिक महत्त्व स्वीकार किया जा सकता है।

८. कल्पना-वैभव और चित्रयोजना का वैसा उत्कृष्ट रूप इनकी रचनाओं में उपलब्ध नहीं होता है जैसा कि देव, बिहारी, पद्माकर आदि कवियों की कृतियों में मिलता है। किन्तु उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, यमक, श्लेष आदि अलंकारों के प्रयोग भावाभिव्यक्ति में बड़े ही मनोज्ञ और मनोहारी ढंग से हुए हैं।

९. ग्रन्थों का संकलन स्वयं कवि ग्वाल द्वारा ही किया गया है। अतएव इसके पीछे ग्वाल का दृष्टिकोण संभवतः यही रहा होगा कि उनके आठ-आठ छन्दों (अष्टकों) वाले छोटे-छोटे ग्रन्थों का पृथक्-पृथक् अस्तित्व कालावधि में कहीं समाप्त न हो जाये। इसीलिए उन्होंने सबको एक साथ संगृहीत कर दिया है और भक्ति का स्वर प्रधान होने के कारण उसका नाम 'भक्तभावन' रख दिया।

१०. यद्यपि हिन्दी-साहित्य-जगत् में ग्वाल की ख्याति एक सर्वांग निरूपक आचार्य के रूप में रही है किन्तु 'भक्तभावन' के सम्यक् अनुशीलन के बाद कवि रूप में भी ग्वाल

का महत्त्व असंदिग्ध रूप से स्वीकार किया जा सकता है। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि किसी भी अन्य रीतिकालीन आचार्य का भक्ति-सम्बन्धी इस प्रकार का विशाल एवं समृद्ध संग्रह उपलब्ध नहीं होता है। यद्यपि स्फुट रूप से तो सभी की एकाधिक रचनाएँ प्राप्त होती हैं। अतएव इस दृष्टि से भी इसका महत्त्व निश्चय ही अप्रतिम एवं बेजोड़ है। वस्तुतः 'भक्त-भावन' भक्तिपरक मुक्तक ग्रन्थों की एक ऐसी अटूट एवं अविच्छिन्न माला है जिसमें भाव, कल्पना और अनुभूतियां के साथ कविकौशल के अनेक नवीन एवं मौलिक कुसुम अनुस्यूत तथा संग्रथित हैं।

११. अन्त में सम्पादन के सम्बन्ध में मैं यही कहना चाहूँगी कि प्राप्त हस्तलिखित प्रति को अविकल रूप में ही सम्पादित करने का हमारा प्रयास रहा है। प्रतिलिपिकार गोविन्द गिल्लाभाई ने गुजराती भाषा के प्रभाव के कारण मात्राओं में कहीं-कहीं ह्रस्व को दीर्घ और दीर्घ को ह्रस्व कर दिया है। अतएव ऐसे स्थलों पर हमने ब्रजभाषा की प्रकृति के अनुसार उनमें सुधार करने की छूट अवश्य ली है। एक ही प्रति के आधार पर सम्पादन होने के कारण पाठभेद या पाठसंशोधन का प्रश्न तो विशेष रूप से उपस्थित ही नहीं होता है। भविष्य में यदि हमें कभी अन्य प्रतियाँ उपलब्ध हो सकीं तो पाठभेद तथा पाठसंशोधन की समस्या पर अवश्य ही विचार किया जा सकेगा। संप्रति तो हमारा उद्देश्य इन कृतियों के अनुशीलन के माध्यम से सर्वांग निरूपक आचार्य ग्वाल के विशेष-रूप से भक्त-कवि-स्वरूप को उद्घाटित करना ही रहा है। एवमस्तु।

सन्दर्भ

१. विशाल भारत–वर्ष २, अंक १, अप्रैल १९२९।
२. महाकवि ग्वाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० भगवानसहाय पचौरी, पृ० १५८ से उद्धृत।
३. हिन्दी-साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृ० २९८।
४. महाकवि ग्वाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० भगवानसहाय पचौरी, पृ० १५९।
५. हिस्ट्री ऑफ द पंजाब–सैयद मुहम्मद लतीफ, पृ० ४५८।
६. पंजाब प्रान्तीय हिन्दी-साहित्य का इतिहास–पं० चन्द्रकान्त बाली, पृ० १९९।
७. सिख इतिहास–डॉ० देशराज, पृ० ४०६-४०७।
८. ग्वाल कवि–प्रभुदयाल मित्तल, पृ० ८३।
९. वही, पृ० ५०।
१०. रीतिकवियों की मौलिक देन–डॉ० किशोरीलाल गुप्त, पृ० १५६।
११. महाकवि ग्वाल के ग्रन्थ–डॉ० भगवानसहाय पचौरी, ब्रजभारती, मथुरा।
१२. हिन्दी-साहित्य का इतिहास–आ० रामचन्द्र शुक्ल, पृ० २७२।
१३. महाकवि ग्वाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० भगवानसहाय पचौरी, पृ० १९१।
१४. वही, पृ० २००।
१५. ग्वाल कवि–प्रभुदयाल मित्तल, पृ० ८३।
१६. महाकवि ग्वाल–व्यक्तित्व एवं कृतित्व–डॉ० भगवानसहाय पचौरी, पृ० २३६।

१७-१८. वही, पृ० २३७।
१९. वही, पृ० २०६।
२०. वही, पृ० २०७।
२१. वही, पृ० २४२।

भक्तभावन

श्री गणेशाय नमः

अथ श्री भक्तभावन ग्रंथ प्रारंभ

मंगलाचरण–दोहा

वेद पुरानजु शास्त्र सब सो जाही के रूप।
हंस वाहिनी बनि घर श्री सरस्वती अनूप।

ग्रंथ प्रस्तावना

तिनके चरनांबुजन कों। करि साष्टांग प्रनाम।
ग्रंथ फुटकरन को करत। एक ग्रंथ अभिराम।

कवि विषे

बंदी विप्रसु ग्वाल कवि। श्री मथुरा सुख धाम।
भक्तभावन जु ग्रंथ को। धर्‌यो बुद्धिबल नाम।

ग्रंथ संवत

९ १ ९ १
संवत निधि शशि निधि शशी। मास अषाढ़ बखान।
सित पख-द्वितिया-रवि-विषे। प्रगट्‌यो ग्रंथ सुजान।

अथ श्री यमुना लहरी ग्रंथ प्रारंभ

मंगलाचरण–दोहा

श्री वृषभान कुमारिका। त्रिभुवन तारन नाम।
शीश नवावत ग्वाल कवि। सिद्धि कीजिये काम॥ १॥

कवि विषे

वासी[1] वृंदा विपिन के। श्री मथुरा सुखवास।
श्री जगदंबा दई हमें। कविता विमल विकास॥ २॥
विदित[2] विप्र वंदी विशद। बरने व्यास पुरान।
ताकुल सेवाराम को। सुत कवि ग्वाल सुजान॥ ३॥

यमुना स्तुति

कवित्त

शोभा के सदम लखि होत है अदमसम। पदम पदम पर परम लता के इद।
देखें नख दामिनी घनै दुरी अकामिनी ह्वै। जामिनी जुन्हया की जरै जलसता के मद।
ग्वालकवि ललित छलानतें कलित कल। वलित सुगंधन तें वेस मुदता के नद।
वंदन अखंड भुज दंड जुग जोरै करौं। बरद उमंड मारतंड तनया के वद॥ १॥

मूलपा :—१. वासि, २. वीदीत।

कवित्त

जित जित जाती जमुना को जोर धारें जुरि। तित तित ही में स्यामता की बहु कुंज होत।
जित जित प्रबल प्रवाहन के शोर सुने। पाप तिन तिनके पटासे खाइ लुंज होत।
ग्वाल-कवि तेरे तोय ऊपर विमान आय। जाय इन्दरासन अनन्दन की गुंज होत।
तेरी येक बिंदु के किनूका सो हजार चारु। ताकी कोर कोर पें कन्हैया के पुंज होत।२।

कवित्त

जोगी एक जमना तिहारो जित नाम लेत। तितमें लसीलें जस देशन में चिरजात।
आय आय विबुध विमानन पें बैठे वेश। धन्य धन्य भाखे दिव वीथिन में घिर जात।
ग्वाल कवि रवि औ रथीश शशि नामें लखैं। होत न अथैयन अथैयन के गिर जात।
कहर कलेश कों कटासे करि जात ढेर। पापन के पुंज पें पय से फेर फिरिजात।३।

कवित्त

कैधों दुति द्रौपती की दमकत दीपन में। कैधों नीलगिरि जन पाँति परमा की है।
कैंधौं तमोगुन की जुरी है जोर शशि। किधौं फूलैं नील कंजन की अवली रमा की है।
ग्लाल कवि कालिका कृपालिका की लेहन के। कैंधों घटा घोर भूमि उतरी सुधा की है।
कैंधों शेश स्याम की करी है घनस्याम सेज। कैंधों तेज तरल तरंग जमुना की है।४।

कवित्त

कैंधों लाजवर्त्तकी शिला है सुमिला है भली। कैंधौं स्याम पाट की बिछात छबि जाकी है।
कैंधों भ्रमरावली भ्रमत भूरि भायन सों। कैंधों राहु किरन अछेह फबि जाकी है।
ग्वाल कवि कैधौं केश काली के विराट रूप। कैंधौं रोमराजी वरनत कवि जाको है।
कैंधौं नंदनंदन अनंत वपुधारे तन्त। कैंधौं तेज तरल तरंग रवि जाकी है।५।

कवित्त

तरल तिहारी रवि तनया तरंगैं तेज। शोर घन घोरन घटासें करिबौं करैं।
अविधि सुरापी दीह पापिन के तुंग तारि। अखिल विमानन वटा से करिबो करैं।
ग्वालकवि कौन कहनावत कहौं मैं अब। देवन के पुंज पलटा से करिबो करैं।
शहर जमेंश के पटा से दे कटासी करि। कहर कले सैं चोपटा से करिबो करैं।६।

कवित्त

कीनी सत संगतन पंगत जिवाई कभू। रंगत अदेह की भुलायो देह साजतें।
एक दिन तरुनी पराई मिलिबे के हेत। भाख्यो रविजात मिलौं रजनी समाज तें।
ग्वालकवि त्यों ही भुज चार कौं प्रचार होय। आये घिरि देवता विमानन विराजतें।
चित्र ह्वै विचित्र चित्रगुप्त कहे हाय हाय। बाज हम आये ऐसें लिखिबे के काज तें।७।

कवित्त

दानीन में दानी दीह करन महीप भयो। ध्यानीन में ध्यानी महादेव पन पाको है।
जैसें सत्यवादिन में राजा हरिचंद चंद। तैसें उपकार में दधीच तेज ताको है।
ग्वालकवि जैसें धर्म धारिन में धर्मयश। ज्ञानिन में ज्ञानी सुखदेवसिद्धि साको है।
बीरन में वीर बजरंग की प्रशंसा होत। नीरन में नीर वरभानु तनया को है॥ ८॥

कवित्त

मूल करनी को धरनी पें नर देह लैबो। देहन को मूल फेर पालन सुनी को है।
देह पालिबें कों मूल भोजन सु पूरन है। भोजन को मूल होनो बरसा घनी को है।
ग्वाल कवि मूल बरसा को है जजन जय। जजनसु मूल वेद भेद बहुनी को है।
वेदन को मूल ज्ञान ज्ञानमूल तरिबो त्यों। तरिबै को मूल नाम भानु नंदनी की है॥९॥

कवित्त

भरिबो चहेतो शील नैनन भराइ लेरे। ढरिबो चहेतो लोभ ढारि वाको ढपि।
हरिबो चहे तो चित्त हरि ले सुजानन के। धरिबो चहे तो ध्यान धरि फिरि जाको छपि।
ग्वालकवि टरिबो चहे तो टरि कूरनते। डरिबो चहे तो परधन ताकों थपि।
लरिबो चहे तो तू लरे न क्यों कुढंगनतें। तरिबो चहे तो तू दिनेश तनया को जपि १०

कवित्त

जाने जमुना के तमना के हू न रहे ताके। साके होत प्रबल प्रभा के पुंज आन में।
चूर होत परि और अधीर फिर घूर होत। पूर होत धीर वीर होत हर सान में।
ग्वाल कवि भान के समान तेज भान होत। कीरति सुभान होत अरिहू[1] समान में।
गान होत लोकन बखान होत जानन में। मान होत जग में प्रमान देवतान में॥११॥

कवित्त

करो तुम जमुना अन्हैयन के राके रूप। केते रूप रावरे भये जलूस[2] जाल है।
केती बर बाँसुरी कियो है आय बाँसुरी सु। ऐसे तो अवांसुरी लख्यो न कोऊ काल है।
ग्वाल कवि वसन तनौ में पीत वसन जु। केती मन्द ईसन लसन पन पाल है।
केती वनमाल केती कौस्तुभ की माल शुभ्र। कुंडल विशाल बने केते नंदलाल है।१२।

कवित्त

भानु तनया के तीर तीरतें हजार कोस। कीनी जिमिदारन सुखेती रूँदि रेलारेल।
धान बढ़ि आये कढ़ि आये बाल भेस भले। मढ़ि आये अन्न एक एक तेंसु मेलामेल।
ग्वालकवि परसि पुनीति पानी तेरो पौन। लागी जाय जिनमें झकोरैं झार झेलाझेल।
चारभुज चंद्रिका चमके हार हारमाँहि। वारिन में विबुध[3] विमानन की ठेलाठेल।१३।

मूलपाठ :—१. अरिहु, २. जलुस, ३. विबूध।

कवित्त

भानु नंदनी के तट नीके रज राशिन में। दासिन के तरवा तरे में परो झौर झौर।
कूर अकुलीनन के भीलन के पाछैं पाछैं। आछैं जे कुसीलन के पंगु गहौं दौर दौर।
ग्वालकवि ये तो करि देख्यो पै न दैख्यो कछु। लेख्यो होनहार जो लिख्यो हैं विधि
और और।
मुकति विचारी में जुवारी क्यों न भारी भाय। मारी सील तारी फिरो रब्बारी भई
ठौर ठौर॥ १४॥

कवित्त

स्याम रंग रंगत तें स्यामे रंग होत सुने। जमुना जरूर ही जुरी है जोर जंगी तू।
देत है कन्हैयन उठाय पीत अंबरन। लकुट विशाल देत सुन्दर सुरंगी तू।
ग्वाल कवि गोरी गिरि जासी पटरानी देत। देत मोर चन्द्रिका चमकित कलंगी तू,
संगी करे ग्वालन उमंगी मति चंगी करे। करि बहुरंगी फेर करत त्रिभंगी तू॥ १५॥

कवित्त

रावरी तरंगन को जमुना प्रसंग पायो। अंग-अंग धोये तऊ करै अलसाइबो।
पापिन के कुल में प्रतापी महापापी भयो। तापी तीन ताप को न जाने हुलसाइबो।
ग्वालकवि ताही को तिहारे पितु आये लेन। फेर पति आये मति मोद सरसाइबो।
भान चाहे भान लोक भीतर बसाइबे को। कान्ह चाहे कान्ह लोक भीतर
बसाइबो॥ १६॥

कवित्त

माली एक बाग में खुसाली जुत सोवे तहाँ। फूलन वहाली मूल नीरन छका छकी।
आई अंध धुंधही अंध्यारी करि आँधी तहाँ। एक तरु दीरघ गिरते व्है धकाधकी।
ग्वालकवि त्यों ही वह आगिकें बुलाये पार। जमुना सकेगो इमि कहिकें तकातकी।
माथे भई चन्द्रिका लकुट निज हाथे भई। साथे भई गोपिका[1] दिखैयन चका-
चकी॥ १७॥

कवित्त

जात चतुरानन सुजान आन मेरी यह। करियो[2] इते में तू करैया है उमंग को।
रेतन की राशि जो करे तो करि नीकी भाँति। जमुना के जल को थल के प्रसंग को।
ग्वाल कवि सुमन लता जो करे तोहू तहाँ। मीनग्रह जो करे सुवाही जलसंग को।
मनुज करे तो है सलाह यह तोकों वीर। करियो मलाह ताकी तरल तरंग को॥ १८॥

कवित्त

गेह में लगे है तिय नेह में पगे है पूर। लोभ में जगे है औ अदेह तेह समुना।
कुटिल कुढंगन में कूरन के संगन में। छके रति रंगन में नंगन ते कमुना।
ग्वाल कवि भनत गरूर भरे अति पूर। जानियें जरूर जिन्हें काहु कीजु ममुना।
लहर करै तें हरि लोक में सहर करै। लहर तिहारी कै लरवैया मात जमुना॥ १९॥

मूलपाठ १. गोपीका २. करीयो।

कवित्त

मारतंड तनया तिहारे सुने कौतुक मैं। सौतुक गुविन्द करै कैतन को मैया तूं।
तेज करे आनन सुजानन में आन करे। मान करे जग में प्रमान पसरैया तूं।
ग्वाल कवि आनन्द की छकनि छकैया फेर। कठिन कलेशन के भशन हरैया तूं।
शहर जमेश को जरैया जमदूतन को। कहर कुढंगन कों कतल करैया तूं ॥ २० ॥

कवित्त

जीत होत रन में सुनीत जुत मेधा होत। प्रीत होत मीन में अनीतभीत गमुना।
भाल होत उदित विशाल होत तेज ताको। साल होत शत्रुन दुशालन ते कमुना।
ग्वाल कवि कीरति प्रचार होत एकतार। पारावार पार होत बेसुमार समुना।
दान होत दीरघ दिमाक होत जग बीच। ज्ञान होत हियरा में ध्यान होत जमुना।

कवित्त

कैधों अंधकारन के अखिल अगार चारु। कैधौं रसराज की मयूखे मंजुता की है।
कैधों स्याम विरह वियोगिन के नैन ऐन। कज्जल कलित जल धारैं धार ताकी है।
ग्वाल कवि कैधों चतुरानन के लेखिबे को। फूट्यो मसि भाजन अनूप छवि वाकी है।
कैधों जल स्वच्छ में प्रतच्छ नभ झाँई किधौं। तरल तरंगै मारतंड तनया की है ॥ २२ ॥

कवित्त

गौरिन में गनिका जरूरदार गनिका की। गौए गरैं गजरा गुलाबी हित में छई।
ताको एक तनया कृसित तन ताको रहे। ताको रहे वहम बिलन्द चिंतता ढई।
ग्वाल कवि भाखै[1] रवि तनया कों नीकी राखें। कहत इते के चकाचौंधी चित में भई।
ह्वै गई गोविंद मोर चन्द्रिका विराजी शीश। भाजी फिरे छोहरी अमाजी कित में गई ॥ २३ ॥

कवित्त

कठिन कलेशन के भेसन खकोरिबे कों। फोरिबें कों पापके पहार अति भाराये।
दीह दीह दारिद के दलन बिथोरिबें कों। जोरिबें को आनन में तेज के अँगारा ये।
ग्वाल कवि आनन्द विसालन में बोरिबे कों। झूमि झमक झोरिबे कों अधर कपारा ये।
भर्म जमराज के जरूर तोरिबे कों जगी। धर्म धारिबे को जमुना को जोर धाराये ॥ २४ ॥

कवित्त

काहू शाहुकार को चुरायो धन चोर एक। शोर भयो शहर गयो दई किते किते।
बहुत दिना में गयो [2]बाँधिकें नृपति आगे। पूछों ते लयो है कह्यो इमुनाहि ते हिते।
ग्वाल कवि भाख्यो रवि जाने जो लयो मैं माल। हास भयो औरे इमि कहत तिते-तिते।
स्याम रंग ह्वै कें भुज चार भई आयुध से। चौंक्यों अमरवास रह्यो हाकिम चितै चितै ॥ २५ ॥

मूलपाठ १. भाखे, २. बांधीं।

कवित्त

देव मारतंड की तनूजा तीर तेरे एक। कौतुक लख्यो मैं असि अद्भुत कहौं कैसे।
बढ़ई विचारो छील छील कें बनावे वेश। चित्रकारी चित भाव निजगौकैसें।
ग्वाल कवि तेरे तोय ऊपर तरावे ताहि। धावे लेन देवता विमानन तें लौकैंसे।
नाव होत गोविन्द लकुट पतवार होत। भुजाचार चंपू होत चित्रकार चौंके से॥ २६॥

कवित्त

गोरी गरबोली जाको गवन गयंद को सो। गरै मुकुताहल को गजरा निराला वह।
कज्जल कलित द्रम ललित लुनाई भरे। वलित उरोजनतें मृगमद आला वह।
ग्वाल कवि रविजा तिहारे तीर न्हाई आई। धाइ लेन देवन की अवली विशाला वह।
'शीश दीप मृग ये पहुँचि पहिलेंई गये। पाछैं स्याम रूप ह्वै सिधारी नव बाला वह॥ २७॥

कवित्त

आयो तटनी के रवि तनया तिहारे वह। वापस पियासो पय पियत अकूत है।
त्यौंही भुज चार ह्वै विमान चढ़ि धार चल्यो। अध मग पातकी परममहा धूत है।
ग्वाल कवि तापें आय छाया परी ताकी जोर। बनिकें बिहारी की करत करतूत है।
एक कहे भूत है, अभूत कहे कोऊ एक। सूत कहे सो विसै सिधार्‌यो नन्दपूत है॥ २८॥

कवित्त

जमुना के वास में लखै तरङ्ग ता समेजु। महत पवास में करै गोविन्दा जा समें।
सौरभित वास में भुलावे रंग रास में तु। औ गुलाबपासमें धरे गुलाब पास में।
ग्वाल कवि छकित गिलास में सुधा समेसों। हाँस में विकास में रहे न हो सुवास में।
वदन प्रकास में सुरीन के हुलास में ज्यों। राखत विलास में सुरौं के आम खास में॥२९॥

कवित्त

बैठ्यो तटनी के यह भाखत तिलकिया जो। येरे राहगीर पास आय जल छू जाते।
आचवन किये महा महिमा मही में होत। जोना फल होत और देवन की पूजा तें।
ग्वालकवि कौतुक विशाल देखि हालाहाल। रसिक बिहारी भयो जात अब दूजातें।
कीरति अखंड होत तुजक प्रचंड होत। होत है अदंड मारतंड की तनूजा ते।३०।

कवित्त

कौतुक विशाल एक आयो देखि दूर ही तें। लाग्यो बात कहन विवेकता छुटी भई।
टहले हो बाग में बहारन बिलोकिबें कों। आइ पौन जमुना की औरतें जुटी भई।
ग्वालकवि दवरि दरीन में दुर्‌यो में जाय। छाई रेनु अखिलन ठौर ही छुटी भई।
भाली भयो मोहन लता जे पटरानी भई। भोर भये मुकुट लंका लकुटी भई।३१।

मूलपाठ १. शिश।

कवित्त

रेवतीरवन कीने वसन विचित्र वेश। राधिकारवन कीन्हें वपुष विशाल ह्वै।
चंद में प्रतिबिंब रूप रावरो दिखाई देत। लीनें चंद्रधर हू तमोगुन खुसाल ह्वै।
ग्वाल कवि कमला किये हैं कर कंज नील। नीलमनि भूषन बनाये जग जाल ह्वै।
मारतंड तनया तिहारो शुभ स्याम रंग। हो पद लोकन को मंडन विशाल ह्वै।३२।

कवित्त

धारे अंग अखिल कलापी महाकाली आप। कोनो काय वैसी फनधारी ने खुसाल ह्वै।
ताल में सिवाल भयो तरु में तमाल भयो। तीरन में भाल भयो सत्रुता में साल ह्वै।
ग्वाल कवि गौरिन ने अंजन अंजाये नैन। कीनी मसि लिखिबे कों वेदविधि हाल ह्वै।
मारतंड तनया तिहारो शुभ स्याम रंग। होय रह्यो लोकन को मंडन विशाल ह्वै।३३।

कवित्त

साल में सलाबे शत्रु पुंजन को सोर सुने। मित्र न मिलावे मति मंजुल खुसाल में
हाल में न आवे तन ताको किये त्रासन तें। करन कुटुम्बन को अधिक निहाल में।
लाल में लसावे बहु भूषन शरीर ताके। भाखैं कवि ग्वाल मन करै प्रन पाल में।
भाल में बिराजे मोर चंद्रिका विशाल वेश। न्हान करे जमुना जे तेरे जल जाल में।३४।

कवित्त

रविजा कहेतें रनजीते जोम जोरि जोरि। जमुना कहै तें जमुना के होत हेर बिन।
भान होत कीरति प्रभान के परम पुंज। भानु तनया के कहते ही फेर फेर बिन।
ग्वाल कवि मंजु मारतंड नंदनी के कहे। महिमा मही में होत दानन के ढेर बिन।
दरिजात दारिद दिनेश तनुजा के कहे। कहत कालिंदी के कन्हैया होत देर बिन।३५।

कवित्त

आदि में रमा के रसरूप देनहारी तू ही। मध्य कुबिजा के करे कीरति प्रचारी तू।
अंत विधिजा के जग जाहिर करैया तू ही। जहर जमेश की जलूसन को भारी तू।
ग्वाल कवि बरन बरन किये बरनन। बरनन तेरे में लग्यो है चितधारी तू।
महिमा तिहारी महा महिमा निहारी मात। रविजा कहे तै करे रसिक विहारी तू।३६।

कवित्त

सुस्ती बेसुमार एक कुस्ती गीर ताको भई। बोल्यो जमदूतन[1] लयो मैं थेर ओक में।
पारसद आये ले विमानन के पुंज तहाँ। बोले चढि लीजिये चढे जो चित्त कोक में।
ग्वाल कवि वह तो सवार ह्वै चल्योई फेर। भाखे मगमाहि जो करो मुकाम थोक में।
जो लों कहे नाल भूलि आयो मैं अखारे बीच। तौलौ जाय पहुँच्यो तुरंत हरिलोक में।३७।

मूलपाठः—१. जमदुतन।

कवित्त

जुद्ध करि मोसों अति क्रुद्ध करि कायर तू। है बडो अशुद्ध तो विरुद्ध बुद्ध टारोगों।
जो लो मैंन बोलत हों डोलत हों सो ही आय। बोलत हों गरलसु मैं कैसो विसारौंगो।
ग्वालकवि भाखै[1] भागि जायगो कहाँ तू नीच। भीच खपची में कमची ले तोहिं तारौंगों।
एरे पाप पापी सब देखन को सापी तोहि। जमुना के जल में अकाल मारि डारौंगों ३८

कवित्त

पातिक हरैया सुनी तरनि तनैया तोहि। गैया कामना की सी मनोरथ भरैया तूं।
देवन बसैया करै शेषनाग सैया करे। नैया करे धर्म की अधर्म से धरैया तूं।
ग्वाल कवि कहे जग मैया तू लसैया बेस। मोहन बनै या छबि छोरन छवैया तूं।
भैया जमराज की जलूसन जरैया जोर। जोवन जिवैया जोति जबर जगैया तूं।३९।

कवित्त

कामना की गैयासी मनोरथ भरैया भलैं। अखिल अंगारन में संपति डरैया तूं।
दुरित दरैया विदरैया बदराहन की। जुलुम जरैया टेक जमकी टरैया तूं।
ग्वाल कवि भाखे छबि छोरन छवैया वेश। सुख में समैया दुख हिय के हरैया तूं।
शैया करे शेष की सु जोतिन जगैया जोर। कान्ह की करैया मैया तरनि तनैया तूं ४०

कवित्त

तरनि तनूजा तेज तज्जुब तिहारो तक्यो। तुले ना तुलान पें अतुलता घनेरी है।
साँपिन सी सरस सतावे जमदूतन कों। पापिन[2] कों तापिन कों चिंतामनि हेरी है।
ग्वाल कवि करम कुरेखन मौं टारे फारे। अघन विदारे प्रन पारिबे की ढेरी है।
छबिन छटा की उछटा की करे लोकन में। करन कटान की ये पटाकी धार तेरी है।४१।

कवित्त

तरनि तनैया तनु तोय में तिहारे आय। तापी तीन ताप को तनक तन धोय जात।
तेज होत वपुष सुमुख सुखमातें सने। दुख दहलाते होत सुखन सलोप जात।
ग्वाल कवि संपति समोय जात सदमन। पदमन मीन सो तु जकजग जोय जात।
हालाहाल हाजिर हजूर में सुरेश होत। बेश होत बानी बनवारी भेश होय जात।४२।

कवित्त

दमुना मिलत जमदूतन के देहबिवै। दौरि देहरी पें आय होत बे अकामे है।
जमुना सु चित्रगुप्त हू की ना चलाँकी चलै। चित्र भयो लखिकें विचित्रित बसुधा में है।
तमुना रहत जाके सदन सु और पास। अमित प्रकाश भने ग्वाल कवि तामे है।
कमुना गोविन्द तेज समुना त्रिलोक जाकी। न्हात जमुना में तेन लेत जमुना में है ४३

मलपाठ :—१. भाखे, २. पापीन।

कवित्त

कैधों नीलकंठ के कंठ की प्रभा है चारु। फेली बेसुमार खंड-खंडन खजी है ये।
कैधों कालिका के करवाल की कठिन धारै। चमक पसारे चहूँ ओर में पगी है ये।
ग्वाल कवि कैधों दर्श जल सर्पमाँहि। आइके बसी है तासु शोभ उमगी है ये।
जोर जग जाहिर जलूस की जमातें जुरि। कैधों जमुना की बेरा लहर जगी है ये।४४।

कवित्त

कैधों वीर अर्जुन घरे है बहु भेस वेश। तारी छवि छाया की मयूष मंजु लीखी है।
कैधों खंजनन की खुली है पाँति पूरन ये। तेई भाँति भाँति भले भायन सों दीखी है।
ग्वाल कवि कैधों रवि चंद लरिबें कों भयें। तातें राहु अति विसतार ताई सींखी है।
बेसुमार पारावार पारन लों जाइवेकों। कैधों रविजाकी ये तरंगें तेह तीखी है ॥४५॥

कवित्त

कैधों जल अमल लबालब भरे में भल। उझल परी है नभ नवल अपारे ये।
कैधों स्याम तरु की मही पे पूर पातैं गई। ताकि भाँत भाँत मूर परमा पसारे ये।
ग्वाल कवि कैधों लंक असुर संघारिबे कों। धारे बहुभेस राम ताकी द्युति ढारे ये।
अतुल तिखाईतें जताई तरलाई भरि। कैधों मारतंड तनया की चारु धारै ये।४६।

कवित्त

कैधों सनि सहस सरूप सुठि धारे शोधि। तारी सरसाई बेश शोभा ये डहडहात।
कैधों धनी धोर धोर धुमिरसु घोषनतें। घिरत घनावली घमंड ये गहगहात।
ग्वाल कवि कैधों द्रुपता की चारुताई चारु। ताकी चढी चख चमके ये चहचहात।
कैधों जमुना की जमि जबर जलूसें जगि। जुरिके जमातें जोर धारे ये लहलहात।४७।

कवित्त

कैंधों बेश बानिक बन्यो है बन वृन्दन कों। बरन बहारैं बल वातन के गहरे।
कैंधों मतवारे मदवारे मोदवारे मूरि। मंजुल मतंगन के झुंडझूमि झहरे।
ग्वाल कवि कैधों शुभ्र सिंधु सरसाये तासु। सरसी सुधारै बेसुमारे हल हहरे।
कैधों रविजा की लोल लहर लुनाई लसो। छविकी छटासों छिति छोरन सों छहरै।४८।

कवित्त

आइहों कहाँ तें धरनी में धार तेरी[1] मात। धक धक होत है जमेश हीय कमुना।
धरम धुजा की खड़ी करन तुही है एक। धन्य धन्य जगमाँहि तेरी और समुना।
ग्वाल कवि परम प्रकोप करि पैठे पेलि। पावन के पुंजन में राखे नेको दमुना।
कठिन करारन की कोरन कलित केलि। कतल करैया तूं कलेसन की जमुना।४९।

मूलपाठः—१. तेरि।

कवित्त

कीरति इनामें होत धवलसु धामे होत। द्वारन दमामें होत देह मंजुता में लहि।
चाह चरचा में होत सुरबनिता में ताकी। सुमति सभा में होत तेज पुंजता में गहि।
ग्वाल कवि कामे परिपूरन सदा में होत। कुमति तमामें होत धीर पुंजता में रहि।
बंधु बतरामें होत जग में प्रनामे होत। क्लेश कतलामें होत जमुना कला में कहि।५०।

कवित्त

लखि कें चरित्र जमुना के भयो नाके अति। कहे चित्रगुप्त जमबात सुनि भीजकी।
अविधि सराजी पापी घोर तापी तिन्हे भेजे। पुरमापी यौं दिखावै बाजी जीत की।
ग्वाल कवि यातैं हौंस उड़िगे मुसदद्दीन के। कहत सरोष भई समें बिपरीत[1] की।
रही भे दफ्तर जु बद्दी भाल बद्दी भई। गद्दी भई अफ्ततिहारी राजनीत की।५१।

कवित्त

भाखै चित्रगुप्त सुनि लीजै अर्ज जमराज। कीजिये[2] हुकुम अब मूंदे नर्क द्वारे कों।
अधम अभागे औ कृतघ्नी कूर कलहीन। करत कन्हैया कर्नकुंडल सँभारे कों।
ग्वाल कवि अधिक अनीते विपरीत भई। दीजियें तुड़ाय वेगि कुलुक किबारे कों।
हमुना लिखैगें बही जमनाजु खैहैं हम। जमुना बिगारे देत कागद हमारें कों।५२।

कवित्त

रविजा तिहारे तीर पापी घोर तापी ताकी। मुकति विचित्र देखी जाहिर जहूर सों।
चार मुख वारौ मुख चारके चढाय हंस। करिकें चलौ की चल्यो चौंकि चित चूर सों।
ग्वाल कवि अचको उतारि धरि वृषभा पर। ले चलें त्रिलोचन के संभु सुख मूर सों।
चार भुजवारो भुज चार के सुचारन में। गरुड चढ़ायगयो गजब गरूर सों॥ ५३॥

कवित्त

एरो मात जमुना न दोष है तिहारो कछू। लिख्यौ सो भयोई भाल विधिना उमंग में।
तेरे तीर आयो स्याम कामाधिक रेख ह्वै। तेतों करिदीनी स्यामताई सब अंग में।
ग्वाल कवि कहै भुज द्वै को भार मानत हो। तेने भुजचार करि दीन्हेई उचंग में।
मैं तो चह्यो संग एक रानी को तज न जौलौं। तौलौं करि आठ पटरानी मेरे संग में ५४

कवित्त

ख्याल जमुना के लखि नाके भयो चित्रगुप्त। बैन करुना के बोलि मेरी मति ख्वै गई।
कौन करे कर में कलम कौन काम करे। रोस कों दवायात सो रोसनाई ह्वै गई।
ग्वाल कवि काहे तें न कान दें जमेश सुनो। नौकरी चुकाई कहा तेरी आँख च्वै गई।
लेखे भये ड़योढ़े रोजनामा को परेखा कौन। खाता भयो खतम फरद रद्द ह्वै गई॥५५॥

मूल पाठ :१. विपरित, २. किजीये।

कवित्त

अविधि सुरापी घोर तापी नीच पामी मुखी। रविजा तिहारी बूंद लघु अति ह्वै गई।
ताही छिन पल में अमल भल रूप भयो। कुटिल कुढंग ताकी रेख लेख ह्वै गई।
ग्वाल कवि कीरति सु चीरति दिसान जात। दूतन की चित्र की चलाकी चित्त ह्वै गई।
चारमुख चंद्रधर चाहत चितौत ताहि। चारन के देखते ही चारभुज ह्वै गई।५६।

कवित्त

केतक जपैया रामनाम के उपासिक है। केतक कहै या कृष्ण नाम पन पाकों में।
केते मंत्र जापी ब्रह्म व्यापी जग जानत है। केते सैव शिव ही को सुमिरत ताकों में।
ग्वाल कवि जाने जगदंबा राधिका के पद। केतक अगाधिका सु मात साधिकाको में।
कामदा सभी है पै न चाहत इनाम कछु। आठों जाम करत प्रनाम जमुनाको में।५७।

कवित्त

जोधा जोर जबर जुरेन कोऊ जंगन में। जोर जोर पातिक जमानत को साज्योई।
जाकों जुर जाहर जरायो जब भाख्यो वह। जमुनाश करिहौं में जाइ इमि गाज्योई।
ग्वाल कवि कहे ताके पुरुष परे है नर्क। अर्क सम ह्वै गयो विमानन सयाज्योई।
फेर वह पातकी कियो है गरुड़ासन को। देब अमरवासन सिंघासन बिराज्योई।५८।

कवित्त

अखिल मनोरथ में अपने पुजायबे को। तेरे तीर जमुना कहायो तरसा करैं।
मोर भयो चाह्यो ये अगौर अग मेरे किये। घेरे किये पारशद कौन चरचा करै।
ग्वाल कवि ये तो सुरराज हौ न आयो हाय। सोन कियो दियो तीन लोक अरचा करै।
अच्छी तं न करत प्रतच्छी अंतरच्छी देत। कच्छी तुरी देत है न पच्छीपतिका करै।५९।

कवित्त

माँगे देत विदित विरंच वर बानिक सौं। माँगे देत सचीपति पामें कछु भ्रमुना।
माँगे देत शेष औ गनेश त्यौं दिनेश देत। तातें रीत नारद मुनेशहु की कमुना।
ग्वाल कवि त्यौंही बजरङ्ग वीर माँगे देत। माँगे बिन देइबे कों काहु कीन गमुना।
माँगिवेंतें पूजत मनोरथ सदातें सब। मांगे बिन अधिक दिवैया तुं ही जमुना।६०।

कवित्त

मर्दन गयो है नर्मदा को सर्वदा तें मद। गौमती गरीबनी की गाथा है असारकी।
चंबल चपी है वर वरुना तपी है ताकि। हाय को जपी है बिललान बेसुमार की।
ग्वाल कवि सागर समयो शोक सागर में। वह तनयातें भूमि वलय विचार की।
पावै कौन परम पुनीत भानु नन्दनी की। तारक सकति और गंभीरताई धारकी।६१।

कवित्त

कुल छमता के सत्व गुन की सताके बीच। होत वपुता के गुन कलम लता के है।
पूर प्रभुता के कामधेनु की भत्ता के फेर। नाँ हि समता के तीन लोक वीरता के है।
ग्वाल कवि ताके शिरमौर-मनि ताके रूप। दिव्य वनिता के नहि होत करता के है।
पुंज देवता के सजे सुजस पताके ताके। नैक ही के तामे बाँह सूरज सुता के है। ६२।

कवित्त

मेरु मूठ मंजुल मँजी है मजबूत फेर। मारतंड नन्दनी न मूँद तेग तारा है।
वृन्दावन सिकिल सँवारी मथुरा में सान। कांढ़ो प्राग म्यानतें प्रसिद्ध ही प्रचारा है।
ग्वाल कवि सुखदा गहें जे शरनागत को। काटे पाप दंगल उदंगल अपारा है।
केती इक धारा होत कितनी दुधारा होत। थर थर धावनी लखी अनंतधारा है। ६३।

कवित्त

मोहन बन्दूकची सुमेरु बन्दूक बाँधि। कीनी देवतान की सु गज गजरबाने में।
मारतंड नन्दनी सु गोली अनतोली भरि। वृन्दावन विदित बरूद सरसाने में।
ग्वाल कवि मथुरा चमकदार पथरी दे। गोकुल अनूप कल तुरत दबाने में।
साज प्रागराज सो दराज ही अवाज होत। छूटत ही लागे जाय पातिक निसाने में।६४।

कवित्त

औरन के तेज तुल जात है तुलान बिन। तेरो तेज जमुना तुलान न तुलाइयें।
औरन के गुनकी सु गनती गने तें होत। तेरे गुन गनकी न गनती गनाइयें।
ग्वाल कवि अमित प्रवाहन की थाह होत। रावरे प्रवाह की न थाह दरसाइयें।
पारावार पारहू को पाराबार पाइयत। तेरे वारपार को न पारावार पाइयें ॥६५॥

कवित्त

गावे गुन नारद न पावे पार सनकादि। बन्दीजन हारे हरी मेधा मंजु शेस की।
दरस किये तें अति हरष सरस होत। परस पुनोत होत पदवी सुरेश की।
ग्वाल कवि महिमा कहि न परे काहू विधि। बैठे रहि गहिमा दसा है यों गनेश की।
तारक जमेश की विदारक कलेश की है। तारक हमेश की है तनया दिनेश की।६६।

कवित्त

काटि के किनारे किये कोरन करारे पुंज। कुंजन के कूल उठे लहर प्रभा की है।
चद्दर चहूँधा चारु चेटक चितौन चित्त। भारी भौर भैल फेर पंगत पताकी है।
ग्वाल कवि मोदमत्त मच्छ कच्छ वहे। वृच्छ घूम जब होत घन घूम बरसा की है।
जोर जल जाल जोर किये जर जंगलन। जोय जोय जाहर जलूस जमुना की है।६७।

कवित्त

जोवे ख्याल जमुना निहारे जमराज आज। तारे तिनहूँ को महा पापन विलोवेते।
खोवे निज चित्त में तलास महापापिन को। नित चित्रगुप्त मूँड़ मार मार रोवेतें।
गावे पन परम प्रवीन कवि ग्वाल भने। अदया सुभायनतें छमता समोवेंतें।
धोवें निज अंगन तरंगन में तेरे आय। जाय बैकुण्ठ में पसारि पाय सोवेंतें।६८।

कवित्त

सूरज सुता के ताके परम प्रताप साके। नाके हू जमेश अंग माँहि काँपे है।
हाय हाय भारवत सु चित्रगुप्त चौंके चित्त। चतुर चलाँकी दूत दूतन को चाँपे है।
ग्वाल कवि विविधि विचार करि हारी मति। बैठे बेकरार जल जमुना को नापे है।
झुकि झुकि झूमि झूमि झिझकि झिझकि झेले। झहरि झहरि नर्क झाँपनतें झाँपे है।६९।

कवित्त

तनया दिवाकर की राजस विलोकियत। दरस करैयनकी कीरति अटाकरी।
परस करैयन की महिमा मही में मंजु। पुंज देवतान के पे घुमडि घटाकरी।
ग्वाल कवि दरस परस कर वैभव की। दीप दीप लोकन में तेज की छटाकरी।
अघओघ संगत और जन्म जोनि पंगत की। ह्वै के बेकरार इकबार ही कटाकरी।७०।

कवित्त

प्रबल प्रभाकर की तनया तरङ्गन में। तनु तनु धोये जसदीपन जुर्‌यो परे।
ताके तेज पुञ्जनतें दुःख के पहार भार। पाय बेसुमार बेकरार ह्वै चुर्‌यो परै।
ग्वाल कवि काँसौ यह कहिये अकह बातें। हातें भये दूतपन परम दुर्‌यो परे।
जाहिर ही जबर जलूसदार जुलमी पें। आज जम जिभ्या पर जहर घुर्‌यो परे।७१।

कवित्त

आन भरी अधिक कृसान भरी पापन को। दान भरी दीरघ प्रमानमान कमुना।
तेज भरी मंजुल मजेज भरी रीझ भरी। खीझ भरी दूतनकों दाहे दौरि समुना।
ग्वाल कवि सुखद प्रतीत भरी प्रीत भरी। रीत भरी परम पुनीत मीत गमुना।
जंगभरी जमते उमंग भरी तारिबे कों। रंग भरी तरल तरंग तेरी जमुना। ७२।

कवित्त

एरी रविनन्दनी अनन्दन की मूल मंजु। मेरे हिये संशय अछेह अति भारी है।
कैधों तुव आगे पानि जोरे जमराज आजु। स्वासे लेत ऊरध ये सुधि न सम्हारी है।
ग्वाल कवि कैधों चित्रगुप्त चतुर चारु। लोटे बेकरार धुने शीश मतिहारी है।
कैधों दूत दौरि दौरि दहलात दुरिबें कों। कैधों लोल लहरे ये लहरे सिहारी है।७३।

कवित्त

राजनीत रावरी न चलिहै हमारे संग। रद करि दैहो पेलि पलके प्रसंगते।
दफ्तर बिहद्दी मुत्सद्दिन के रद्दी करि। नद्दी में सुरद्दो करो गद्दी बाँधि संगते।
ग्वाल कवि अबलौं न जानो रे अयानी मति। मालुम भई न तेरे कुटिल कुढंगतें।
जोरिके अभंग जंग अंग जमराज तेरे। भंग करि दैहौं जुरि जमुना तरंग तें ।७४।

कवित्त

भानु की तनैया तोय तेरो पियो वच्छएक। ताकी जननी कों दुह्यो भूख नसिबें कों जब।
ताही ग्वार पास आय दीन कह्यो भूखे हम। दियो पय ताही पर्म धर्म लसिबें कों जब।
ग्वाल कवि ताकी परछाईं परी पातकी पें। आये पारशद.से विमान कसिबे कों जब।
सुरभी समेत वच्छ ग्वारिया पिवैया जुत। पातकी पधार्‌यो हरिलोक बसिबें कों जब ७५

कवित्त

अवनी को मालसी सुबालसी दिनेश जानि। लालसी ह्वै कान्हकरी बालसुख थालसी।
नकंन कों हालसी बिहालसी करैया भई। धर्मन कों उथित सुढालसी विशालसी।
ग्वाल कवि भक्तन कों सुरतरु जालसी है। सुंदर रसालसी कुकर्मन कों भालसी।
दूतन कों सालसी जु चित्र कों दुसाल सी है। जमको जंजालसी कराल काल
व्यालसी ॥७६॥

कवित्त

पातकी पुरानो घोर घातकी घने नकामें। तात की न मात की करी न सेवा साको है।
गंग में न न्हायो मैं न रंग में भुलायोतिय। छायो अंग अंग मद जोबन नशा को है।
ग्वाल कवि कारन भयो न तरिबें को कछू। धारन कियो मैं इक पूरपन पाको है।
मों सों सुनि यार है न रोसो करिबे में कछू। अब तो भरोसो जियरा में जमुना को है ७७

कवित्त

भानु भानु नंदनी प्रभान की परम पाति। रावरो सुजस दीप दीप माँहि ह्वै रह्यो।
पुंडरीक आदि भयो फूलन में बानिक सो। विबुधन बोच वामदेव रूप ज्वै रह्यो।
ग्वाल कवि राजन के रसना गिरा ह्वै रह्यो। गायन के गोरस सरस रस च्वै रह्यो।
अंबर में चंद भयो अवनि में गंग भयो। फोरि के पताल फेर फनपति ह्वै रह्यो ।७८।

कवित्त

कान सुनि जाफत कुलंग चल्यो ताही ठौर। बीच ;वन पापी पर्‌यो काय पजरे परी।
तामें तें उँचहि अस्ति टूक पर्‌यो दूर जाय ! लियो झुकि धायो जहाँ जमुना भरे परी।
ग्वाल कवि वातें वह टूक छूट्यो धार बीच। चढ़िकें विमान चल्यो चौकनि खडे परी।
पापी उत स्याम भयो पच्छी इत बोले हाय। जाफत हू छूटी और आफत गरै परी ॥७९॥

कवित्त

जोय जमुनाको जमु नाको मुंदवाये देत। जमुना सके जो इमि बोल्ये अंधकूप वह।
करी भव फाँसी भव गाँसी बिन हाँसी करै। भव की मिली है भवरासी सो अनूप वह।
ग्वाल कवि हो में हरि मद हरि हार सो है। रोज हरि पाई सित हरिपात भूप वह।
हरि सों प्रकाश मुख हरि सी मृदुलताई। लेपहरि भाल में भयोई हरिरूप वह।८०।

कवित्त

देखिके दिवाकर तनैया को सु पातकीने। घक्कहि दिवाकर जमे ते उछलो गयो।
मार मद सो हे मार सम मन मोहे मंजु। पीवत है मार मार पच्छ सिरलों गयो।
ग्वाल कवि कुण्डल खगाकृत खगासन ह्वै। खग के बरन खन संकट दलो गयो।
जोवे जाहि धाम जाके धामतें अनेक धाम। ह्वै कें दिव्य धाम हरि धाम कों चलो गयो॥ ८१॥

अथ नवरस बर्नंनं
तत्र प्रथम-शृंगार रसबर्नंनं यथा

कवित्त

देव मारतंड की तनूजा की तरङ्गे ताकि। ह्वै गयो गोविन्द अरविन्द वदनीन में।
पाई प्रान प्यारी अनियारी उजियारी दुसि। प्रीति अधिकारी[1] मिलि गावे तानबीन में।
ग्वाल कवि प्रेमी पुरहूत पानि पानदान। पीवत पियूष जड़े प्याले जे चुनीन में।
झुमि झुमि झुके झंझरीन में विझुके झंपि। झिलमिल झाँई की झमक झँझरीन में। ८२।

कवित्त

दीखत दिवाकर को अमित अछेह तेज। ताकी तनया को तेज तातें अधिकारी कों।
ताकी लखि लहर लहर करै पातकी सु। बैठ्यो सुरसंग ह्वै सरूप गिरधारी को।
ग्वाल कवि पाई पटरानी बसु आसपास। तामें सरसानी एक रूप सुखकारी को।
चूमें मुख प्यारे को रसीली प्रान प्यारी पगि। प्यारे प्रान नाथ मुख चूमें प्रान प्यारी को॥ ८३॥

कवित्त-हास्यरस

तात की न मात की करी न सेवा भ्रात की। ऐसो महा पातकी सु जमुना अह्वायो है।
ह्वैके भुज चार चारु कंचन विमान चढ़्यो। शंख चक्र गदा पद्म सुन्दर सुहायो है।
ग्वाल कवि भाखे यों सिधार्‌यो हरिलोक बीच। बीच मल्यो बैरिन को जूथ मग छायो है।
एके संग सबही हँसन लागे ताकों देख। कौन है कहाँ ते आयो कौन रूप पायो है।८४।

मूलपाठ : १. अधीकारि।

कवित्त–करुण रस

काहू एक देश तें पुरुष तिय बेटा युत। आयो न्हाइवें कों तहाँ जमुना नलौं गयो।
पूत पहिलेई पिल पैठिगो प्रवाह बीच। ह्वै करि गोविन्द धर्मधाम कों भलो गयो।
ग्वाल कवि नेक में न देखि परयों ताकों। तब बोल कढ़े ऐसे मन मानिक छलो गयो।
तात मात रोऊ खड़े तीर में पुकारे हाय। हायसुत मेरे आहि कित ले चलों गयो।८५।

कवित्त–रौद्र रस

घातकी कुचाली अति पातकी कलंकी कूर। पाई कातिकी, जमुना में वह पैठ्यो जाय।
फेर कछु द्यौसन में देह उन त्याग्यो तब। आये दौरि दूर उनसों ही जब पैठ्यो जाय।
ग्वाल कवि क्रुद्ध के विरुद्ध जुद्ध कियो जोर। मीस मीस-मारे विसमाई में अमेठ्यो जाय।
जीति दूत राजकों, चुनौती जमराज कौं दे। ऐसो वीरराज जदुराज संग बैठ्यो जाय॥ ८६॥

कवित्त–वीर रस

दीह दुराचारी व्यभिचारी अनाचारी एक। न्हाइ जमुना में कह्यो कैसे मैं उधरिहों।
फेर प्रान त्यागे भुज चार भई ताही ठौर। आयौ जमदूत कहे तोहि मैं पकरिहों।
ग्वाल कवि एती सुनि भाग्यबलि भाख्यो वह। निज भुजदण्ड को घमण्ड अनुसरिहो।
तोरि जम दंड को मरोरि बाहु दंड कों सु। फोरि फारि मंडल अखंड खंड करिहों।८७।

कवित्त

अधम अभंगी अघ ओघन के संगी दीइ। धोई देह दौरि जमुना में जोर ताब होत।
बीते वह बासर प्रसंस हंस दूर भयो। ह्वै गयो मुकुन्द तई काहूकी न दाव होत।
ग्वाल कवि भनत सु लैन आये दूत ताहि। देखि तिन्हे सों ही जाय जुट्यौ चित चाव होत।
जंग बढ़ी तिन सों उमंग चढ़ी अंगन में। रंग बढ्यो हिय में सुरङ्ग मुख आव होत।८८।

कवित्त–भयानक रस

पूरि रह्यो पातिक में कल ही कुचाली कूर। काया भई कष्टित मलीन तनु भारे कों।
देखि जम सों ही जमुना को लियो नाम उन। होत अंतकाल नंदलाल रूप धारे कों।
ग्वाल कवि त्यों ही जम भाख्यो हाय हाय करि। काउ जिन जाउ जो गये तो मारि तारे कों।
दूर करि देगो दीह राखन मूँदि करि। चूर करि देगो अंग अखिल हमारे कों॥ ८९॥

कवित्त–वीभत्स रस

पापी एक आइ कें नहायो जमुना में जोर। ह्वै के भुजचार त्यों विमानन की सेज होत।
आये जमदूत मिले पारशद बीचो बीच। खींचे होत जुद्ध जीतेंगे भले जे होत।
ग्वाल कवि भाखे उन इतन के फोरे शीश। श्रोन सिन्धु धारे बहि बहि के मजेजे होत।
जम को जहर मानों जैयद कहर भयो। हहर हहर चित्रगुप्त के करेजे होत॥ ९०॥

कवित्त अद्भुत रस

व्यापी अघ ओघ को महापी मदिरा को मंजु। कीनो परदेश को पयान रोज रारा में।
भोज करिबें कों लई लकरी करीलन की। सो करील रावरे किनारे हुतो क्यारी में।
ग्वाल कवि ताको उड़ि धूम गयो नर्कन में। पुर्षन समेत पापी स्याम छवि धारी में।
सुमिरन सेवा ध्यान दरस परस बिना। मुकति दिवैया मैया जमुना निहारी में। ९१।

कवित्त–शांत रस

अपनो न कोऊ बन्धु बहिन भतीजे सुत। भानजे न भाभिमि मुहयापन को सपनो।
तपनो तपन तेज तन कों अनित्य जानि। मोज करि ज्ञान की अदेह में न चपनो।
कप्नो कुसंग तें कुढंगन तें ग्वाल कवि। झूठो व्यवहार माया जालतें न झपनो।
थपनो न मोंकों जग जाल के जंजालन में। याते अब नाम जमुना को रोज जपनो।९२।

कवित्त

जो लों रहे स्वास तो लों आस रहे जीवन की। स्वास गये फेर कछु दीखत न पार है।
काम क्रोध लोभ मोह मध्य मद गामी बन्यो। पर नारि गामी को न जान्यो काहू बार है।
ग्वाल कवि आज आप आपनी परीहे सबे। देख्यो जग बीच एक मतलब ही सार है।
डारि सब भार में कियो है निरधार एक। नाम जमुना को मोहि अमृत अधार है।९३

कवित्त

काम की न काहू के न निज काम आवे काया। पंचभूत व्यापनी बनाई विधि आम की।
धाम की न धनि की न धन की न तन की। तपन की न पात बात कीनी सब खाम की।
साम की न दाम की न दंडभेद छाया रही। वेद विधि जानी कवि ग्वाऊ जे अराम की।
छान की न माया बसु याम की हमें तौ अब। राम की दुहाई आसा जमुना के नाम की ९४

कवित्त

परनो कुसंग के न अंगन में मेरे मन। मन अनंगन एक छिन जरनो।
मरनो भलोई हिय मौन में मगनि भल। उज्जल अचल फेर छलतातें डरनो।
हरनो कुटुम्बन तें मोह कवि ग्वाल भने। ज्ञान अंकुशे ले करी क्रोधादिक डरनो।
करिनौ हमें हौं सो कियोहो बहु घोस, पर। अब तो जरूर जमुना कों ध्यान धरनो।९५।

अथ षटऋतु वर्णन

कवित्त-वसन्त ऋतु

भानु तनया की अति तरल तरंगे ताकि। होत तेज अतुल प्रताप पल चार में।
बैठे सुरसंग में सु अंग में वंसती बास। वैसेई बिछौना जर्द जरद बजार में।
ग्वाल कवि कोकिल कलित कल रव राजे। त्रिविध समीर सुख सरस अपार में।
किंशुक कुसुंभ औ अनार कचनार चारु। फैल फैल फूलत वसन्त की बहार में॥९६॥

कवित्त-ग्रीष्म ऋतु

पाई ऋतु ग्रीषम बिछायत बानाय वेष। कोमल कमल निरमलदल टकि टकि।
इंदीवर कलित ललित मकरंद रची। छूटत फुहारे नीर सौरभित सकि सकि।
ग्वाल कवि मुदित विराजत उसीर खाने। छाजत सुरा में सुधा छकि छकि।
होत छवि नीकी वृषभान नंदनी की सौंह। भानु-नंदनीकी ते तरंगन कों तकि तकि ९७

कवित्त

सूरज सुता के तेज तरल तरंग ताकि। पुञ्ज देवता के घिरे नाके चहुँ कोय के।
ग्रीषम बहारे बेस छूटत फुहारैं धारें। फैलत हजारे हैं गुलाब स्वच्छ तोय के।
ग्वाल कवि चंदन कपूर चूर चुनियत। चौसर चंबेली चंदवदनी समोय के।
खास खस खाने खासे खूब खिलवत खाने। खुलिगे खजाने खाने खाने खुसबोय के।९८।

कवित्त-पावस ऋतु

पावस बहारन विलोके हरिलोक बीच। बेसुमार बीजुरी चमके चारु चकि चकि।
घोर घोर घुमिरि घनावली घमंडे करे। घर घर घोष पौन झर झर झकि झकि।
ग्वाल कवि माथे मोर चंद्रिका विराजे बेस। आठ पटरानी देव जोरें प्रीति थकि थकि।
होत छवि नीकी वृषभानु नंदनी की सौंह। भानु नंदनी के ते तरङ्गन को तकि तकि ९९

कवित्त-शरद ऋतु

आइ रितु शरद सुहाई बैकुण्ठ बीच। ह्वै करि सुबेस तहाँराजे सुधा छकि छकि।
तारन बादलान के बिछौना सित शोभा देत। झिलमिलि झालरैं सुमोतिन की झकि झकि।
ग्वाल कवि चंद्रक कलित तन चंद्रिका में। तैसी मोर चंद्रिका चमके शीश चकि चकि।
होत छवि नीकी वृषमान नंदनी की सोंह। भानु नंदनी के ते तरङ्गन को तकि तकि १००

कवित्त

बेसक विहारी केसु धामन को धनी होत। बनी होत सरद जुन्हाई जहाँ जकि जकि।
चौसर चमेली के चंगेरिन में चुनियत। हीरन तें कुण्डल जडाऊ करे धकि धकि।
ग्वाल कवि आसन असन बसनन बेस। सरसी सफेदशोभ चंदन ढरकि ढकि।
होत छवि नीकी वृषमान नंदनो की सौंह। भानु नंदनी की ते तरंगन कों तकि तकि१०१

कवित्त-हेमंत ऋतु

अति अभिमानी पाप ही में मति ठानी। निज नरक निशानी जाहि मारे दूत ठेलि ठेलि।
ताकौ भाग जागो, जमुना को भयो दरस परस। ह्वै कें भुजचार चारु लीह्वीं है सकेल केलि।
ग्वाल कवि पीवत पियूष प्यार पूरे पगि। हाजिर हिमाम को किमाम सुख झेलि झेलि।
प्यारी रूपवंत इककंत छविवंत दोऊ। राजत हिमंत में इकंत भुज मेलि मेलि।१०२।

कवित्त-शिशिर ऋतु

सरसी शिशिर रितु दासीसु दीपन में। परसी गोविंद पुर भोतर अमल भल।
बीच देवतान के विराजे वर बानिक सों। मानिक के महल गलीचा जोति झल झल।
ग्वाल कवि दीट दर परदे पर है दिव्य। चन्दन पियूषचन्द बदनी अचल चल।
होत छवि नीकी वृषभानु नन्दनी की सौंह। भानु नन्दनी की ते तरंगन कों पल पल ॥ १०३ ॥

कवित्त

भानु नन्दनी की तकि तकि के तरगे तेज। सोवे सेज सौरभ मजेज की सी सी सी।
शिशिर बहार में जगी है जोति जगमग। सुद्धी भई सुमति विरुद्धमति पी सी सी।
ग्वाल कवि आगे में नकासी कल गावे गान। परदा अनूप तेज तापिनी जु दी सी सी।
संग में लसी सी तिय वदन शशी सी दुति। छाके सुधा सी सी मिटि जात मुख सी सी ॥ १०४ ॥

इति षटऋतु वर्णन

अथ फुटकर–कवित्त

चमकी चहूँधा दीह दीपन में दिव्य दुति। जमुना जगी है जोर जुलम न भारी तें।
अधम अजापी महा पापी नीच मीच। समैं परी उड़िरेनु मीच नैन उर धारी तें।
ग्वाल कवि आये पारशद ले विमानन कों। मारि जमदूतन विदा किये अगारी तें।
जम की जमैयत जरन सागी समकीन। दम की रही न सुधि धमकी तिहारी तें।१०५।

कवित्त

भूलहू न जातो एको भुनगा हरी के मौन। कैसे त्रिषावन्तन की तिरषा बुझाती ये।
सागर अपार में नहीं ये बेसुमार सब। कासों मिलि मिलि कें वहाँ लौं मिलि जाती ये।
ग्वाल कवि धरम धुजान फहराती बेस। कैसे हूँ न वरन विवेकता निभाती ये।
जीवती न गोपिका गोविन्द के वियोग बीच। जो न जमुना की जोर जेब दरसाती ये ॥ १०६ ॥

कवित्त

सोरके सराक दे सरक सुख जातो सब। दौरिके दरेक दुख बढ़ि जातो कल में।
उड़ि जातो तूल सो तजक तन तन तोरि। छाय जातो मेल मूल मुखन अमल में।
ग्वाल कवि जोर वैकुण्ठ जातो खाली होय। हाली जमलोक भरि जातो भूरि भल में।
होती जो न रविजा तो फवि जातो पाप पूर। नवि जातो कर्म धर्म दबि जातो पल में ॥ १०७ ॥

कवित्त

छिपतो कहाँ धौं जाय कालिया कुटुम्ब जुत। कैसें धर्म सीमा कुल ही में चलि आवती।
पावते न कृष्णचन्द्र कालीनाथ[1] पदवी कों। फेर काहू रीत तैंने खेल विधि भावती।

मूलपाठ : १. कालि।

ग्वाल कवि केसें अनन्द नन्दनन्दन को। देखतौ बरुन, जो सदा पुरान गावती। जाते मिटि करम मुनीसन कौं वोसो वीस। जौ न जमुना की या धरा पै धार आवती॥ १०८॥

कवि वचन–दोहा

९ ७ ८ १
संवत निधि रिषि सिद्धि शशि। कातिक मास सुजान।
पुरन मासी परमप्रिय। राधा हरि को ध्यान।
भयो प्रगट ताही सुदिन। जमुना लहरी ग्रन्थ।
पढ़े सुने आनन्द मिले। जानि परे सुर पंथ।

इति श्री ग्वाल विरचिते यमुनालहरी ग्रंथ संपुरणम्।

श्री गणेशायनमः

अथ श्री कृष्णचंद्रजू के नखशिख ग्रंथ

मंगलाचरण

बीन करवर हंस कलित बखानियत। कीरति तनैया सुरगावत मुनीसुरी।
धुनि रूप मुखचंद प्रसिद्धि प्रमानियत। जल जन माल मृदुलता विसवेसुरी।
ग्वाल कवि निगम पुरान की आधार कहे। सुन्दर तरंग करि सके को कवीसुरी।
बरने विशेष कवि पावत नहीं है थाह। संपति भरैया महाराधा जगदीसुरी॥ १॥

दोहा

श्री गुरु श्री जगदम्बिका। श्री पितु दया सुभाय।
तिनके चरन सरोज कों। वंदत शीश नवाय॥ २॥

कवि विनय

कृष्णचंद महराज के। तनकी शोभ अपार।
सेष महेश गनेश विधि। नारद व्यास विचार॥ ३॥
गुन सागर महराज के। गावत मिलै न पार।
सो छबि केसें कहि सके। अल्प बुद्धि व्यवहार॥ ४॥
लघुमति तू क्यों तरे। गुन छबि सागर पूर।
चढ़ि पपीलका पीठपें। क्यों पहुँचे मग दूर॥ ५॥
थोरि बुद्धि कवि ग्वाल की। गुन हरि के सु अनंत।
चित संकित अति होत है। किमि करियें बरनंत॥ ६॥
श्री गुरु सुकवि समूह की। चरन कृपाधरि शीश।
बरनत कछु कवि ग्वाल अब। पंथ पुराने दीश॥ ७॥
श्री जगदंबा की कृपा। ताकरि भयो प्रकाश।
वासी वृंदाविपिन को। श्री मथुरा सुखवास॥ ८॥
विदित विप्रवंदी विशद। बरने व्यास पुरान।
ताकुल सेवाराम को सुत। सुत कवि ग्वाल सुजान॥ ९॥

ग्रंथ संवत

वेद[४] सिद्धि[९] अहि[८] रैनिकर[१]। संवत आश्विन मास।
भयो दशहरा को प्रगट। नख शिख सरस प्रकाश॥ १०॥

कवित्त-चरन नख वर्णन

पानिप परस मंजु मुक्ता सरमाय। डूबे सिंधु अगम अदम गम कोर के।
तारे तेज वारे तेन कारे निसि तारे परे। दिवस डरारे रहे दुरि मुख मोर के।
ग्वाल कवि फवि फवि छवि जो छपा कर की। दवि दवि दूवरे कुमुद जिमि भोर के।
यातें जग परख नख मख मेन पचि सब। चख लख पद नख नवल किशोर के॥ ११॥

चरन वर्णन

कोहर में बिंब में बंधूकन में विद्रुम में। जावक जपा में, वह किसलै अमंद के।
लाल में, गुलाल में, गहर गुल लालन में। लाली गुन पैक सो न तूल है सु छंद के।
ग्वाल कवि ललित लुनाई कोमलाई जैसी। तैसी है न कंज बीच औ गुलाब फंद के।
नंद के करन, दुख द्वंद के हरन धन। असरन-सरन चरन नंद नंद के॥ १२॥

कवित्त

मुनि जन मन अधार के अगार गुर। काली नाम सीस के सिंगार चारु साज के।
वेद औ पुरान शास्त्र तत्वन के तत्व तेज। सत्व को प्रमत्व दत्व मुकति समाज के।
'ग्वाल कवि' कमल कुलिस ध्वज अंकुसतें। चिन्हित विचित्र रूप दूसरे निराज के।
शोभा के जहाज राज लोकन के ताज राज। पद जुगराज व्रजराज के॥ १३॥

चरन भूषन वर्णन

कैधौं मंजु मुख के मंडन बनाये विधि। कैधों फल कल कुण्डल अनूप सुखमाके है।
कैधौं जग मोहन के मंत्र के अधार पूरे। कैधौं मृदुध्वनि के वपुष छवि छाके है।
ग्वाल कवि द्वार ही तें आगम कहैया किधों। मातहिय कमल लिखैया किधौं ताके है।
कैधौं हेमकार कुल तारन निदान नीके। नूपुर नवल किधौं नंद के ललाके है॥ १४॥

जंघा वर्णन

कैधौं विधि बागवान अधिक उतायल में। कदली उलटि धरे सीमा शोभ माल की।
कैधौं भुज उदर हृदय शीश मंदिर के। उदित अधार धरे मंदी जोति जाल की।
ग्वाल कवि कैधों सुरराज वन नंदनते। औंथी धरि दीनी है सरो महा सुढाल की।
कैधों केलि काल में कला निधि मुखीन कोये। मोदकी करनवारी जंघे नंदलाल की॥ १५॥

नितम्ब वर्णन

कैधों अघ उरघ शरीर मध्य भाग ताके। करन प्रसिद्ध बुर्ज बने है सम्हाल के।
कैधों लंक भूपति विराजिवे के रंग गूढ़े। मजेदार जड़े नीलमनि जाल के।
ग्वाल कवि कैधों कामिनी की केलिसमय में। तवसे मधुर मृदुदेन हारे ताल के।
कैधों पृष्ठ भाग की प्रभा के वृद्धि करिबें को। विधि ने बनाये हैं नितंब नंदलाल के॥१६॥

लंक वर्णन

गोल है अमोल है अजूबाहै अनूपम है। छाम है न थूल है न माफिक पसंद को।
रंग रंग रंग की रंगीली अति चटकीली। काछनी विराजे वर वानिक बुलंद को।
ग्वाल कवि चामी कर कोंधनी जड़ाऊ जोर। पोही स्याम पाट में समूह शोभ फंद को।
ललित लुनाई सुरि समकत लूमि लूमि। लह लह लहकत लंक व्रजचंद को ॥ १७ ॥

काछनी वर्णन

मंजु मखमलतें मुलायम है मजेदार। साटन तें चिकनी चहूँधा एकतारे की।
रंगी रंग रंग के सुरंगन तें तेजदार। त्रोटन की ओट औ किनारी कोरकारे की।
ग्वाल कवि मोतिन की झालरें झिलत जामें। फौदनी खिलत वेश बादले पसारे की।
कटि कमनीयतें करत कल केलि ऐसी। काछनी कलानिधि कलासी कान्ह प्यारे की ॥ १८ ॥

लंक भूषन (करधनी) वर्णन

वामाकर कामी ढाल ढाल के तपाई तेज। बहुरि है सुनार सुख दैया की।
हीरन तें मोतिन तें लालन ते पन्नन ते। जड़ित जड़ाऊ जोति जोतिन जितैया की।
ग्वाल कवि विविध बनाई बेल मीनन की। स्याम मखतूल में गुँथी है छवि छैया की।
कैसे कहे कौन कहि हारे है कवीश कुल। कैसी कमनोय कटि कौंधनी कन्हैया की ॥ १९ ॥

नाभि वर्णन

अधिक अमोल गोल गहरी अडोल जैसी। तैसी है अझोल औ अतोल सुखभारी की।
तीस तीन कोटि देवतान के नहाइबे को। पुषकर पूरन की परभा पसारी की।
ग्वाल कवि चतुर निधान चतुरानन के। तात की उप सज कुई है उज्यारी की।
नीके नीकें नैनन नवीनता निहारीयत। नूरतें न मूंद नाभि नवल विहारी की ॥ २० ॥

त्रिबली वर्णन

कैधों नाभि कूप कमनीय के किनारे पर। राधे ने बनाई है नसेनी नेह पासे की।
कैधों तजवीज तेज तोल लीन लोकन की। तीन ही बनाई सीम अतुल मवासे की।
ग्वाल कवि कैधों पात बंधन कियो है दाम। ताकि परि गई है तकीरें रूपरासें की।
कैधों महाराज मन मोहन मुकुन्द जू के। तन में तकाई परे त्रिबली तमासे की ॥ २१ ॥

रोमराजी वर्णन

कैधों पुरहूत[1] के परम पारचे को पान। तापे मृगमद की सुधारी धार ताजी है।
कैधों निज स्वामी की भगति रसराज करी। रेख रूप ह्वै वस्यो शरीर शोभ साजी है।
ग्वाल कवि कैधों नाभि कूप कमनीय पर। पाट स्याम डोर फैली दूर लौं दराजी है।
कैधों रूप राशि राधावर के उदर पर। राजी राजी ह्वै करि विराजी रोमराजी[2] है ॥ २२ ॥

मूलपाठ—१ पुरहुत, २ रोमराजि

उदर वर्णन

कैधों पुरहूत की प्रकर्ष पनवारी जाके। परम पवित्र पान पूरन पसंद है।
कैधों मन लाय के बनायो मैन रेजा एक। मखमल माखन सो मृदुल मुकुर है।
ग्वाल कवि कैधों एक पात अरवी कौ नीको। अजब अनूठो औ अनूपम असर है।
कैधों विधि विटप विचित्रता के आलवाल। बानिक विशाल नंदलाल को उदर है॥ २३॥

हृदय वर्णन

कैधों दल दीनन के दुःख की दलनहारी। दीरघ दया जो ताको पितु है प्रकाज को।
कैधों दैत्य मारन निवारन अमर उर। ताके चितवन को ठिकानो गुन साज को।
ग्वाल कवि कैधो भाव जोगी की गुफा है। ह्वै रह्यो प्रकाश तामें तेज के समाज को।
कैधों बर बिमल कमल दल हूते मृदु। मंजुल हृदे है श्री मुकंद महाराज को॥ २४॥

भृगुलता वर्णन

कैधों विप्र पायन पवित्र के पुजाइबे कों। कारन विचित्र ब्रह्मांड के पसारे पें।
कैधों परिपूरन परम प्रभुता को पद। ताके पायबे को हें सुपंजा भाव भारे पें।
ग्वाल कवि कैधों छवि ताकी छमता की इद। ताको है निशान तीन वर्ण के अखारे पें।
कैधों सुख सुखमाकी सुन्दर सता है भरी। भृगु की लता है कान्ह उर के किनारे पें॥ २५॥

वक्षस्थल-चिन्ह वर्णन

पावे कौन पार पार दीसत अपार जाको। ऐसे पारावार की सुता है बैसबारी की।
सदन सुधा को कलानिधि सो सुधार्‌यो बधु। सुखमा खवासी करे हाजिर हुस्यारी की।
ग्वाल कवि जे तो जग जोवे जोति जाकी जोर। जननी अनंद की गुरयानी है उज्यारी की।
ऐसी रमारानी महारानी ठकुरानी ठीक। स्याम उर चिन्ह ह्वै विराजे दुति न्यारी की॥ २६॥

वनमाल वर्णन

फूले फूल फूल तिन्हे फूल फूल लीने तोड़। रंग रंग की सुरंगत निहारी है।
सूत सूत रेसम रंगीन में रसाइन सों। गहकि गहकि गूंधी गूंध की नियारी है।
ग्वाल कवि सौरभ समुद्र तें निकारी मनो। ललित लुनाई कोमलाई लहराई है।
बानिक बिशाल वारौं मोतिन की भाल जापें। ऐसी वनमाल नंदलाल उरधारी है॥२७॥

कर वर्णन

संपति सुजस सुत आयु औ पराक्रम के। लक्षन विलक्षन परे है रेखजाल के।
गुर गिरिराज धारि लेवे के अधार आछे। मानसुरराज के न सैयाकंस भाल के।
ग्वाल कवि ब्रज की सहायक खैया मूर। भोजन करैया सुख दैया गोपग्वाल के।
कंज है न कोमल गुलाब में न गुन ऐसें। जैसे जुग पानि है सुजान श्री गुपाल के २८

कवित्त

होत ही प्रभात प्रात मठा को मथत जब । मचलि मथानि गहि माखन चख्यो करो ।
साँकरी गली में रोकि रोकि ब्रजबालन के । कुचको परस रस हेतहु लख्यो करो ।
ग्वाल कवि तंदुल सुदामा में चवाये जाते । तीन लोक बकसि सुभाव ही लख्यो करो ।
वेई हाथ आपने सुनो हो ब्रजनाथ नाथ । जानिके अनाथ मेरे माथ पें रख्यो करो ।२९।

लकुट वर्णन

काढी काप तरु में तें सूधो मजबूत देखि । चाही विश्व कर में खराद खुसखासा है ।
चापी कर तारन के जाल करि रंगत पें । चिंतामनि जड़ित वृन्दावन को वासा है ।
ग्वाल कवि नंद के लडाइते कुँवर जू को । लकुट लड़ैती ताको ताक्यो में तमासा है ।
मानो श्री सनेह को समर एक चोबदार । ताके पानि मंजुल में अद्‌भुत आसा है ॥३०॥

बाँसुरी वर्णन

कैधों चर अचर वसीकर करन वारो । मंत्र लिखि जंत्र सिद्धि कियो तीरथन में ।
कैधों छहराग और रागिनी सुतीसन कें । वासको सदन रंग्यो सात हू स्वरन में ।
ग्वाल कवि कैधों शिव सनक समाधान को । भेदन करैया सरशोच देख्यो मन में ।
कैधों सुधा नद के प्रवाह को वहन हारो । बेनु श्री बिहारी को बजत वृन्दावन में ।३१।

भुज वर्णन

कैधों भल विमल कमल जुग जोइयत । सुन्दर है नाल अति सुखमा समाज की ।
कैधों ब्रजबालन के गोरे गरे डारिबेंकों । मोहनी की फाँस द्वै मदन गढ़राज की ।
ग्वाल कवि कैधों भवसागर उतारिबे को । वल्ली है बुलंद बिधि भक्तन के काज की ।
कैधों चारु चाकते भवाय के उतारी भली । भावती भुजा है महाराज ब्रजराज की ।३२।

कवित्त

कैधों ब्रह्मांड के अरबंडल पराक्रम को । वासनी अनोखी ये भरी है सुभ काज की ।
कैधों बेस विदित विशाल है तमाल तेज । तातें रही लतिका लटिकि लौने साज की ।
ग्वाल कवि कैधों दीन दुःखन के दंडिबे को । दंड है अभे के सींवा सुखमा दराज की ।
कैधों चारु चाकते भवाय के उतारी भली । भावती भुजा है महाराज ब्रजराज की ।३३।

कंठ वर्णन

वाकी धुनि में तें एक धुनि ही प्रतीत होत । ताहू में न प्रीत बहु सुने उलहत है ।
याकी धुनि सुनी मुनि मेरु के प्रवासी मोहे । बरन बरन मृदु माधुरी लहत है ।
ग्वाल कवि वापें कोऊ भूषनन जेब देत । यापे भले भूषन की जेब उमगत है ।
कारन करन कान्ह करुना निधानजू को । कंठ कमनीय कंबु कुल तें कहत है ॥३४॥

कवित्त

परा पस्ययंती मध्यमाते मिली मौज़ भरी । वैखरी विचित्रित अधार वेद चारि को ।
प्रतिभा प्रकाश परिपूरन करनहार । शीशधर दोऊ को मध्यस्त हितभारी को ।
ग्वाल कवि मधुर सुधाहूँ ते सरस सुर । ताकी करें चाह सुर नाग नर नारी को ।
भूषित करत निज भूषन कों भूषित ह्वै । पूषित प्रभान गोल ग्रीव गिरधारी को ॥ ३५ ॥

कंठ भूषन वर्णन

कारन करन कुल कलस कलानिधि को। नंद को कुंवर कान्ह करुना को कंद है।
ताके ग्रीव गोप ओप गहनो जग्यो है जोर। जड़ित जड़ाव जात रूप में बुलंद है।
ग्वाल कवि हीरन की पाँखुरी चहुँधा चारु। ताके बीच लाग्यो एक नीलम अमंद है।
मानो स्याम कंबु पाय पूजि के चढ़ायो काम। पुण्डरीक तापें आइ बैठ्यो अलिनंद है॥ ३६॥

पीठ–चोटी वर्णन

खेले खोरि साँकरी में बाँकरी चितौन चारु। ताकरी पे काँकरी चलाइ छवि छाये है।
फूलन के फौंदना फिरावत है फूल-फूल। उलमि उलमि फाँद फाँदत सुहाये है।
ग्वाल कवि सावरे सुजान जू की पीठि पर। हेम झबिया के झुण्ड चोटी में लगाये है।
मानो नीलमनि की शिला पें रविजा की धार। तापें मदनेश फूल चम्पा के चढ़ाये है॥ ३७॥

चिबुक वर्णन

कैधों स्याम मनि की बनाई है विरंचि बेस। गिंदुक खिलौना कामदेव सुखदानि को।
कैधों श्री किशोरी के सनेह नभमार्ग में। धायेब को गुटका असित अखरानि को।
ग्वाल कवि कैधों एक विकसित इंदीवर। ताके तरे शालिग्राम प्रगट कलानिको।
कैधों चारु चमक चमंकत चहुँदिसतें। चैन को चबूतरा चिबुक चक्र-पानिकों॥ ३८॥

अधर वर्णन

कोहर सें बिंब सें कहें तों आदि पीरे हरे। पकि पकि पाछे तें सुरंग रंग धारो है।
विद्रुम से वरने तो जल के परस सेत। बन्धु जीव कहे तो संकट करारो है।
ग्वाल कवि वे तो है अनित्य पें अरुन नित्य। सुधा तें सरस रस तामे आनि ढारो है।
यातें महराज व्रजराज सिरताज आज। अधर तिहारो सो तिहारो ही निहारो है॥ ३९॥

कवित्त

प्रीत परिपूरन पवर्ग तें पियूख भरे। पतन करैया पीर विरहा झरक की।
सुन्दर सरस अति रवनो कपोलन की। ताप हनि करे सीरे ठण्ड ज्यों बरफ की।
ग्वाल कवि रावरो अधर मन मोहनजू। सुखमा बढ़ाये बन्धु सधर तरफ की।
मानहु लखारी रामदेव जू के लिखवे को। धरी स्याम कानद पे सरप सिंगरफ की॥ ४०॥

दशन वर्णन

कैधों पंचबान बाजवान ने बनाई बेस। कुन्द कलिकान की अवलि सरसात है।
कैधों मुख चार चारु जौहरी बिचार करि। होरे के कनीन की बनाई पूर पांत है।
ग्वाल कवि कैधों तके तारागन तेज वारे। तिनकी कतारें भाँत भाँत ही सुहात है।
कैधों दीह दमक दमंकत दिसान दौरि। दसन दमोदर के हाँस में दिखात है। ४१।

कवित्त

कैधों पके दाड़िम के बीज परिपूरन है। परम पवित्र प्रभापुञ्ज लमकत है।
कैधों भूमि सुत के अनेक जारे तेजवारे। बाँधिके कतारें झलाझल झमकत है।
ग्वाल कवि कैधों पंचवान जौहरी की जोर। ललित ललाई लिये मनि चमकत है।
कैधों वृषभानु की लड़ैती प्रान प्रीतम के। पान पीक पाजे पे दसन दमकत है। ४२।

कवित्त

कैधों ओज अद्भूत अनेक अंग धारिकरि। आभा आनि बैठी कहो कौन पें नखी परें।
कैधों बेस बीजुरी की कौंधन कलासी होत। ऐसे यह मेघन की मेघ पें रखी परें।
ग्वाल कवि कैधों शर्द राका के कलानिधि की। कौमुदी हती सोना चकोर पें चखी परें।
कैधों स्याम सुन्दर सुजान की हँसन माहि। दसन अनूपन की लसन लखी परें। ४३।

रसना वर्णन

कैधों बट पल्लव परम परमाते पूर। तामें मुकताहल की भालदुति न्यारी की।
कैधों कोकनद को अमल दल भल एक। तापें चँहू कोर कली कुन्द उजियारी की।
ग्वाल कवि कैधों बाक बानी के विराजिबे को। आसन अनूपकोर हीरन हजारी की।
कैधों दशनावलि में रसना रसीली अति। राजे रमनीय ऐसी रसिक बिहारी की॥ ४४॥

कवित्त

वह तो असित रूप लसितन नेको ताको। यह तो ललित छबि सहित दिखाय है।
पाहन कठोर वह कोमल अमल यह। वह तो अचल यह चलन सुभाय है।
ग्वाल कवि वातें जातरूप की जँचाई होत। याते षटरस के सवाद जाने जाय है।
नंद महाराज के सपूत ब्रजराज जू की। रसना कसौटी पर ये गुन सिवाय है।४५।

मुख सुवास वर्णन

पारिजात जातहू न नरगिस छात हू न। चंपक फुलात हू न सरसिज ताब में।
माधवी न मालती में, जूही में न जोयत में। केतकी न केवड़ा की लपट सिताब में।
ग्वाल कवि ललित लवंग में न बेलन में। चंदन कपूर में न केसर हिताब में।
सेवती गुलाब में न, अतर अदाव में न। जैसी है सुवास कान्ह मुख-महताब में।४६।

हास्य वर्णन

कैधों श्री महीप मदनेश जू को एक सर। नील उत्तपल जाको विमल विकास है।
कैधों नंद जसुधा की जोद चहुँ कोर माँहि। भरिबे को विविध विनोद को विलास है।
ग्वाल कवि कैधों पीन पंगत प्रवीनन की। तामें प्रेम पूरिबे को परम प्रकास है।
कैधों ब्रजनाथ नाथ श्रीबिहारी लालजू को। विदित विचित्र होत मंद मंद हास है॥४७॥

कवित्त

कैधों शोक शंका गास क्रोध.औ उदासी आरि। ताके मारिबे को मंजु कारन बुलंद है।
कैधों चित्त चूर की करन हार चिंता ताहि। तुरत उचाटिबे को इलम अमंद है।
ग्वाल कवि कैधों मात जसुदा औ नंद जू के। मन करखन को सघन फाँस फंद है।
कैधों बनितान के वसीकरन करिबे कों। बाँके श्री बिहारी जू को हास मंद मंद है॥ ४८॥

कवित्त

मासा है न एको जाके चिंता चहुँ औरन में। नंद श्रीजसोमति के दिल को दिलासा है।
लासा है सनेह कौन छूटे चेप चपकन। त्रास तूल तुंगन को करत निरासा है।
रासा है रतन रस रंगन को ग्वाल कवि। रिस सी बटेर के विनासिबे को वासा है।
वासा है विनोद को मवासा है सुगंधन कों। हाँसा है गुविंद को त्रिलोक को तमासा है ४९

नासिका वर्णन

केते कवि कीरसी कहत कमनीय[1] याकों। केते कहे छवि तिल फूल के वदन की।
दोऊ में न कोऊ तूल एक वंक सूल सम। दूजी में न गंध है मलिंद मरदन की।
ग्वाल कवि यह तो सुढार औ सुगंध कोस। को राके बखान शोभ शोभा के सदन की।
नीलकंज कलिकासी नित ही निहारीयत। नासिका न मूँदनी की नंद के नंदन की ५०।

कपोल वर्णन

कैधों नीलमनि के सुमंडल बनाय राखे। कैधों दल दीखे नील कमल विशाल के।
कैधों गल गेहूँआ[2] धरे है लील रेसम के। कैधों जग दृष्टि थिरा चौंतरे सुढाल के।
ग्वालकवि कैधों प्रेम हेम की कसौटी सोहे। कैधों न्यारे ब न्यारे है कि नील ताल के।
कैधों स्याम घन के अदोल है अबोल ठौना। कैधों अनमोल है कपोल नंदलाल के॥५१॥

कर्ण (कान) वर्णन

कैधों श्री महीप मन जू के चोबदार चारु। शब्द शिरदारन की अर्ज के करन है।
कैधों शंबरारि के सरोज नील सरसाये। तामे गज पुञ्जन को पहुँचे करन है।
ग्वाल कवि कैधों तपसीन की गुफा के द्वार। मंजु महारावदार कलित करन है।
कैधों कल कुण्डल की कांति के करन वारे। नंद के दुलारे कान्ह रावरे करन है॥५२॥

कर्ण भूषन णर्णन

शेष सनकादिक महेस व्यास देव जू लौं। गावत अनंत गुन ग्यान के पसारे पें।
विधि के विचार हू में माया है अपार जाकी। कोस के सम्हार चढ़ि मोह अनियारे पें।
ग्वाल कवि कुण्डल जड़ाऊ जोर कानन में। जेवदे रहे हैं जसुमति के दुलारे पें।
मानौ नील कंज की कलीन पें विराजे आय। साजे जुग रूप सूर सैल के अखारे पें।५३।

मूलपाठ :—१. कमनिय, २. गेहुँआ।

नेत्र वर्णन

मीन मृग खंजन खिस्यान भरे मैन बान। अधिक गिलान भरे कंज फल ताल के।
राधिका छबीली की छहर छवि छाक भरे। छैलताके छोर भरे भरे छबि जाल के।
ग्वाल कवि आन भरे सान भरे तान भरे। कछु अलसान भरे भरेमान भाल के।
लाज भरे लाग भरे लोभ भरे शोभ भरे। लाली भरे लाड़ भरे लोचन हैं लाल के॥ ५४॥

भृकुटी वर्णन

कैधों रमनीय रूप ऊपर वकारी वेस। कीनी महाराज कामदेव बलवंत की।
कैधों परिपूरन पियूष की पियालिन पें। बैठे अहिनंद करि वक्रताइ कंत की।
ग्वाल कवि कैधों द्रग द्वारे है बहारदार। तोप महराव स्याम मीनातें लसंत की।
कैधों सताके है नतेरा है होत जोहे रासी। सोहे मन मोहे वक्र भोहें भगवंत की॥ ५५॥

भाल वर्णन

पाटी नीलमनि की सी विधि ने बनाई बेस। तापें इरिवरत्व रेख जगमग्यो जाल है।
अंगराज चंदन की खौरि को अधार अंग। सौरभ अपार ही को तखत विशाल है।
ग्वाल कवि आकृति अनूपम लखाई परे। मिलत कछूक शशि अरध रसाल है।
भूरि भाल भाल को सु भूपति भलाई भर्‌यो। भान को भवन भगवंत जू को भाल है॥ ५६॥

भाल खौरि वर्णन

कैधों चारु चामीकर तारतें खचित एक। पाटी नीलमनि की बनाई विधि नाग पर।
कैधों बेल अमर अरुझि रही जालवारी। इन्दीवर दलभज मृदुता के बाग पर।
ग्वाल कवि कैधों वृषभान नंदनी को दुति। लपटि रही है लखि स्यामता अदाग पर।
कैधों अंग राग की रही है जाग खौरी खासी। रसिक गुविंदजू तिहारे भाल भाग पर॥ ५७॥

मुख मंडल वर्णन

जाके आगे आइबे कों मुकुर मुकुर जाय। भयो बेउकर पातें सह्यो दारा दुःख को।
रूप हू को रूप के तो रूपै जो रति को भरि। मंडल अनूप है अनंत अति सुख को।
ग्वाल कवि मंजुल मवासो मंत्र मोहिवे को। जंत्र जग जोहिवे कों मालिक वपुष को।
कंजन की आकर कहा करि सकेगी सरि। चाकर सो चन्द व्रजचन्द तेरे मुख को॥ ५८॥

केश वर्णन

कैधों रूप तात पें सिवाल जाल जोइयत। आसित विशाल कामदेव जू के प्यारे है।
कैधों मखतूल नील तारन के पुञ्ज पूरे। कोमल अमल नील कंजहूँ ते भारे है।
ग्वाल कवि कैधों चारु चौर गुञ्ज लख वारे। भौर से भुंकातें अपूरव निहारे है।
कैधों शोभ सौरभ सरवारे नेह डारे वारे। प्यारे श्री ब्रजेश जू के केश घुघरारे है॥ ५९॥

मोर मुकुट वर्णन

माथे मनमोहन के मुकुट विराजे गोल। जामें गति लोलजा लगी कनीन कनिकी।
बीच बीच हारा के जड़ाऊ की तमक जैसी। तैसी चारु चमक चमके लाल मनिकी।
ग्वाल कवि तापे मोर पंख की गीरद कोर। जोर छवि हरित असित झलकनिकी।
मानो शशि सूर दोउ करत सलाह बैठे। ताते तहाँ चारो ओर चोकी बुध शनि की॥ ६०॥

गति वर्णन

माथे पे मुकुट मोर पंख को विराजे गोल। लोल कल कुण्डल लसनि मनि लाल की।
पौन के परस पीत पट की उड़नि जैसी। तैसी होत हिलन हिये पे बनमाल की।
ग्वाल कवि ग्वालन के संग में गऊन पाछे। गो रज गरक आछे अलक रसाल की।
इंसन की दावनि सतावनि गयंद वृंद। मंद मंद आवति अनूप नंदलाल की।६१।

सवैया

गल बाँहि सखान के डारि गरे करें मीठि महा बतरावनी री।
अलके चिकनी झलकें रजमें ललके सुरभीनकी धावनि री।
कवि ग्वाल फिरावन फूल छरी फिर फाँदनि में सतरावनि री।
उर में अब आनि अडी अलसी अलबेली गुविंद की आवनि री॥ ६२॥

पीतपट वर्णन

कैधों पुखराज पुञ्ज सोहे शैल नीलम के। कैधों चपला चमके स्याम घन पें।
कैधों रस अद्भुत लपेट्यो रसराज जूसों। कैधों फूल चंपक धरे तमाल घन पें।
ग्वाल कवि राजे सुर गुढ ले मदन कैधों। कैधों हेम वर्ष लाजवर्त्त की शिलन पें।
कैधों दुति राधे को सरकि परी स्याम तामें। कैधों पीतपट हे सलोने स्याम तन पें।६३।

संपूर्ण मूर्ति वर्णन

पद कोकनद औ कुलफ कंज कोश सें है। जंघ कदली सो लंक केहरी विसाल सो।
उदर सु पान नाभि कूप सी गंभीर गुरु। उर नवनीत पानि पल्लव रसाल सो।
ग्वाल कवि भुज लोल लतिका लहर दार। कंठ कल कंबु मुख नीलकंठ जाल सो।
केश स्याम चौर गौन गज सो सुगंध वारो। मुकुट शशी सो सब तन है तमाल सो।६४।

ग्रंथ पूरनार्थ कवि वचन

सेवत नरन आश भरननि वित्त नित्त। सेवे कर्मो न जाहि जो रची सभा सुरेश की।
तिमिर अग्यान को विनास्यो चहे दीपन तें। ध्यावे क्यों न जाहि जाते दुति है दिनेश की।
ग्वाल कवि जाके गुन गन को कहे सो कौन। मौन वृत्ति धारि व्यास हारी मति रोश की।
त्यागी जग विषमन शिख शिख शिखभरी। लिख दिख नखशिख छवि ऋषिकेश की ६५

इति श्री कृष्णचंद्रजू के नखशिख पूर्ण

अथ श्री गोपी पचीसी ग्रंथ प्रारंभ

गोपी वचन उद्धव प्रति

कवित्त

जैसों कान्ह जान तैसौ उद्धव सुजान आयौ। है तो पाहुने सेपर प्रानन निकारे लेत।
लाख वेर अँजन अंजाये इन हाथन तें। तिनकों निरंजन कहत हाय झूठ धारें लेत।
ग्वाल कवि हाल ही तमालन में तालन में। ख्यालन में खेले है कलोल किलकारे लेत।
हया न परचे री पर चेरी संग परचेरी। जोग परचे इहाँ भेज परचे हमारे लेत।१।

कवित्त

आपनी ही सूरत को साजिकै सिंगार सब। भेज्यो सखा सेठ वाकूमंत्र अति भारा दै।
जानी हो कि मेटि है अंदेस दै सँदेश यह। लायो सो आदेश के विचारन नगारा दै।
ग्वाल कवि कैसे व्रज वनिता बचेगी हाय। रचेगी उपाय कौन द्वारनि किवारा दै।
चौगुनी दवागिन तें देह विरहागिन ही। सोतौ करी सौ गुनी ये जोग ब्रतधारा दै।२।

कवित्त

ऊधो तेरे पार ऐसें ह्वै है रिझवार जोपें। जानती विचार तोपें सूयो होन जायबो।
करती उपाय भाँति भाँति के सुभाय भाय। केती वही बात हुती वाकों अटकायबो।
ग्वाल कवि पीठन पे एक एक हाँडी बाँधि। गीके मनमोहनकों करती रिझाइबो।
भाते कहूँ कोऊ बहरूपिया तलास करि। सीख लेती हम हू सब कूबर बनाइबो।३।

कवित्त

कैसे के कन्हाई की बखाने चतुराई काऊ। भेजे जो मिठाई तो कभू न भारि है गरो।
सारी जरतारी आँगी ओढनी किनारी वारी। धारि धारि फारिहै न तन रहि है भरो।
ग्वाल कवि भूषन हू भेजिहै तो दृष्टि जैहैं। हमें उर धारि के विचार है कियो खरो।
भेजा मथुरातें नई जोग की सौगात सखी। खातिर जमासों खाउ पहिरो खुसी करो।४।

कवित्त

गोपिन के काज जोग साज दै पठायौ ऊधौ। आवत न लाज ढीठ प्रानन पियौ चहै।
बरी हा हा वियोग विरहागिन-भभूकन में। तापर सलूक लूक लाखन दियौ चहै।
ग्वाल कवि कौन कान्हर की कुटिलाई कहै। कटे पें लगावें नौन काटन हियौ चहै।
कंस की जो चेरी ताकौ चेला भयौ हाय दैया। हमें भेजि सेली चेली आपनी कियौ चहै।५।

कवित्त

कूबरी कसाइन के रस की रसाइन में। शोभ सरसाइन में रहत खड़ा भयौ।
प्रीति ब्रज बालन की नित उठी ख्यालन की। हंसनि रसालन की भूलि कैं छडा भयौ।
ग्वाल कवि ऊधौ तुहु बिगर्‌यो कुसंग परि। स्याम तो लबार अरु निलज बड़ा भयौ।
आप करे जारी हमें जोग जरतारी भेजी। देइ कहा गारी भलौ चीकनो घड़ा भयौ।६।

कवित्त

किये है करार सो विसारि दिये दगादार। नंद कै कुमार संग को संजोगिनी बने।
कौन मुख लेके तोहि ऊद्धव पठायो इहाँ। कैसे कही वाने हाय लंक लोंगिनी बने।
ग्वाल कवि यातें इक बात तू हमारो सुनि। चुनिके कही है यह तोय भोगिनी बने।
कूबरी को कूब काटि लाय दे सिताबी हमें। टोपी करें ताकी तब गोपो जोगिनी बने।७।

कवित्त

कहाँ गई अकल तिहारी अब ही तें ऊधौ। सूधो पंथ छाँड़ि टेढ़ौ पंथ क्यों गहत है।
स्याम जाको रंग रूप काम तें करोर गुनो। नैन सैन बैनहू सुधा में उलहत है।
ग्वाल कवि जाको निराकार तूँ बतावत है। कैसे हम माने निरो झूठ ही लहत है।
जूठन की खानहारी कुविजा नकारी वह। करी घरवारी तऊ ब्रह्म तू कहत है॥८॥

कवित्त

रूप में न कसर न राग में कसर इहाँ। लाग में न कसर लाजहू की घेरी है।
रंग में न कसर न कसर उमंग में है। प्रन के प्रसंग हू में परम घनेरी है।
ग्वाल कवि हाव में न भाव में कसर इहाँ। चाव में न कसर चलाँक बहुतेरी है।
तीन ही कसर ऊधो काहू के न कूब इहाँ। नाइन न जात अरु काहूकी न चेरी है॥९॥

कवित्त

कौन चतुराई करि जाइके कन्हाई उहाँ। कूबरी लुगाई करी और तो झुरो लगी।
देवकी की सेवकीन सेवकी पिता की करी। नाइन सुता की भली गाँठ सी धुरी लगी।
ग्वाल कवि ऊधो जोग पतियाँ की बतियाँ ये। बिछुरी हुति न विस बुझई धुरी लगी।
लोक लाज लोपी प्रीत रोपी देह ओपी। तऊ हम गोपी हाय स्याम को बुरी लगी १०

कवित्त

कौन दिन कान्ह ने चढ़ाये प्रान ऊरध को। कियो कब इंद्रिन को सोधन सुधार है।
कौन से सघन बन बैठिकै समाधि साधी। कौन से गुरु तें शिख्यो जोग को विचार है।
ग्वाल कवि ऊधो जाहि निरगुन कहे है तुं। सो तो वह औगुन को अखिल अगार है।
आवै को करार कियो आयो न सवार महा। मामा दियो मार बन्यो कूबरी को पार है ११

सवैया

प्रीत कुलीनन सों निबहै, अकुलीन की प्रीति में अंत उदासी।
खेलत खेल गयो अब हीं हमें, जोग पढ़ाय बन्यो अविनासी।
त्यों कवि ग्वाल विरंचि विचारि कै, जोरि जुराइ दई असि खासी।
जेसोई नन्द को बालक कान्ह सु तैसीय कूबरी कंस की दासी॥ १२॥

सवैया

नन्द को बालक हौ पहिले फिर, कंस की चेरी को चेरो भयो।
ताको परेखो कहा करियें भट, लाखन वार को हेरौ भयो।
त्यों कवि ग्वाल करैं तो कहा, फिर साँपिन सौति को घेरो भयो।
नेह छली मनमोहन हमकों अली, भूतको फेरो भयो॥ १३॥

सवैया

ऊधव एक सँदैसो यहै, कहि देउ तो बात सयानि करो।
कूबरी कौं ठकुरानी करी, सो भले अपनी मनमानि करो।
पै कवि ग्वाल मुनासिब और हू, सोऊ जरूर प्रमानि करो।
लांगडी लूलिन आँधरि कानिन, रानिन में पटरानी करो॥ १४॥

सवैया

राधिका के मिलेबे कौं गुविन्द, कितेक दिनान लौं देत हौं तासी।
प्रीत करी रस रीति करी, भरी नाँहि में हाँ अरु हो हिये नासी।
यों कवि ग्वाल विलास बढ़ाय कै, छाँड़ि गयौ सिगरी गुन गाँसी।
दासी की फाँसी फँसाइ गले, अविनासी बन्यो यह आवत हाँसी॥ १५॥

सवैया

तोरि के प्रीत गयो मुख मोरि कै, कौन सो नातो तुम्हारो रह्यो।
मोहन से छलिया कौं भलो अरे, उद्धव तू छलकारो रह्यो।
और कहा कहिये कवि ग्वाल जु, नन्दहु ते वह न्यारो रह्यौ।
चेरी को नेह नगारो बज्यो, अब काहे को प्यारो हमारो रह्यो॥ १६॥

सवैया

ले गयो है जब तैं अकरूर, अरी तब तैं बहुरंगी भयो।
प्रीत तजी सब गोपिन तैं, इकली कुबिजा को इकंगी भयो।
यों कवि ग्वाल ही भाल लिखी, हुतौ मीत सही पें कुढंगी भयो।
भाय न बाप को अंगी भयो, सौ हमारो कहो कब संगी भयो॥ १७॥

अथ श्रीकृष्ण प्रति गोपिन की पत्री

सवैया

ब्रजनाथ हुते तव साथ हुते, मथुरापति नाथ कहावति ह्वै हई।
कछु और कै और भये सब तौर, रुखाई लई रसिया ह्वै दई।
कवि ग्वाल अंचभो यही इक है भला और तो बात भई सो भई।
सुधि कैलन की भुज मेलन की, वह खेलन की कहाँ भूलि गई॥ १८॥

सवैया

रास कियो यों विलास कियो, रहे पास हुलास की राशि ले लूटी।
आदिन तैं अकरूर लिवाइगो, तादिन तैं गति और ही जूटी।
त्यों कवि ग्वाल कलंकित कूबरी, कान लगे तै सबै मति टूटी।
वाहरे वाहरे गुविंद छली, भली जोग की भेजि दई विष बूटी॥ १९॥

कवित्त

माखन के चाखन कों लाखन उपाय कीने, साखन तुम्हारी तऊ द्वार पें अरे रहो।
चोरि चोरि दही लियो छोरि छोरि मही पियो, कही अनक ही सब सही पें खरे रहो।
ग्वाल कवि ऐसे हाल हाल ही के भूलि गये, भेज्यो जोग सूल नेक लाज तौ धरे रहो।
मानो कहा रस की रसाइन गुपाल तुम, कूबरी कसाइन के पाइन परे रहौ। २०।

कवित्त

तजि ब्रजबालन कों मथुरा गयो तो गयो, उहाँ जाय कौन सो सुजस जग छायो है।
करतो विवाह जात पाँत की कुमारी संग, तऊ हम जानती सुपंथ में सिधायो है।
ग्वाल कवि जो पर सुरति ही पें रीझ हुती, तोपें भली जातकी न नारिपें लुभायो है।
कूबरी कलंकिन वा अंकिन कों अंक लाय, कान्ह भलो कुलको कलंकतें लगायो है॥ २१॥

कवित्त

एरे निरदई तेरी सुधि बुधि कौने लई, गई कहाँ प्रीत रीत पाछली जु खेली है।
जोग दै पठायो ऊधौ आयो औ सुनायो हमें, सब समुझायो भलो तेरो यह मेली है।
ग्वाल कवि हम तो वियोग जोग धार चुकी, तोहीं कों मुबारक है, ये जोग सेली है।
कूबरी के कान फाड़ि, माथो मूँड़ि, राख लाय, चेला बनो ताके, या बनाओ ताहि चेली है॥ २२॥

कवित्त

रसिक नरेश कहवाय कैं कन्हैया लाल, इतनो कठौर हियो काहे को सु कियो तें।
कहाँ गई तेरी वह मंद मुसिक्यान मीठी, कहाँ गयो मोह मेल जाको मजा पियो तें।
ग्वाल कवि हमकों भरोसों यह होत ऐसो, जैसो छल कौतुक करोर जोर लियो तें।
जानी ही बड़े भये, बढ़े है बहु प्रीतिपुञ्ज, सो तो रति पाछली हू ख्याल खोय दी यों तें॥ २३॥

अथ पुनः गोपी बचन ऊधौ प्रति

कवित्त

कहिबें कों हमतो वियोगिनी विदित नित, सरस संजोग हूते सुमति सुधारी है।
ऊधौ तोहि यहाँ इहाँ कहूँ न लखाई पर्‌यो, साँचे ही अलख तोहि भयो गिरधारी है।
ग्वाल कवि हयाँ तो वही जाम जाम धाम धाम, मूरति मनोहर न नेक होत न्यारी है।
कानन में, आनन में, प्रानन में, आँखिन में, अंगन में रोम रोम रसिक बिहारी है।२४।

अथ ऊधौ बचन श्रीकृष्ण सो

कवित्त

रावरें कहेंतें हौं गयो हो ब्रजबालन पें, देखते ही मोहि कियो आदर अपारा है।
कहतें तिहारी बात गात तें भभूके उठी, परत बारूद की जमात ज्यों अंगारा है।
ग्वाल कवि बहे लागी लपट दवागिन सी, दौर्‌यों मैं तहाँ तें तोऊ झुरसो दुबारा है।
गोपी विरहागिन में जोग उड़ि गयो ऐसें, जैसें उड़िजात परे पावक में पारा है ॥२५॥

इति श्री गोपी पचीसी संपूर्ण

अथ श्री राधाष्टक प्रारम्भ

कवित्त

नारद विशारद के सरद की हित सिद्धि, शारद शशी में जाकी नख दुति भासनी।
शेष सनकादि अविवाद गुन नाद गावै, शिव की समाधि हिय कमल विकासनी।
ग्वाल कवि कृष्ण महराज के सुखों कै साज, सोकी सिरताज रही राजरूप रासनी।
विधि हू की बाधा हरे विरुद्ध हू राधा करें, करुना अगाधा राधा बृन्दावन वासिनी।१।

कवित्त

राधा महारानी मनि मन्दिर विराजमान, मुकर मयंक से जहाँ जड़ाव कारी में।
बादले बनाव के बिछौने बिछे बेसुमार, बीजुरी बिरी बनाय देत बलिहारी में।
ग्वाल कवि सुमन सुगंधित केसर ले ले, सची सुकुमार सो सुंघाये शोभ भारी में।
दारा देवतान की दिमाकदार दिस दिस, द्वार द्वार दौरि फिरे खिदमतदारी में।२।

कवित्त

मानिक तें मोतिन तें मंडित मुकेसनते। मृदु मसलै दंता की उपमा मिले नहीं।
तापर विराजमान राधा मह महरानी। तहाँ सुरतिय तुंग दौरत ढिले नहीं।
ग्वाल कवि कहे चौंर चन्दरानी लिये रहे। सूर जानी छत्र लैं बिछारी तोहि ले नहीं।
चौमुखा कहा है जहाँ सौमुखा सहस्र मुखा। लालमुखा विधि हू को मुजरा मिले नहीं ३।

कवित्त

चंदन कपूर अतर मसाले करि। मानिक की गच खुसबोये रकती रहै।
हीरन हजारन शिलान की दिवाले दीह। तामे प्रतिबिंबन की राशी लगती रहे।
ग्वाल कवि पन्नन के खम्भे नीलमनि छज। मत्त गज मोतिन की प्रभा पगती रहै।
जगा जोति जाहर जवाहर जलूसन में। राधा जगदीसुरी की जोति जगती रहै।४।

कवित्त

शेष औ दिनेश तारकेश अलकेश वेश। सहित सुरेश आगे दौर में ढल्यो करे।
विधि विधि वेदन सों विरद सुनावे विधि। अप्छरा अनन्त नाच नाच उछल्यो करे।
ग्वाल कवि चौरें छत्र पानदान आदि ले ले। गोविन के गोरे जूथ जूथ सों हल्यो करे।
तैंतीस करोड़ देवतान की शोभा सानी सदा। राधा महरानी की जलेब में चल्यो करे। ५।

कवित्त

राधिका दरिद्र दुख दीरघ दलन कीजें। दासन पें दीनन पें दया हे अगाधिका।
आधिका रहे न खोज जा के नाम ओज आगे। रोज करि भागें जमराज के उपाधिका।
राधिका सकल सुख कान्ह प्रान प्रानिका है। ग्वाल कवि कहे संभुजाही के समाधिका।
राधिका विविध विधि बाधा बिबुधान की सु। वृंदावन विदित विलासनी श्रीराधिका ६।

कवित्त

रामा अभिराम विष्णुवामा वाम वामा स्यामा। कामा अनुसार रूप नामा बहु धारनी।
गंगा गिरा जमुना में भ्रमुना विचारो कोऊ। तिनही के तेज की त्रिधार है प्रचारनी।
ग्वाल कवि माया मोह माया महामाया मंजु। गाया करे वेद आदि शक्ति जगतारनी।
ईश की अराधा रूप कान्ह साधा वही। राधा महरानी वृंदा विपिन विहारनी ७।

कवित्त

नागन की नरन की बाधा हरे वृंदारक। वृंदारक बाधा हरे वासव विधानी है।
वासव की बाधा विधि विधि की विरोध भरी। वाधत रहत विधि वेद के बखानी है।
ग्वाल कवि कहत विविध बाधा विधि हू की। वाधत रहत सदा सम्भु गुरु ग्यानी है।
सम्भुहू की बाधा आधा पल में मिटावे[1] कृष्ण। कृष्ण की बाधा हरे राधा महरानी है ८।

इति श्री राधाष्टकम्

मूलपाठ—१ मीटावे।

अथ श्री कृष्णाष्टक

कवित्त

नील मसी जिनके बदन पर जेवदारी । सरुसा तमाम कद आलम पसंद है।
एक दरत्त बीच छड़ी गुलौकी गमकदार । बंसरी हु दरत्तगोया जिगरौं का फंद है ।
ग्वाल कवि यारों को खिलाता आप खेलता है । जरै मिली जुल्फगोया मार मुनि का वंद है।
चार सर वाले से कारिदें है जिसी के वही । वंदें पें मेहरबान नजर बुलंद है । १ ।

कवित्त

जरै की जलूसन में लोटता हमेंसा रहै । सीमजर गौंहर का आप वक संद है ।
जिसके ख्याल में खलफ गिर्फतार हुआ । गिर्फतार वही माके दस्तफंद है ।
ग्वाल कवि जिसने चलाया आफताब तिसें । गोपियाँ सिखाती रफतार हरचंद है ।
चार सरवाले से कारिंदे है जिसीके वही । वंदे पे मेहरबान नजर बुलंद है । २ ।

कवित्त

सुरखी निहायत कदम जिसके की देख । कीजियें निसार इस्क पेंचन का फंद है ।
गोल महताब सें नाखून जिसके है दस । वक्त हर तौर का अजाइब पसंद है ।
ग्वाल कवि जो कि नहिं आता है तसौअर में । अरमें वहीज सुधा की दुआ गोद में सवंद है
चार सरवाले से कारिदें है जिसीके वही । बंदे पे मेहरवान नजर-बुलंद है । ३ ।

कवित्त

यार जो सफेद है हजार सरवाला आला । जिसका पलंग करि सोता सौख वंद है ।
जिस्फे तँई खोफ क्या था काली नाथ ने पैमारो । वह तौ खिलौना सा बिलाया जी पसंद है।
ग्वाल कवि जिसे पूतना का दूध पीना क्या था । जहरी कमाल सो कि जिस्का हुक्म बंद है,,
चार सरवाले से कारिंदे है जिसीके वही । वंदे पें मेहरबान नजर बुलंद है ॥ ४ ॥

कवित्त

सरपें मुकुट मोर पर का कपाल खुला । कानों में जमुर्रंद जडाव जेव बंद है ।
गजरें गुलौं के गले गौंहर अमेज तेज । रंगा मेज तन पर झलकति चंद है ।
ग्वाल कवि जिसके जिगर पर दौलत का । और भ्रम कदमौंका वक्त नूरबंद है ।
चार सरवाले से कारिंदे है जिसीके वही । वंदे पें मेहरबान नजर बुलंद है ॥ ५ ॥

कवित्त

चाहे तो पलक में खतम कर देवे जहाँ। चाहे तो बनावे लाख करे कौन बंद है।
जिसका मानिंद और दूसरा न कोई कही। तिसकी मिसाल तिसें देवे जो पसंद है।
ग्वाल कवि जिस्से दुष्मनाई क्या करेगा कंस। अज्ल जिसके हाजिर हमेसा हुक्म बंद है।
चार सरवाले से कारिंदे है जिसी के वही। बंदे पें मेहरबान नजर बुलंद है। ६।

कवित्त

लाखौ मन सीरनी करी थी ब्रजवासियों ने। कोह पे न छोड़ा कुछ अजब खुरंद है।
दुपत के दुस्तर की शरम हर सूरत सें। राखी आमखास में खयालु खुसवंद है।
ग्वाल कवि चावल सुदामा के नकल कर। महल बनाये सीप जड़ाऊसंद है।
चार सरवाले से कारिंदे है जिसीके वही। वंदे पें मेहरबान नजर बुलंद है। ७।

कवित्त

दुस्मनों को मारता मुरोदों को सँभारता है। खल्क से निकारे ऐसी नेकी पसंद है।
साफ दिल होंके इनसाफ करता जो याद। उसे भिस्त देवे औ कसूर बकसंद है।
ग्वाल कवि जिसके बयान करने के तई। कै सर हजार मार तौ भी फड़ा फंद है।
चार सरवाले से कारिंदे है जिसीके वही। वंदे पे मेहरबान नजर बुलंद है। ८।

इति श्री कृष्णाष्टक

अथ रामाष्टक

कवित्त

साधन की संगत न पंगत में बैठे कभू। रंगत तियान की विलोकी सवरद की।
किये कबहून छाप जाय आप जोग तप। ताप में तपत पाप पूरन फरद की।
ग्वाल कवि कारन रिझैबे के नरको किये। कौन की सियारस सुनावते दरद की।
जैसो भलो तसो पै न मिलतो तुम्हें जो राम। तौ पें मिटि जाती साख रावरे विरद की।१।

कवित्त

कोऊ कछू माँगे अनुरागे जिय लागे जहाँ। रूप रंग रागे दिनरैन रस पीजे जी।
चंचला सी बाला धन जोबन दुशाला आला। चारु चित्र शाला आयु बाढ़े बहु जीजेजी।
ग्वाल कवि अरजी हमारी है विरंचि यह। मरजी विचार कहूँ दूसरी न रीजें जी।
राम अवधेश के गुलाम को तिलाम कोऊ। ताहू के गुलाम को तिलाम कर दीजें जी २।

कवित्त

पूरन पियूख की प्याला भर पीजियें जो। जाने या अजाने वह अमर करेईगी।
देवोदान मान सों अजानन कों जानन कों। कीरति विचित्र देश देशन ढरेईगी।
ग्वाल कवि पातें वाँते विविध विचारो वीन। ना ते पछताइ तेर सुमति लरेईगी।
राम रूप साचें रचि काँचे वाचैगो न यार। या मरे मुकति परेईगी। ३।

कवित्त

कीजो कछु एते में विरंचि वर वानिक सों। सुमन करे तो रामबाग सुख कंद को।
कोमनद चाँहें करि सरजू नदी के तीर। कोक करियो चाहे करि सरजू सु छंद को।
ग्वाल कवि आशक करे तो रामरूप ही को। भूषन करे तो राम अंगन अमंद को।
बंदर करे तो भले अवधिपुरी को करि। धाम अवधेश को गुलाम रामचंद को ४।

कवित्त

गनिका अधम पाय गनिकान जाकी मिलै। ताहि पल एक में मुकति दीजियत है।
बालमीक नामे विपरीत के कलामे रट्यो। ताहि निज धामें अपनाइ लीजियत है।
ग्वाल कवि कौतुक विचित्र गति होत जब। पाहन शिला पें पद नेक छीजियत है।
वाते सुनि लाखें मन माते भयो भातेंभाँत। यातें राम रावरोई पाछो कीजियत है ५।

कवित्त

गीधे गीध तारिके सुतारिकै उतारिकै जू। धारिकैं हिये में निज बात जटि जायगी।
तारिकें अवधि करी अवधि सुतारिबे की। विपति विदारिबे की फाँस कटि जायगी।
ग्वाल कवि सहज न तारिबो मारौ गिनौ। कठिन परेंगी पाप पाँति पढ़ि जायगी।
यातें जो न तारिहों तिहारी सौह रघुनाथ। अधम उधारिवे कों साख घटि जायगी ६।

कवित्त

जोइ जोइ जायन को भायन भयेई रहें। लोयन लगालग में वयुष बिसारेंई।
लागे जोग जप में न तप अनुरागें कभू। लागे रूप अप में सु पैरन आ परेंई।
ग्वाल कवि यातें तुम संकित न हूँजे नाथ। नाम राखिबे है तो परेगो पेज पारेंई।
टारे ना बनेगी अब अरेना बनेगी बात। धारेई बनेगी जी बनेगी आज तारेई। ७।

कवित्त

वीरता लावेंगे रघुवीर जू तिहारी अब। कैसे कृपाकारी औ कटैया भवफंद हो।
तोरि डारि मैंने तो मरजादा वादा बिन। तुम तो मरजादा पुरुषोत्तम सु छंद हो।
ग्वाल कवि परम पतित प्रन पार्‌यो में तो। पावन पतित तुव नाम सुखकंद हो।
मैं तो दीनराज तुम दीनानाथ रघुनाथ। मैं तो दुतिमंद तुम रामचंद चंद हो। ८।

इति श्री रामाष्टक

अथ गंगा स्तुति

कवित्त

करन दया की इंदिरा की है भरन वारी। पूर फल करन गया की दुख हर है।
वारन करत संभु शैलजा करत नीके। सहज सुझावे रमापति को शहर है।
ग्वाल कवि कहे जम जाल कों निहाल करैं। अमित विशाल गुन गुन की गहर है।
टारन कलेश की सुढारन सुजस पुञ्ज। कारन लहर सुरसरि की लहर है। १।

कवित्त

विग्रह अनुग्रह दुहूँन के करन वे तो। आप बिन विग्रह अनुग्रह ही भरि सकै।
पाप अनगन जन मन के हरत आप। वे तो जन मन हू कैं पापको न हरि सकै।
ग्वाल कवि तेरे नाम लिये वामदेव होत। उन्हें जपि हारै तऊ ध्यान में न अरि सकै।
आपकौ सहज सुरसरि पर तेरी। सुरसरि ह्वै कियो पे न करि सकै॥ २॥

कवित्त

जाकी तमा सबकों अनूपमा रमा है वही। झमालै गुलाब के झमावै पै लगत है।
काली विषझाली के फनालीनें परस करि। भये अभयाली अरु अबलों सजत है।
ग्वाल कवि कहै प्रहलाद नारदादि सब। धरि धरि ध्यान सरवोपरि रजत है।
मेरे जान गंगे! तुम प्रगटी तहाँ तें तातें। मुख्य करि माधव के पद ही पुजत है। ३।

कवित्त

देवधुनि भैया के रिझैया को चरित्र यहै। यामें जै अन्हैया खैया भंगभोग पेंहै रे।
अंबर छिनैया है दिगंबर करैया और। छैया है वघंवर की भस्म सैया दैहै रे।
ग्वाल कवि थैया थैया भूतन चैया होत। वाह वाह बुलैया भूतनाथ मुख ऐहै रे।
बैल पें धरैया करे शैल पें चढ़ैया फेर। फेल को बकैया भैया हम तोन ह्वैहै रे।४।

कवित्त

शीतल सुधासी है सुधारी त्यों सनित सुचि। सुंदर सुहावनी सुखेनी है महेश को।
काटत कलुष दुःख सनमुख आवत ही। वयुष बढ़ावे तेज रुख के प्रवेश को।
ग्वाल कवि गालिब गजब जमदूतन पें। अजब दिवाने भये तारे देख देश को।
लहर तिहारी हरिन हर निहारी गंग। कहर कलेश कौं है जहर जमेश को॥ ५॥

कवित्त

देवधुनि धारा में सनान करिबो हैं तुम्हें। तोपें द्रढ़ न कीजे मत आपकी सुमति को।
आय है न कोऊ फेर रच्छक तिहारो तहाँ। तक्षक प्रतक्ष पूरि जैहै अंग असि को।
ग्वाल कवि गिरिजा विराजि है सु आधे अंग। भंग भोग पेहै और चढ़ैहै बेल जति को।
पहिले मिलत मृगखाल को खिलत फेर। बकसे सिताबही किताब भूतपति को।६।

कवित्त

नग करि आप ही सु आये संग होत शीश। ईश पद देकै भंग भोग शुभ साज सों।
लिपटे भुजंग रंग सितके भले ई भाव। लोचन सुरंग रंगे असम समाज सौं।
ग्वाल कवि गिरजा अर्धंग रहे मौह भ्रंग। शृंगपे जु शैल के करावे शैल राजसों।
देवि कैं तरंग रंग रंग की उमंग गंग। अंग करे उज्जल सुजंग जमराज सों। ७।

कवित्त

कौतुक तिहारे में निहारे भारे देव धुनि। धुनि धुनि शीशदोर दूत भये रोक में।
डोर चित्रगुप्त ने हिसाब के किताब गंज। हारे हम हारे यों पुकारे जमलोक में।
ग्वाल कवि लोचन दरारे के जमेश बेश। पापिन बँधाये औ डराये शोक ओक में।
बंद में उतारे लगे तोर पें सितारे जगे। तोर नाम लेत जिते तारे नभ लोक में। ८।

कवित्त

कैधों सत्वगुन की सत्ता कोई प्रचार चारु। कैधौ चारु चंद्रक के चंद्रिका चलाका है।
कैधों छीर सागर की धार है विहार जुत। कैधो संभु रजत पहार ही को नाका है।
ग्वाल कवि कैधों सत्य ही की सत्य सत्ता यह। कैधों श्री भगीरथ के जसको इलाका है।
कैधों धर्म कर्म के प्रताप की पताका पर। कैधों सुरसरि के प्रवाह की सलाका है। ९।

कवित्त

तौमें आइ अंगजे पखारे गंग भागीरथी। तिनके करत इक रूप मोहि दीस है।
केती गंग तो में औ तरंग रंग की है। केती अरधंग और केते गनाधीश है।
ग्वाल कवि कहे चारु शैलन की शैल केती। बैलन की फैल औ चुरेल औ खवीश है।
केतक गिरीश औ फनोश विश वीसौ वीस। शीश है कितेक औ कितेक रजनीश है।१०।

कवित्त

कूल अनु कूलन में पुञ्ज मंजु मूलन में। फबि रही फूलन में सूलन के झौर में।
रेत के पहारन में हारन में चारो और। खारन में जरन में अंबन के मौर में
ग्वाल कवि कहे फैन फुवन प्रचारन में। देव धुनि धारन उछारन में और में।
दासीसी मुकति भई सबके अधीन यारो। नचत प्रवीनी गनिकासी ठौर ठौर में ॥११॥

कवित्त

आई कढि गंगे तू पहारबिंद मंदिर तें। याही तें गुविंद गात स्याम हर औरे हैं।
फेर धँसि निकस परी है तू कमंडल में। याही तें बिरंचि परे पीरे चहुँ कोरे हैं।
ग्वाल कवि कहैं तेरे विरही विरंग ऐसे। गिरही तिहारे तें बखाने रिस जोरे हैं।
स्याम रंग अंगन तौ चाहियैं तमोगुनी को। धारी सीस ईसयातें अंग अंग गौरे हैं ॥१२॥

कवित्त

मुलि वरदायनी गुबिंद पद जन्य मात। धन्य वे पुरस जे दरस तेरे लये हैं।
अधिक अग्यान के अँधेरे में परेजे हुते। ते कृपा तिहारी के उजेरे माँहि छये हैं।
ग्वाल कवि कहें सत्वगुन को समुंद कियो। औगुन अनेकन के गढ ढाहि दये हैं।
रावरे प्रवाह पारावार में तरेजे जन। तै तै भव पारावार पार होय गये हैं ॥१३॥

कवित्त

आवें जे तिहाँरे तीर काहू और मात गंगे। तिनतें करत वैर कौन से सयानतें।
उनके परम मित्र मोह औ अज्ञान आदि। तिन्है मारि डारत हो निज दर्शबान तें।
ग्वाल कवि कहे खोटे कर्म ये करोसो करो। याहू तें अधिक और करो मन मान तें।
नहायक अपारन को भेजि देत ऐसी ठौर। जहाँ तें न आवे औ जगके मजान तें ॥१४॥

कवित्त

चित्रगुप्त[1] जमसों पुकारे बारबार ऐसे। केसी करें कहा जाई कौन-सी नगरि में।
जत में न व्रत में न पूजन में पाइयत। जैसो जग जगमग जोर सुरसरि में।
ग्वाल कवि जाके नहवैया बड़े बलधारी। इच्छा अनुसारी लवें काहूना नजरि में।
केते हरिलोक जाइ केते हरि पास जाइ। केते हरि रूप बने केते मिलें हरि में ॥१५॥

इति गंगास्तुति

---

१. मूलपाठ—चीत्रगुप्त।

अथ श्री दशमहाविद्यान की स्तुति

महाकाली जी के कवित्त

गरे मुण्डमाल औ त्रिनेत्र जटा छूटि रही। जुग्म शव रूप शिव पर्‌यो समसान पर।
दसन चरन ताके उर धर वाम पीछें। ऐसें ठाढी ह्वै रही तु भूषित कलान पर।
ग्वाल कवि कहे कीनी कांची हे करन कीसु। मुंड मंजु भुलन की भल है विशालवर।
वाम ऊर्ध कर खड्ग अधकर शीश सध। दसना अघोर्य अभे वरद सुध्यान धर ॥१॥

कवित्त

कानन में कुण्डल सो शव के विराजमान। मुल केश लांबे कुहूतम अनुसरियें।
दंत विकराल जिह्वा ललित लंबाइमान। घोर अट्टहास घन घट्टा सौ पसरियें।
ग्वाल कवि कहत त्रिलोचन कमल सम। अमल प्रकाश दिसदिस विसतरियें।
घनस्याम तन औ दिगंबरी हसित मुख। दक्षिन श्री काली जू को ध्यान नित करियें ॥२॥

ताराजी के कवित्त

कंज को हरित पत्र तापे कंज फूल्यो लाल। तापे श्वेत नीलकंज विकसित है।
तापें शवरूप शिव सूधो पर्‌यो मुक्तकेश। ताके दुहु पग पर वाम पग है।
ग्वाल कवि दक्षिन चरन आगें भूप रहें। वाघ चर्म नागन सों कटि पे कसित है।
मुण्डन की माल सत अहिभाल बाजू त्यौंही। स्वर्ण वर्ण सर्पन के कंकन लसित है ॥३॥

कवित्त

दक्षन दुभुज अधकर्त्री ऊर्ध खड्ग खुल्यो। वाम अध कर में कपाल है विराजमान।
ऊर्छाकर नीलकंज चारोकर अरुनाई। नील घन दुति देह दंत खर्व कुन्द जान।
ग्वाल कवि जिह्वा दीह तीन द्रग शशिभाल। वद्धित सुकेश शशि पाँचन सों शोभवान।
बहुमुख सर्प सेत शीश पें सो छत्र रहे। द्वितीया श्री ताराजी को ऐसें करो नित ध्यान ॥४॥

विद्या षोडशी जी के कवित्त

सोने के सिंघासन पें राजे अरुनांबर सें। वंदन वरन तन सुखमा उदोत है।
मोतिन के भूषन सुदक्षिन अघार्घ कर। इषु अरु अंकुश सेत सरसत जोत है।
ग्वाल कवि बायें एक कर धनु एक चक्र। त्रिद्रग प्रसन्न मुख क्रीटमणि जोत है।
राज राज ईश्वरी श्री विद्याषोड़सी को शुभ्र। ऐसो ध्यान धार पार जन होत है ॥५॥

भुवनेश्वरी जी के कवित्त

दक्षिन सुकर ऊर्छा अंकुश औ अध अभे। त्यों ही वामकर पास नर को दीजत है।
लालपट मुलाहल भूषित सकल अंग। पीत फूल माल हेम बरन रजत है।
ग्वाल कवि भनत त्रिअक्ष अक्षक्रीट स्वच्छ। लक्षित विलक्ष छत्र सूरहू लजत है।
परम प्रसन्नानन निरखत नित पातें। भुवन भुवन भुवनेश्वरी भजत है। ६।

भैरवी जी के कवित्त

राजे कमलासन शरद राका शशि दुति। सेतही वसन हेम भूषन सों सजे है।
दाहिने सुकर ऊर्ध मुसलमान अध अभे। वामकर ऊर्ध्वपोथी तखर रजे है।
ग्वाल कवि नैन तीन शीश पेसु क्रीटकीन। देखि चारु चन्द्रिकाकों चन्द्रिका सु लजे है।
भाल भाल माहि वेई भाल है भले जै सदा। भक्ति भूर भावन सों भैरवी जू भजे है।७।

छिन्नमस्ता जी के कवित्त

कामरति रति विपरीत लिखि काहू हेत। रति के नितम्ब वाम पद दै सजत है।
रति मुडि देखि त्यों प्रहार्‌यो चहैं दुजो पद। दाहिने सुकर खड्ग कांते उभरत है।
वामकर निज शीश धड कढ्यो श्रान पीवे। डाँकिनी औ साँकनी दुहू धों पीरजत है।
पीतो रंग सज्ञ उपवीत जैसें करि राख्यो। ऐसे छिन्नमस्ताजू को ध्यान बरनत है।८।

धूमावती जी के कवित्त

काक पे सवार सूपवामकर लियो धार। दाहिनो सुकर निज और मुरकायो है।
अम्बर मलीन धूप बरन सुदेह दुति। अति वृद्धि लोम को समूह सरसायो है।
रुक्ष अक्ष तीनो जुल शीघ्रता[1] कलह पर। छधा त्रिषालीन सिंह चंचल समायो है।
कुन्तल विमुक्त रुक्ष विरल दसन धरे। धूमावतीजी को ध्यान ऐसी रीति गायो है।९।

बगलामुखी जी के कवित्त

सात कुम्भ सिंघासन छत्र छबि छाजत है। अम्बरसु पीत दुति चम्पासी महान है।
वामकर ऊर्ध खड्ग दक्षनाध कर गद। दक्षनोर्ध पासु फाँस्यो राक्षस अजान है।
ग्वाल कवि कहे वाम अध करता सो ताकी। जिह्वा गहि[2] खैचे दयौवलतो को भान है।
आभूषन पीत क्रोड़ औ त्रिअक्ष मुल केश। बगुलामुखी को यों हमेश होत ध्यान है।१०।

मांतगी जी के कवित्त

सुधा सिन्धु रत्नदीप कल्पवृक्ष वन मध्य। मणिमय मंडप सिंघासन दिखानी है।
मधुपान मुदितासु घूरणित अक्षलाल। दुहुँकर वीणा दुति हरित समानी है।
ग्वाल कवि मृगमद तिलक मुकट शशि। मुलमाल सुक स्यामलाग्र शोभ सानी है।
चंगी मुलि दानी निजदासन की अंगी सत्ता। तंगी की मिटैया श्री मंतगी महरानी है।११।

कमला जी के कवित्त

सिंदूर सी कांति कमलासन सरूपनिधि। दिव्य पट लाल मुलमाल हलरत है।
क्रीट काम्य कुण्डल सु किंकनी जु भूषित है। ऊर्धकर दोउ कंज फुल्लित धरत है।
ग्वाल कवि कहे वाम अधकर वसुपात्र। दक्षन सु अधकर पुस्तक टरत है।
तरस त्रिअक्षजाके अंग अंग अमला है। कारज सकल सिद्धि कमला करत है।१२।

इति श्री दशमहाविद्यान की स्तुति

मूलपाठ–१. शिघ्रता २. गही।

अथ श्री ज्वालाष्टक

कवित्त

सिन्धु सुत पीवे प्रीत पूरन प्रतीतकर। आसुरी न लावें कंठमत वृत्ति को धरे।
कृमि तन ही जाने भेद दुःखदान लोकन कों। दीरघ रदन जिन्हें देखत सबे डरे।
ग्वाल कवि जीव गुरु वरने पुरानन में। शिव ही कौं जानत औगुन ही भलें भरैं।
हार धारे हीरन में धीरन धरत ऐसें। देवन अदेवन सहाय ज्वाला कू करें। १।

कवित्त

चोवदार चौमुख खवासी करे षटमुख। एक मुख वारो धुनि कियो करेब की।
द्वारे द्वारपाल देवराज दल देवन के। हवन करै वे पर हाजरी हैरंब की।
ग्वाल कवि प्रसिद्ध प्रभाकर पें पानदान। छत्र पें छपाकर वरद अविलंब की।
जा हर जलूस जोर जुग-जुग जोइयत। जागती जगत जोत ज्वाला जगदम्ब की। २।

कवित्त

अम्बर तें आवे द्वै नहर जल धारन की। लहर दुहूधा देवधुनि के रसाला की।
दौरे देवतान के दलील दल दखर। हखर हाजिरी में भीरे देवबाला की।
ग्वाल कवि गावे गुन नारद न पावे अंत। संत की सहाइक इकत छबि आला की।
फूले बहु नत्र जायें ऐसी नत्र कंदरा में। हेम नत्र तामें जोति ज्वाला की। ३।

कवित्त

कैधों वृषभान की प्रभाबन जीतिबे कों राधे। शीश फूल धार्‌यो शीश सुखया हिलोरेको।
कैधों विधि वाजीगर बाजी खेलि जातो रह्यो। रहि गयो प्यालो आला जो लिनके चोरे को।
ग्वाल कवि कैधों सुरराज ने असुर जीत। राख्यो है उतार टोप सोहै झकाझोरेको।
कैधों जगदम्ब जोति ज्वाला को जलूसदार। जाहर जगे है छत्र जात रूप जोरे को।४।

कवित्त

एरी मात ज्वाला जोति जाला की कहो में कहा। कौतुक विशाला गति अद्भुत तेरी है।
भानतें कशानतेंसु चक्कहूते पुष्ट झार। दुष्टन के दलपें दवरि होत नेरी है।
ग्वाल कवि दासन कों शीतल सदाई ऐसी। जैसी है सु तैसी सो कहे क्यों मत मेरी है।
चन्दन सी चन्द्रमासी चन्द्रिकातें चौगुनीसी। जलसी हिमंत सी हिमालय सी हेरी है।५।

कवित्त

एरे नग नांगे कहा काया कों सँवारे नित । ताया तात मायाजानि छाया हितू कोईना ।
कालीको पुरान सो सुन्यो न कभू कान देके । मान में समान्यौ औ कुमति रेख धोईना ।
ग्वाल कवि जानी ह्वै अजानी क्यों बनत अरे । पानी भयो कौन सो विचार आस खोईना ।
धिक धिक जीवन जनम जोग जग जोयें । ज्वाला जगदंबिका की जोति मिय जोईना ।६।

कवित्त

काम तखर कामधेनु चारु चिंतामनि । कामना के पूरक इन्है ही पहिचान सब ।
तेऊ कुल कामना कलित नित जाँचे तुम्हें । साँचे दरबार मिले माँगे मुहदान सब ।
ग्वाल कवि एई उपमान है जहाँ न ऐसो । आन देन रावरी लुटावे जग खान सब ।
याते राजरानी महरानी मात ज्वाला जोति । आप सी तो आप ही हो गावत पुरान सब । ७ ।

कवित्त

एकमुखी ह्वै कैं मुनि मानस मुदित कीने । छिन्नमुखी ह्वै कै धार श्रोणित की दई तें ।
भूमिमुखी ह्वै कै राक बीज निरबीज कियो । बगलामुखी ह्वै अरि बुद्धि बद्ध लई तें ।
ग्वाल कबि तू ही सौम्य मुखी औ करालमुखी । मोहमुखी तू ही जो अनंत मुंखी ठई तें ।
कलि कलुषी के तारिबे को सखी पारिबे को । जाहर जाहूर ज्वाला मुखी जग भई तें ।८।

इति श्री ज्वालाष्टक

अथ पहिला गणेशाष्टक

कवित्त

मूसा के सवारन सवार दुख वृंदन के। जाके ध्यान किये नशे पापको पहार है।
पुष्ट पुष्ट पाय मंजु मुख और पिंडुरी है। जैसो ही सुठार जंघ कटि इक सार है।
ग्वाल कवि कहे तैसी तोंद थूल थिरकत। उरभुज तुण्ड शीश शोभा को अगाह है।
रीझें बार बार बार लावें नहि एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ॥१॥

कवित्त

गौरिजू के नंदन है विघन निकंदन है। चाटे चारु चंदन है शोभा के अगार है।
सिंदूरते सजित सकल तन तेजदार। चूअत कपोल मद झार विसतार है।
ग्वाल कवि रवि कीसी किरन हजार छुटे। सुँडा दंड फैलन फिरनि बेसुमार है।
रीझें बार बार बार लावै नहि एका बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ॥२॥

कवित्त

गनन के नायक है दासन सहायक है। दुष्टन के नासक है सुखमा भँडार है।
द्वितीया को चन्द जगदंब राजे मस्तक पे। भौंरन को वृंद गंड मंडित महार है।
ग्वाल कवि कहे भुजदंड चार चारु जाके। उचित अखंड बलवंड बेसुमार है।
रीझें बार बार बार लावें नहि ऐको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ॥३॥

कवित्त

पूत पंच आनन के भाई षट आनन के। मुकट सुजानन के छबि के भँडार है।
फूलन की माले उर शोभित विशाले हाले। चाले मंद मंद तरु डारत विदारे है।
ग्वाल कवि सेवक के शत्रुन कों छार करें। पार करें भव तें दयालता हजार है।
रीझें बार बार बार लावं नहि एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ॥४॥

कवित्त

परशुराम जू को जुद्ध माँहि गर्व भंजि डार्यो। भंजि डार्यो अंग कर्यो क्रुद्ध विकरार है।
वीरभद्र आदिक अनंत गन ताबे रहे। दाबे रहे सबको पराक्रम भँडार है।
ग्वाल कवि कहे व्यासदेवजू के सुखकारी। बनिकें लिखारो कियो अति उपकार है।
रीझें बार बार बार लावें नहि एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ॥५॥

कवित्त

संकट विनासन है तेज कै प्रकाशन है। सुमन सिंघासन है शास्त्र के अगार है।
एकदंत बलवंत छविवंत छाजि रह्यो। गाजि रह्यो तीनों लोक माँहि सुख सार है।
ग्वाल कवि कहे जाकी चाँदनी चहुँधा चारु। चाँदनी न होय सर अति उजियार है।
रीझें बार बार बार लावें नहि एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है ।६।

कवित्त

सोलतान पास जाके लंबो है उदर जाको। तीन लोक संपत्ति को पूरन भँडार है।
वेदन में शास्त्रन में पूरन पुरानन में। गज मुख गाइयत आनँद अगार है।
ग्वाल कवि कहे सर्व वेदन विदारन है। पारन है पैज के कृपाल बेसुमार है।
रीझें बार बार बार लावें नहिं एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है।७।

कवित्त

आदि शुभ काजन के पूजन परम जाको। पारबती जू को प्यार पुञ्ज को पहार है।
प्रभा प्रभाकर की परास्त सी भई ही जान। पेखि पेखि जाकी प्रभापुञ्ज विसतार है।
ग्वाल कवि भलन की जाहर जलूस पारे। चूसडारे चिंता देंय मोह पारावार है।
रीझें बार बार बार लावें नहिं एको बार। ऐसो को उदार जग महिमा अपार है।८।

इति पहिला गणेशाष्टक

अथ दूसरा गणेशाष्टक

कवित्त

आठै सिद्धि नोहू निद्धि वृद्धि के करैया सदा। सकल समृद्धि के दिवैया यही आज है।
लाडिले ललित गौरिशंकर के सरसत। भंजन भयंकर के दरसे दराज है।
ग्वाल कवि विद्या के विलासन कों बकसत। दासन कों देत अभयत्व के समाज है।
सुजस-सुवासन के दायक हुलासन के। नाम के प्रकासन गनेश महराज है॥१॥

कवित्त

भारत के पूरिबेके आछे उपकारन हे। विपति विदारन है करुना समाज है।
वीरन को वीरता के धीरन कौं धीरता के। पीरन कों पीरता के दायक दराज है।
ग्वाल कवि तेतिस करोड देवतान के ये। इच्छक हमेंश सब ही के सिरताज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नामके प्रकासन गनेश महाराज है॥२॥

कवित्त

सतोगुन रजोगुन तमोगुन तत्व जामें। करे ते प्रभत्व जाके होत शुभकाज है।
दूर करैं दरद रिपून कौं गरद करे। रद करे रंकता दयालता दराज है।
ग्वाल कवि कहत कुरूपन सरूप देत। इज्जत अनूप देत दान के जहाज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नाम के प्रकासन गनेश महाराज है॥३॥

कवित्त

सदा दंड उच्च करि चाहे तो लपेटें रवि। चाहे तो चपेटे चंदे ऐसे बे इलाज है।
चाहे तो स्वरंग गंग पलमाँहि पीय डारे। चाहे तो उखारि डारे नंदन समाज है।
ग्वाल कवि कहे जो पें चाहे एक टकरतें। मेरु कों बखेरें ऐसे बल सिरताज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नामके प्रकासन गनेश महाराज है॥४॥

कवित्त

सूरज के रथमाँहि एक चक्र सुनियत। ताही की फिरनि लोकलोक दुति साज है।
शुक्र जू को एके द्रग दैत्यन को रच्छक है। पच्छक है नीको होय तातें सब काज है।
ग्वाल कवि कहे ऐसें एक दंत बलवंत। अति छबिवंत पूरे कामना समाज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नामके प्रकाशन गनेश महाराज है॥५॥

कवित्त

जाके उपहासतें विकास होत जाहर है। भादौं सुदि चौथ को न देखे दुजराज है।
एक कलाचंद की विराजमान मस्तक पें। याही हेत दुतिया को वंदत समाज है।
ग्वाल कवि कहे नाम मात्र इंद्र सुरराज। ये पुंजें सकल काज यातें सुरराज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नाम के प्रकासन गनेश महाराज है॥६॥

कवित्त

माघ वदी चौथ कों भली प्रकार पूजे जिन्हें। तिन्हें देत रिद्धि सिद्धि निद्धि के समाज है।
सिंदूर संजुल तुंडचंदन त्रिपुंड तैसो। अद्युती सुढार सुंड सुखमा विराज है।
ग्वाल कवि अतर अखंड अंग अंग राजे। उर पर साजे गंज गजरे दराज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नामके प्रकासन गनेश महाराज है॥७॥

कवित्त

नाम जाके द्वादश विशेष करि जपनीय। सुमुख औ एकदंत कपिल विराज है।
गजकरन लंबोदर विकट विघननाश। बिहँसि विनायक औ धूम्रकेतु[1] साज है।
ग्वाल कवि भनत गणाधिप औ भालचद्र। गाइयें गजानन त्रिलोक सिरताज है।
सुजस सुवासन के दायक हुलासन के। नामके प्रकासन गनेश महाराज है॥८॥

इति दूसरा गणेशाष्टक

मूलपाठ—१. धुमकेतु।

अथ शिवादि देवतान की स्तुति

कवित्त

धारन विभूत के कियो है अवधूत रूप। देत है विभूत तिंहु लोक असमान की।
दास अनदेखन के मुण्डन की माल जाल। बालशशि भाल सी सुरसरी शान की।
ग्वाल कवि प्रलयादि कर्म करैया मंजु। मुक्ति के दिवैया तन पंगत प्रमान की।
ऐसे शिवनाम की न लेन हारी जेती जीभ। सेती मानुषी न जात स्वान के समाज की १

कवित्त

सूत सनकादि शेष पुरहूत ध्यावे गावे। माने कंजभूत पूत जाकी गुन गाथ है।
कूत में न आबे दीन घालता अनूप ताकी। मलि कै विभूत कों विभूत देत हाथ है।
दूत भजे जामी जाके दास मजबूतन तें। ग्वाल कहे छूत सूत टूटत अकाथ है।
पूत है न काहू कै अनादि है अभूत है त्यों। वरद अभूत भव्य भूत भूतनाथ है। २।

सवैया

अंग विभूत अकूत अभूतसु है अवधूत धुरंधर लेखे।
है हरि आसन दिव्य प्रकासन वासन हूँ हरि को अवरेखे।
यों कवि ग्वाल हिये हिर हार है मुण्डन झुण्डन हार विशेखे।
आनन पाँच क पाँच हू भाल पें, साँच में पाँच निशाकर देखे। ३।

कवित्त

छोड़ि सब कामे कामे जनम बितावे मूढ़। राखिते कलामें नित नामे गुरग्यानी के।
रोचन से लाल लाल लोचन असम आछे। भसम दिपत गरे गरल अमानी के।
ग्वाल कवि वृष के सवार अहि हार सदा। परम उदार औधि करुना निधानी के।
देव धुनि धारा बीच जटा के अपारा धूम। तारा पति सोहे शीश ईशवरदानी के। ४।

कवित्त

वाह वाहें वाह वाहें रीझ भोलानाथ की कों। उच्चतासों बंबंबं कहे भै दरि देत है।
सेवन के थाल मोदकादिक रसाल और। मधुर विसाल फल लोक धरि देत है।
ग्वाल कवि तापे न खुसाल होत महाराज। लेके भंग प्याला सर्व सुख भरि देत है।
और तो कपोल कलषित कों न गीने पल। ये तो वाही ख्याल में निहाल करि देत है।५।

अथ हनुमानजी के कवित्त

बाने वीर जंगी जंग जारी बजरंग वीर। अंकित करी है लंक रंकित झड़ाझड़ी।
डारे नाग फाँस चरख बाँधि के पछाड़े फेर। छाती चढ़ि टक्कर पें टक्कर तड़ातड़ी।
ग्वाल कवि मोतीचूर को लुआ कितेकन को। दे दे ताल कुघन सुभट्टन सड़ासड़ी।
फुट्टत सुमेर फेर टुट्टत विमान आन। असुरी अटुट्ट शशि कुट्टत कड़ाकड़ी। ६।

कवित्त

कीने जुद्ध उद्धत प्रसिद्ध दुरबुद्धिन सों। कुद्ध कुद्ध वृद्धित प्रसिद्धित अंत का जब।
रेले रुई दस्त हस्त वेलेकरि कस्त फेर। दस्ती औ उदस्ती झूल झंपत झंमका जब।
ग्वाल कवि बैठ कल वेदावेस कैंची ऐच। बाँहबली दिज्जित वडे बल का जब।
शंका द्युअ लोक लोक लोक केसुण्ड का फूटा। लंका में लसैंया हनुमान वीर बंका जब।७।

कवित्त

लंकागढ़ उद्धत प्रसिद्ध हनुमंत जाइ। वीर बलवंतन में करत तकातकी।
कीने हथ कोड़ा नार सिंघन पछाड़ फेर। वाला दस्त स्वस्तन समस्त में चकाचकी।
ग्वाल कवि डोरि करि बगली उलट्टे चट्ट। थप्पन पें पप्पडुक्क दुक्क की भकाभकी।
सुक्कत सुरेश वेश लुक्कत दिनेश हिये। रुक्कत महेश शेष धुक्कत धकाधकी।८।

भैरव के कवित्त

शिवजू के नंदन अनंदन के कंद बृंद। दुष्टन निकन्दन अमन्दता लसी रहे।
माथे पे विभूत भूत प्रेतन के नाथ नीके। दूत मजबूत ले अभूत ता कसी रहे।
ग्वाल कवि दास को हुल्लास कर भाल शशि। विविधि विलासकर सुखमा रसी रहे।
ऐहो विधि विधि सिधि ऐसी करो मेरे मन। ऐसें भैरौंनाथजू की मूरति बसी रहे।९।

त्रिभंगी छंद

जे जे जगदम्बा हितनि करम्बा। अधिक अभूता नित नूता।
शिशुचंद ललाटं है दुति ठाटं। अधिपति भूता मजबूता।
वरदायक दासहि बुद्धि प्रकासहि देत विभूता अद्भूता।
भैरों भय हंता अति बलवंता शंकर पूता अवधूता। १०।

स्वामी कार्तिक के कवित्त

दादी करे प्यार पुन माता देत प्रान वार। अति सुकुमार रूप मारतें सरस है।
आठो सिद्धि नवों निद्धि दायक प्रसिद्ध जग। वृद्धि बुद्धिकार कसु भक्तन के वश है।
ग्वाल कवि ताही कों सपूत सब भाखत है। अधिक बड़ेनतें प्रताप सर बस है।
बाबा जू के चारमुख बापजू के पाँच मुख। आप जूके षटमुख कुल के कलश है। ११।

कवित्त

ताटक असुर सुर जीत लियो जुद्धकर। तब सुरराज वज्र मार्‌यो ज्यों लगे घड़ी।
विष्णुचक्र मार्‌यो सोऊ वक भयो धार मुड़ि। सम्भु को त्रिशूल लागे फूल ज्यों घड़ी घड़ी।
ग्वाल कवि स्वामी सुनाम कारतिक जू ने जब। सहज सुभाइ मारी बरछी अनी बड़ी।
शत्रु उर पुर फोड़ि कौंच गिर फोरि कर। फेर दिश दिग्गज के कुम्भ जाइकें गड़ी।१२।

शीतलाजी के कवित्त

गीत ले सुनावे जोपें जागि कें सकल रेनि। तोपे विसे वीस सो वसी करे मही तले।
चीत ले मनोरथ चतुर चित चाउ जेते। पूरन सु तेते होइ जैहे प्रन प्रीत ले।
जीत से अरिदल के वृन्द कवि ग्वाल भने। ताके चरनारविंद देखन की नीतले।
हीतले बसावे भक्ति रीत ले प्रतीत ले के। सीतलें करत जाहि ऐसी मात शीतले।१३।

सूर्य के कवित्त

वाधक तिमिर प्रभा साधक अगाध कहे। राधक त्रिकाली के असाधक प्रतच्छही।
विष्णु पति नीको नीको बन्धु है कलानिधि सो। तामें सिद्धि प्रसिद्धि परी है दुति स्वच्छ ही।
ग्वाल कवि जिनकी सुकर के निकर कर। फैली है जगत जोति अच्छ अच्छ अच्छ ही।
अधिक उदंड खंड खंड में अखंड मंड। चंड मारतंड सदा मोपें रच्छ रच्छ ही। १४।

कवित्त

विद्रुम वरन उदे प्राची तें प्रकाश होत। तम तोम ताके महा नाशक विलच्छ है।
करत प्रनाम मात्र हीते सुप्रसन्न होत। धन्न धन्न जाको जग भाखे भाँतिलक्ष है।
ग्वाल कवि कोक कोकनद प्रफुल्लित कारी। ब्रह्म को विराट रूप दक्षन सुअक्ष है।
शोभित सहस्र अंशु सुभाशुभ कर्म साक्षी। सूरज समान सुर और न प्रतक्ष है। १५।

ब्रह्माजी के कवित्त

विष्णु को विशद वर उदर जु सरवर। क्रांति स्वच्छ कमल सु पुरित विरंचिये।
ताको मध्यपल नाभि नन्दित करन घन। तातें उद्भव एक कमल श्री जचिये।
ग्वाल कवि कोशासन करि के स्वयं प्रकाश। तुर्यवक्त्र वेद वक त्रम्ब सों परचिये।
चंदन तें चंद्रकतें चंपातें चमोलिन तें। चित दे दे चौंपन तें चरन चरचिये।१६।

इन्द्र के कवित्त

क्रित्या की चले न जापें जित्या है पताल हाल। पृथ्वी में अहिल्या के अखिल सर्वकाज होय।
भज्ज भज्ज गये वृन्द वृन्दारक लज्ज लज्ज। तज्ज तज्ज शस्त्रन पुकारे रक्ष आज होय।
ग्वाल कवि जाके षट कौन ऐसो वज्रलेकें। वृत्रासुर मार्‌यो ताकी तीन लोक गाज होय।
महातेज वक्र औ पराक्रम अत्यग्र अद। ऐसे महाराज शक्र क्यों न सुरराज होय।१७।

मधुपुरी के कवित्त

पाँति निगुरी है ते बनावत गुरी है ताहि। सुमति धुरी घोर दुरमति चुरी है।
पापन की पंगत झुरि है औ दुरी है जमुना। ठुरी है सो जमेश जूकों बुरी है।
ग्वाल कवि उकति फुरी है सो मुरी है नाहि। मुक्ति अँकुरी है जमदूतन कों छुरी है।
धर्म की धुरी है षट पुरी की सुरी है जोर। जोति सी जुरी है ऐसी मंजु मधुपुरी है।१८।

वृंदावन के कवित्त

बरनि बरनि व्यासदेव भी थकित होत। बरन बरन वाक वानी बरनीन है।
विधि विधि बिधिहू विशेषन विशेखे देत। विप्रधर बने बाल गोप बरनत है।
ग्वाल कवि वन्दत विलोकि पतवेदन में। वेदन विदीरन बिनोद वितरन है।
वृन्दारक वृन्द आइ वपुष वसिन्द बने। वृन्दावन चन्द को विदित बृन्दावन है।१९।

त्रिवेनीजी के कवित्त

बैल पैं चढ़त कभू फैल कै गरुड़ चढ़े। हंस पैं दिखात कभू बिचरे अनूपिया।
पाँच मुख सबकों दिखाई रहि जाय एक। फेर होय जाम चार-वदन सरूपिया।
ग्वाल कवि कबहू त्रिसूल-चक्र-वीणा धरे। बाल बनै ज्वान बनै बाल विरघ विरूपिया।
तज्जूब तमासो त्रिवेनीजू तिहारो ताक्यो। तामेंजे अन्हात ते बनत बहूरूपिया। २०।

कवित्त

दारिद दरैनी सुभ संपत्ति भरैनी भूर। पूरन सरेनी जसभक्ति रंग रैनी है।
चैनी जमराज की अचैनी जी जरैनी जोर। बोर देनी कागद गुपित्र के गरैनी है।
ग्वाल कवि न्हैयत तरैनी वितरैनी तेंज। मुक्ति परसैनी तिहूँपुर दरसैनी है।
पापन कों तापन कों छैनी अति पैनी ऐनी। सुरमन सैनी सुख-दैनी ये त्रिवेनी है। २१।

अथ श्री कालीजी के कवित्त

कोप करि काली खड्ग म्यानतें निकालो ऐसी। कांति जो कराली सो न पैये भव-भाल में।
वाही दीह दैत्य पेंसु काटिके मुकट शीश। धरकाटि अश्वकाटि पैठि भूमि थाल में।
ग्वाल कवि कहे फेर अतल वितल काटि। छाँटि के सुतल करी गर्ज डहि काल में।
काटि कें तलातल महातल रसातल कों। चारि कें पताल जाय बाजी जल जाल में
॥ २२ ॥

कवित्त

ठाली मत बैठे वनवारी बुद्धिवाली इहाँ। विषै वनमाली तें न मिली भागवाली जो।
ठाली बहु फसल उसास की पे हाली अब। त्यागी हरी दाली ममता की झुकि झाली जो।
लालो और लादिन की ढाली चहै ग्वाल कवि। राह ले निराली कही साहगुर हयाली जो।
खाली वैस वधिया उताली चली जात पातें। काली नाग लादि लेनी नफा की खुशाली जो ॥२३॥

कवित्त

लच्छ लच्छ लच्छित अलच्छन में लच्छ तुही। लच्छन में लच्छ लच्छ लच्छन में तेरो सब।
जच्छ जच्छ दच्छन में दच्छन प्रदच्छन में। पच्छिन में पच्छ पच्छ राज पच्छ तेरो सब।
ग्वाल कबि भिच्छुक दरस पद पच्छक कों। रच्छक अपच्छिन अकच्छ कच्छ घेरो जब।
स्वच्छ स्वच्छ वरद प्रतच्छ लच्छ लच्छन में। दच्छन में कालिकासु अच्छ अच्छ हेरो अब ॥ २४ ॥

कवित्त

छामा है छिने कही में दैत्यन कौ खामा करे। आदि मध्य परिनामा दुष्टन विहालिका।
जामा जिन धाम्यो जब पालिवे को नेक नामा। देवन को विशरामा पूर प्रन पालिका।
सामा भुक्ति मुक्ति की इनामा कवि ग्वाल जाके। धामा महातेज की अछिन्न राशि मालिका।
वामा वामदेव की प्रनामा करे जग ताहि। गिर के शिखिर अभिरामा स्यामा कालिका ॥ २५ ॥

श्री मनसा भवानोजी के कवित्त

राजे गिरि रूप छवि छाजे मंजु मंदिर में। साजे चहुँ ओरन में लीला जो पुरानी है।
विप्रन की मंडली करत धुनि वेदन की। वेदन की नामक कमंडली बखानी है।
ग्वाल कवि घंटन की झाँझन की झालर की। नौवत निनादन की धुंध मन मानी है।
लाख लाख वेर मन साख भरे एक यही। मनसा पुजाइबे कों मनसा भवानी है।२६।

नैना देवी के कवित्त

मेरु सो उत्तंग गिरि शृंग में विराजमान। जाके चहुँआन भई सतसद्र सेवी है।
श्री गुविंद सिंव कों दियो है वरदान जिन। भयो पंथ खालसा प्रसिद्ध अति जेवी है।
ग्वाल कवि जाके दरस किये अति हर्ष होत। अघ ओघ संकट अनेक हरि लेवी है।
भुक्ति पद लैना तो भजहु दिन रैना सब। आँनद की सैना जग ऐना नैनादेवी है।२७।

देवीजी के कवित्त

किलकि किलकि कूदि कूदि के चिलक भरी। बालचंद तिलक ललक भाव भरियें।
पान के सुमद इघ असुर गरघ करि। इघ करि डारे वली वघ इक धरियें।
ग्वाल कवि सिंघ को नृसिं प्रभी दराज टूंक। सुनि सुनि भये टंक भ्रंक अनुसरियें।
तेज अति वर्द्धनी कंपदेनी विदित ऐसी। महिषासुर मर्दनी को ध्यान नित करियें।२८।

कवित्त

एक कर माला इक प्याला करबाला ऐक। एक सों मरोडी असुरेस शृङ्ग वंकटी।
वामकर चक्र चर्म शंख एक धनुवान। मस्तक द्विजेश गले माला आला कंकटी।
ग्वाल कवि उन चहुँरूपा धार्‌यो तरु मार्‌यो। पाछैंते जुट्‌यो हे सिंघ दूके झार झंकटी।
अंकटी जहाँ न बीच जाहर असंकटी है। महिषासुर मर्दनी कपर्दनी अंतकटी।२९।

कवित्त

दंडी ध्यान लावे गुन गावै है अदंडी देव। चंड भुज दंडी आदि केतक विदंडी है।
कीरति अखंडी रही छायन बखंडी खूब। चौभुज उदंडी वरामै असि भूसंडी है।
झंडी करुना की ब्रह्मांडी कहे ग्वाल कवि। छंडी नहीं पैज भक्ति पालन घमंडी है।
मंदी जोति जाहर घमंडी खल खंडी दंडी। अधिक उमंडी बल बंदी मात चंडी है।३०।

कवित्त

गावत विरंचो रंचो विष्णु ना विसारत है। धारत महेश जो मिटैया बहु रंज की।
त्रिभुवन पालन की पोखन की पैज तेरी। भलन के शत्रुन को झीमा भूर भंज की।
ग्वाल कवि जग में जपत जगदंबा गौरी। जाचत हों एके यह बात सुख संज की।
जौ लौ रहे जिंदगी जिहान[1] बोच मेरी मात। तौ लौं करौं बंदगी तिहारे पद कंज की ॥ ३१ ॥

कवित्त

मामें अति औगुन अधमाता के शैल सुते। तिनकौं न ताकौ तो मिटेगी बात रंज की।
तारक विरद बुझि आपनो जो दीजे मुक्ति। तो रहों समीप करौं सेवा मोद मंज की।
ग्वाल कवि जो पे वेर वेर जनमाओ तोपें। मानस वने यो दीजो भक्ति भ्रम भंजकी।
जौ लों रहै जिंदगी जहान वीच मेरी मात। तौ लौ करौं बंदगी तिहारो पद कंजकी।३२।

अमृत ध्वनि

खलबल पच्छिम जग्ग में। सुंभ निसुंभ समुद्द।
जुड़े श्री जगदंब सों। कहि कबि ग्वाल बिहद्द।
इद्रं हं दव्वत कद्द हें। पव्वत वद्दहं वद्यजु।
नद्दह श्रोनित छद्दह। प्रथ्यिम चव्वत रद्यजु।
कुद्दह चेंडिय सद्दह भंजिय। रुद्दह अरि[2] दल।
मुद्दह निज्जर फंदह जुग्गिन। रद्दह खलबल ॥ ३३ ॥

काशीजी के कवित्त

गर्भ ते निकासी किंबा प्रान की निकासी होई। भवतें निकासो जावी सहज प्रकासी है।
कोट कोट जन्मन के पाप की विनासी खासी। दासी ह्वै मुकति द्वार द्वार पें विकासी है।
ग्वाल कवि वासी सब होइ जात अविनासी। तारक हुलासी परम धर्म नवकासी है।
पढ़े सारिकासी जहाँ ब्रह्म ग्यान कारिकासी। काशी में बताऊँ भैया काशी सी सुकासी है ॥ ३४ ॥

इति फुटकर देव देवी स्तुति पूरणं

मूलपाठ—१. जीहान, २. अरी

षट्ऋतु वर्णन तथा अन्योक्ति वर्णन

दोहा

ग्रीषम पावस शरद हिम । शिशिर बहुरि रितु राज ।
ये षट रितु बरनन करत । वाँचि बढे सुख साज । १ ।

ग्रीष्म ऋतु वर्णन

कवित्त

पूरन प्रचंड मारतंड की मयूखे मंड । जारे ब्रह्मांड अंड डारे पंख धरियें ।
सूर्य तन छूपे बिन धूये की अगिन जेसी । चूये स्वेद बुंद दुंद धारे अनिसरियें ।
ग्वाल कवि जेठी जेठ मास की जला कनतें । प्यास की सलानक तें ऐसी चित्त झरियें ।
कुण्ड पियें कूप पियें सरपिये नदपियें । सिंधुपिये हिमपिये पीयवोई करियें । २ ।

कवित्त

ग्रीषम की गजब की है धूप धाम धाम । गरमी झुकी है जाम जाम अति तापिनी ।
भीजे खजबीजन झुलेहून सखात स्वेद । गातन सुहात वात दावा सी डरापिनी ।
ग्वाल कवि कहे कोरे कुंभनते कूपनतें । लेते जलधार वारचार मुख थापिनी ।
जब पियो तब पियो अब पियो फेर अब । पीवत हू पीवत बुझे न प्यास पापिनी ।३।

कवित्त

ग्रीष्म के भान को बढ्यो है बे प्रमान तेज । दिश दिश दीरघ दबागो अरि गई है ।
सीत भज्यो चंदन तें चंद्रमा कपूर हूतें । खस वीजना हू तें भभकि भरि गई है ।
ग्वाल कवि कहे फेर जल तें कमल हूतें । थल के सुतल हुतें सीवा झरिगई है ।
शशि को न जानौ सेत जार दियो बार बार । ह्वै गयो अँगार तापें छार परि गई है ।४।

कवित्त

मेष वृष तरनित चाबन के त्रासन तें । शीतलाई सब तहखानन में ढली है ।
तजि तहखाने गई सरसर तजिकंज । कंजतजि चंदन कपूर पूर पली है ।
ग्वाल कवि व्हाँतें चंद में ह्वै चाँदनी में गई । चाँदनी तें सोरा चले जल माँहि रली है ।
सोरा जल हूते धसी ओरा फिर ओरा तजि । बोराबोर ह्वैकरि हिमाचल में गली है ।५।

सवैया

गरमी अति धूप ने कीनी हुती । फिर लूयें चले न जुझे तो जुझे ।
अनुमान में आवत एक यही अरु । और कों ओर सुझे तो सुझे ।
कवि ग्वाल अगस्ति की शक्ति छई । यह ईसु रही पें रुझे तो रुझे ।
अवनी की नदी सव पी लइयें । नभ गंगते प्यास बुझे तो बुझे । ६ ।

सवैया

पिब कारिन सों वटकों छिटक्यो जलधारन सों जटा जागती है।
तिहिं छाँह घनी में विचोवाखसो खसही की कनाते सु पागती है।
कवि ग्वाल वे सीचीं गुलाब घने पे जलाना तऊ न विरागती है।
न छुये न छुये सियराइ कहूँ न सुके न सुके लुये लागती है। ७।

सवैया

इकली मैं अभागिन हूँ घर में, न परोसिन हू अनुरागती है।
तुम्हें देखि बटोहि दया उपजी, इहि बेर दशो दिशि दागती है।
कवि ग्वाल दुकोशलो पानि नहीं, अरु छाया न केसिहू जागती है।
बिरमो यह पौरि हमारी अजू सु अगारी बड़ी लुयें लागती है। ८।

सवैया

कल पीहर जैवो जरूर हमें पे करे, रवि की अति दागती है।
चलि भोरहि जाइ टिकोंगी तहाँ, जहाँ छाँह तमाल की जागती है।
कवि ग्वाल अबेरे चलें ते अबे, शिथलाई शरीर में पागती है।
इक जामहि घाम चढ़े ते अली, अजबी गजबी लुयें लागती है। ९।

सवैया

जिन जाऊ पिया यों कहों तुम सौं तो तुम्हें बतियाँ यह दागती है।
इहाँ चंदन में घनसार मिलेसु सबे सखियाँ तन पागती है।
कवि ग्वाल कहाँ कहाँ कंज बिछे, उन मालती मंजूल जागती है।
तजिकें तहखाने चले तो सही, पे सुनी मग में लुये लागती है। १०।

सवैया

पिय जाइ विदेश बसे जब तें तब तें विषसी पिकी रागती है।
मति चंदन मेरे लगाउ सखी ये चमेली चिराग सो दागती है।
कवि ग्वाल फुहारै फुहारन को, तन जार ही जार सुभागती है।
खस बीजना ना करि ना करि नाकरि, ये अँगार भरी लुये लागती है। ११।

कवित्त

पीयें जब पानी तब गरम ही पोजियत। प्यास न बुझात यातें होत को खफा नहीं।
आँधी को गुबार घुरधार बेसुमार बढ़े। रात लग लूयें चलें को जो तड़फा नहीं।
ग्वाल कवि केह चीज छुयें ते गरम सब। दम घभरात नींद आवत सफा नहो।
पाँच हू रितु की गुलामिनीजु ग्रीषम है। मसल कसूर है गुलाम ते वफा नहीं। २।

कवित्त

सिंधु ते कढ़ो है किधों बाडवा अनल अर । दावा औ जहर मिलि कीनी ताप भर की ।
कैधों महाँरुद्रजू के तीसरे विलोचन की । खुलन लगी है कहूँ कोर तेज तरकी ।
ग्वाल कवि कहत सुदशन को म्यान किधों । उघर्‌यो कहूँ ते द्रष्टि तीवन है सरकी ।
हाय विरही की किलाप विरहागिन की । देत है जराय जेठी धूप दूपहरकी । १३ ।

सवैया

चन्दन की न चलाँकी चले, औ कपूरहु को कहा छीवन है ।
खेमे खेर खसके छिरके फिरके चले लूयें मही वन है ।
यों कवि ग्वाल परे गरमी जड़ के वड़ा कंद को पीवन है ।
जेठ में त्यो जगजीवन कों इक शीतल जीवन जीवन है । १४ ।

कवित्त

गोरिले गुविंद ने गरूर गार्‌यो ग्रीषम को । गुलगुले गिंदुक गुलाब गरकाने से ।
चन्दन कपूर चूर चहल चटक चारु । चौसर चँमेलिन चँगेर चरचाने से ।
ग्वाल कवि सुदल सरोजन के सेजसाजि । शीतल सरसनीर हिम सरसानें से ।
खासे खमखाने खुसखाने खिझवत खाने । खूब खुसबोइन के खुलिगे खजाने से ।१५।

कवित्त

जेठ की ज्वाला करे सकल जग माँहि जोर । जारन त्रिलोक जीव व्याकुल कहल में ।
देखि यह कौतुक खुलाय के शरद खाने । खूब खस खाने करे चन्दन चहल में ।
ग्वाल कवि छूटे जल जन्त्र में गुलाब नीर । विमल बिछौना गुलाब के पहल में ।
छाये छबि बृन्द राजे आनँद के कन्द आज । राधिका गुविंद अरविंद के महल में ।१६।

कवित्त

फूलनि में फैल फैल राधा स्याम राजत है । फूलन की सेज वंद फूल ठरे तें ।
फूलन के फेटा फूल तुर्रा फूल पेचन पे । फूलन के वसन हँसल फूल गरेतें ।
ग्वाल कवि फूलन के फोंदा फंदे फंदन में । फूलन चँगेर फूल फलित वखेरतें ।
फूलन के मन्दिर में फूल सी फबनि फबि । फहर फहर फूलमालन कों फेरतें । १७ ।

कवित्त

बरफ शिलान की बिछायत बनाइ करि । सेज संदली पें कंज दल पाटियत है ।
गालिब गुलाब जल जाल के फुहारे छुटे । खून खसखाने पें गुलाब छटियत है ।
ग्वाल कवि सुन्दर सुराही फेरि सोरा माँहि । ओरा को बनाय रस प्यास डारियत है ।
हिमकर आन नीहिवालासी हिये तें लाय । ग्रीषम की ज्वाला के कशाला कटियत है ।१८।

कवित्त

ग्रीषम के त्रास जाके पास ये बिसात होत। खस के मवास पें गुलाब उछर्‌यो करे।
विही के मुरब्बे डब्बे चाँदी के वरक भरे। पेठे पाग केवडे में बरफ पर्‌यो करे।
ग्वाल कवि चंदन चहल में कपूर पूर। चंदन अतर तर वसन खर्‌यो करे।
कंजमुखी कंजनैनी कंज के बिछौनन पें। कंजनकी पंखी कर कंज सों कर्‌यो करे।१९।

कवित्त

ग्रीषम की पीर के विदार के सुनोये साज। तरु गीर तीर के सुछाया में गंभीर के।
शीतल समीर के सुगन्धी गौन धीर के जे। सीर के जरैया प्याले पूरित पटीर के।
ग्वाल कवि गोरि द्रग तीर के तुनीर केसु। मोद मिले जैसे अकसीर के खमीर के।
आबखोरे छीर के जमाये बर्फ चीर केसु। बँगले डशीर के भिजे गुलाब नीर के।२०।

कवित्त

भान की तपन वन उपवन जारें लगी। तेसी लूयें लोल लागे ज्वाल जाला सी।
ताल नदी तालन के नीर तें रँघन लागे। याते लाल सुनहुँ उपाय इक आला सी।
ग्वाल कवि प्यारी को छबीली छाती छाँह छियौ। चाँदनी सी हाँसी देह चंदन रसाला सी।
पाला सी विलोकनि हिवालासी लिपट जाकी। लीजे चलिकंठ मैलि मालती की माला सी। २१।

पावस ऋतु वर्णन

कवित्त

आवत अषाढ़ आगि अंबरतें औधी परे। लोग अनुमाने मेह घूम मेह धारकी।
आई है कि आई अब आवत ही ह्वै है घटा। त्यौं ही कही काहू सुनो गरज धकार की।
ग्वाल कवि कोऊ केह धुखा दिखाने वह। एके कहे सौंधी गंध आइ शीरी बयार की।
बोलि उठ्यो एक का अवाई सी मचाई भाई। आई वह आई यह बरखा बहार की।२२।

कवित्त

रंग रंग रंग के पयोधर तुरंग तीखे। मृस की सुरंग चीने सुघर समाज के।
त्रिविधि बयार सो सबार वेगवान धार। बीजु चमकार तोप प्याले खुस काज के।
ग्वाल कवि अंबर अनूप रूप खेमा खूब। धुखा तनावतने द्रढता दराज के।
हेरे मैं करे रे दल घेरे चहु फेरे अब। आइ परे डेरे नेरे मेघ महाराज के। २३।

सवैया

यह सावन आयों सुहावन है तरसावन, मानसों भागि रहो।
जलधारन सों थल पूरि रहे सुर मीठे, मलारन रागि रहो।
कवि ग्वाल दया कर देखो इते, रिस दामन सों जिन दागि रहो।
अनुरागी रहो निशि जागि रहो, रति पागि रहो गल लागि रहो॥ २४॥

कवित्त

पावस बहारें आई रसिक नरेश हेत। लेत अब मौजें महामोद उपदान की।
फूलन की अतरों की केसर लवंगन की। मेवों की मिठाईन की अमल गटान की।
ग्वाल कवि कहे रागरंगन की बुंदन की। शीरी पौन ऊँचिये अटान पे घटान की।
बिजुली छटान की औ छपर खटान की सु। रंगद्युपरान की प्रिया के लिपटान की।२५।

कवित्त

वीर वरषा के ये बनाये बने बानिक है। ये बिन बने नहीं बहार पंचवान की।
चंचलासी चंचला है चंदमुखी चंचला सी। साला है सबीन की सजी है सेज सान की।
ग्वाल कवि वलित बगी चाहे सु चाँदनी है। चौसर है मोर है झकोर है हवान की।
दीरघ अटा है अटा ऊपर घटा है घन। घन घटा ऊपर छटा है चंचलान की।२६।

कवित्त

जाने जिन वीर पुरहूत को धनुष ब्याहि। साजे जीन पोश रंग रंग की तयारी कों।
चंचलान चौंके यें चमकात लागी चारु। गरजन जानि करे दिव कहु स्यारी कों।
ग्वाल कवि हाल पे उछाल के समुदजात। चाल भरे खूंदन करत राह सारी कों।
घेरी घन हे न पंचवान ते तुरंग भेजे। प्यारे मनभावन के मन की सवारी कों।२७।

कवित्त

भादों की अँध्यारी महा सापिन सी लागे मोहि। बिजुरी विलासिनी चमकत है आय आय।
मोरन को शोर हिय फोरि कें कढत पोर। मेघन की धार लोग शेल सीजु धाय धाय।
ग्वाल कवि प्यारे ये कंदपहू कसाई भये। फूल बन बाग जरावत है भाय भाय।
पापी यह पावस प्रबल दुख दैव काज। आयो परदेश में पियारी बिन हाय हाय।२८।

कवित्त

प्यारी बिन जानिकें अकेलो पहिचान करें। लियो दाऊ पाबस विदेश में करोर डार।
फूले बन बागन में आँगन लगाई देइ। बेदरद बादर तिन्हें हू अब फोर डार।
ग्वाल कवि शीतल समीर हू के तीर मार। पातकी ये चातकी की चौचें चीर घोर डार।
तोर डार इन्द्र को धनुष बाँह ऊँची करि। मोरन के कंठ को निशंक ही मरोर डार।२९।

कवित्त

झूम झूम चलत चहूँधा घन धूम घूम। सूम सूम भूमि घ्घे घ्घे धूम से दिखात है।
तूलके से पहल पहल पर उठे आवें। महल महल पर सहल सुहात है।
ग्वाल कवि भनत परम तम समकेते। छम छम छम डारें बूंदे दिनरात है।
गरज गये है येक गरजन लागे देखो। गरजत आवें एक गरजत जात है। ३०।

कवित्त

प्यारी आऊ छात में निहारी नये कौतुक यें। घन की घटातें खाली नभ में न ठौर है।
टेड़ी सुधी गौल औ चखूटी बहु कौन वारी। खाली लदी खुली मुदी करे दौरा दौर है।
ग्वाल कवि कारी घोरी घुमरारी घहरारी। घुरवारी वरसारी झुरी तौर तौर है।
यह आई वह आई यह गई वह गई। और यह आई उठी आवत वे और है। ३१।

कवित्त

प्यार सौ पहिर विसवाज पौन पुरवाई। ओढनी सुरग सुरचाँप चमकाइ है।
जगाजोति जाहर जवाहर सो दामिनी है। अमित अलापन की गरज सुनाइ है।
ग्वाल कवि कहे धाम धाम लसि नाचे राचो। चित चित्तवित्त लेत मोद माँचत महाइ है।
वंचनी विराग हू री अति परपंच तीसी। कंचनीसो आज मेघमाला बनिआइ है।३२।

कवित्त

पावस की साँझ माँझ ताकिये तमासो खासो। वासो किये भानु दबी किरनें दिखात है।
एरी मेरी प्यारी ते हूँ हेरी है कि नाहि कभू। कैसी नभ न्यारी न्यारी छबि छहरात है।
ग्वाल कही जूही सेत चंपकई लीली पीली। घूमरी सिंदूरी बदरी ये मँडरात है।
मानहुँ मुखौअर मनौज को मुकव्यामंजु। फैलि पर्‌यो तारी तसवीरें उड़ी जात है।३३।

कवित्त

गेह अति ऊँचे होय खुले होय ढके होय। दरै होय गोखे होय रौसे होय रँगे सी।
बन होय बाग होय बीन होय का होय। केकी होय भेकी होय पवन अभांगे सी।
ग्वाल कवि गरम गिलौरी होय गिजा होय। बूंदे होय इदे होय दामिनी के संगे सी।
प्यारी होय प्यारे होय प्यार होय प्याले होय। होय परजंक पर जंघन की जंगे सी।३८।

कवित्त

देख देख आवन ये सावन सुहावन की। ऐसी चित आवत कहूँ न नेको टरिये।
पलँग बिछाई आछे अतर लगाइ चाइ। गाइ के मलार दाइ बाई अनुसरिये।
ग्वाल कवि कामिनी की जंघन में जंघ मेलि। पेलि भुज गल में लपेटि अंग भरिये।
चूमिकैं कपोल गोल उरज अमोल मलि। खोलि खोलि नीवी मन भायो कर्‌यो करिये
॥ ३५ ॥

कवित्त

मोरन के शोर छाये जुगनू करोर छाये। भँवर मरोर छाये बाटिका छिपाई है।
रुखन पें खग छाये नग छाये चक्रवाक। मग छाये नद नदी धार झगि पाँई है।
ग्वाल कवि कहे डार डार दल छाये हरे। मोद छाये दंपति नवेली गीत छाई है।
घन छाये वन छाये वन छाये जन छाये। पै न आइ छाये पिय मेरे आजताई है।३६।

---

१. मूलपाठ : नीहारी।

कवित्त

कूकै कोकिलान की कुहू कै मंद मोरन की। झूके पौन सूके सेल सरसम मारती।
घन की चमूकैं संग दामिनी हरन कैं हूकें। गरज चहूँ कै दूकें नाहर सी पारती।
ग्वाल कवि ऊँके औधि चूकैं वाँ वधू के लाल। वेदन अचूके लखि आली किलकारती।
हूकें करे टूकें विरहागिन भभूकें उठि। लूकैं लागि अंबर दिने से फूकें डारती।३७।

कवित्त

मान की न बेर सनमान की है बेर प्यारी। मान कह्यो मेरो झुकि झाँकतो झमाके सो।
लह लही वैले तेऊ तरु तरु संग खेलें। मेले वाह वाले ताले छवि के छमाके सो।
ग्वाल कवि बूंदे बूंदे रूंदे विरहीन हीन। नेह की न मूंदे कौन मूंदे झर वाँके सो।
घूमि आये झूमि आये लूमि आये भूमि आये। चूमि चूमि आये धन चंचलै चमाके सो
॥ ३८ ॥

सवैया

पोढे पलंग पें प्रेमी प्रिया, पपिहान पुकार की दूरैं परें।
शीतल मंद सुगन्ध समीर, शरीर छमेन की फूंदे परें।
त्यों कबि ग्वाल घटा घहरे, लहरे बिजुरी तम रूदें परें।
मेह की बूंदे न मूंदे परे, येन मूंदे परे है न मूंदे परें। ३९।

कवित्त

जोही जुगनून की जमातें जुर जामिनी में। दामिनी में घूमें घन घैने घुनिघोटी कै।
लोटी रति रंग में पलोटी पाय प्रीतम के। जाऊ जिन प्रात पैन मानी काम कोटी कै।
मोटी मोटी रोटी डारी चिरिन कों ग्वालकवि। द्वार दुति ओटी भौंर गुंजे गन्ध रोटी कै।
छोटी रही रेनि नींद नैनन अँगोटी हाय। खोटी करैं लागे ये पखेरूलाल चोटी कै।४०।

कवित्त

मेरे मनभावन न आये सखी सावन में। ता वन लजी है लता लरजि लरजि कैं।
बूंदें कभू रूदें कभू धारें हिय फारि दैया। बीजुरी हू वारे हारी वरजि वरजि कैं।
ग्वाल कवि चातकी परम पातकी सौं मिलि। मोरहू करत शोर तरजि तरजि कैं।
गरजि गये जे घन गरजि गये हैं भला। फेर ये कसाई आये गरजि गरजि कैं।४१।

कवित्त

कारे कारे गुम्मज सें गढ सें गयंदन सें। नीलम के गीर सें ये गरजत आबे है।
धौरे औ घुवारें घजदार कै सें मिले भये। लपके लहरदार लरजत आवे है।
ग्वाल कवि कहे वेश बीजुरी सु वाला लिये। बाला मानिनी को में बरजत आवे है।
सिरजत आवे है सँजोगिने सनेह सुख। हुकम अदूलिन कों तरजत आवे है।४२।

कवित्त

छिनहू थँमे न मेह बरसत भाँति भाँति। ताकी तीन डकती हिये में मेरे ह्वै गई।
कैधों स्वर्ग गंगाकै सु बंध में भये हैं छिद्र। तिनतें अनेक धारें छूटी सोइ ह्वै गई।
ग्वाल कवि कैधों जलझारियाँ सुरीगन की। तीव्रतम पौन सें ढरी सों सब ह्वै गई।
कैधों सुर राजजू के भिसतो अनंतन की। मसकैं पुरानी परी झाँझरी सी ह्वै गई।४३।

कवित्त

बीति गई अवधि मन मोहन के आइबे की। ताइबे की वानलई पंचवान बानले।
धीर गयो घाय पीर पल पल सर साई। कछु न सुहाई गई मतिहू सयान ले।
ग्वाल कवि सुनी मैं दुनी में दई दीन घाल। याते करौं अरज दया के मेरी मान ले।
मेघन की धारन तें केरी किलकारन तें। पपिहा पुकारन तें पहिले ये प्रान ले।४४।

शरद ऋतु वर्णन

कवित्त

आज अंबरख ते लिपाय मंजु मंदिरन। तास सेत बिछत करी है चौक हद में।
ताने सामियाने जरीदार सेतजेब भरे। मोतिन' की झालरें झलाझल के सद में।
ग्वाल कवि चौसर चमेली के चँगेरन में। चुनवाँ चमके चीरवादला विशद में।
चंद ते सि चंदमुख अमल अमंद अति। बैठे ब्रज चंद चंद पूरन शरद में॥४५॥

कवित्त

हीरा के फरस पर हीरा के फरसबंद। रजत की सेज दूध धारन सी ह्वै रही।
सेतसेत तास के चँदोवा चहुँ और ताने। सेत बादला तें सुखमासी चारु च्वै ही।
ग्वाल कवि मोतिन की झालर की झिलि मिलि। हिलि मिलि अलिन अनंत छवि ह्वै रही।
शरद की चटकीली चाँदनी की जोति मिलि। प्यारी मुखचारु चाँदनी तें एक ह्वै रही।४६।

कवित्त

मोरन के शोरन की नेकौ न मरोर रही। घोरहू रही न घन घनैया फरद की।
अंबर अमल सर सरिता विमल भल। पंक को न अंक औ न उड़नि गरद की।
ग्वाल कवि चहूँधा चकोरन के चैन भये। पंथिन की दूर भई दूखन दरद की।
जल पर थल पर महल अचल पर। चाँदी सी चमकि रहि चाँदनी शरद की।४७।

कवित्त

चम चम चाँदनी की चमकि चमंक रही। राखी है उतारि मानो चंद्रमा चरखतें।
अंबर अवनि अंबु आलय विटव गिरे। एक ही सें पेखे परें बने ना परखतें।
ग्वाल कवि कहे दसौ दिश ह्वै गई सफेद। खेद को रह्यो न भेद फूली है हरखतें।
ली पी अंबरख तें कि टीपी पुंज पारदतें। कैधों दुति दीपी चाँदी के बरखतें।४८।

मूलपाठ :—१. मोतीन

हेमन्त ऋतु वर्णन

कवित्त

हाजिर हिमाम को किमाम देखि देखि दोऊ। न्हात बतरात मुसिक्यात छबि दंतमें।
धार धार भूषन बसन बनि बैठे बेस। देश देश दावे लेत शीत निज तंत में।
ग्वाल कवि दिनहूँ घटन लाग्यो पल पल। भोजन गरम भायो जग सब तंत में।
कंत कामिनी तें मिलि मिलिकैई कंत आज। लेत है अनंत री विनोद माहि मंत में।४९।

कवित्त

हरखि हिमंत में इकंत कंत संग मिलि। मौज ले अनंत छविवंत तेरो गात है।
रवि की मयूख सों वियूख सी लगत मीठी। खेतन में ऊख की बहार दरसात है।
ग्वाल कवि तलप तुलाई की हितात त्यागी। आन लागी लगन बरफ भरी बात है।
दिन दिन घटन लग्यो है दिन तिन तिन। छिन छिन छिनदा सरस हति जात है।५०।

कवित्त

शीरे शीरे नीर भये नदिन के तीर तीर। शीरे भये चीर धरासीरी सब परि गई।
दशहू दिशे तें दिनरात लागी कुहरान। पौन सररान साफ तीर सी निकरि गई।
ग्वाल कवि ऐसे या हिमंत में न आये कंत। सो तुम्हें न दोष सलतंत औरे ढरि गई।
सूखि गये फूल भौंर झौर उड़ि गये मानो। काम की कमान की कमान सी उतरि गई। ५१।

कवित्त

शीत की सवाई सी दिखाई परे दिनरात। खेतन में पात पात जमे जात सोंरासें।
सरर सरर बरफान की पवन लागे। करर करर दंत बाजे झकझोरासें।
ग्वाल कवि कहे ऊन अंबरनि चोरे जहाँ। सूती बसनन तें तो वहे जात घोरा सें।
जोर जोर जंघन उदर पर घर घर। सिकुरि सिकुरि नर होत है ककोरा सें।५२।

कवित्त

धीरे धीरे उतर हिमालय तें आइ तरें। नदीन के वारि छ्वे छ्वे शीत सरसात है।
जोगी जती तपसी सभी की दुखदाइन है। अजब कसाइन है दयाना दिखात है।
ग्वाल कवि तूलकी न ऊनकी सँवूर की न। माने ना दुशालनी की साफ सरसात है।
बर्फ की कतार है कि सार नोक दार है कि। प्यार ही अपार है सो पार भई जात है। ५३।

कवित्त

बाहिर गये तै घर आवन लगे है लोग। घरके बसैयन पयानो कियो साफा सो।
ग्यानिन को ज्ञान अरु ध्यानिन को ध्यान मान। मानिन को मान फार्‌यो मृगमद नाफा सो।
ग्वाल कवि कहै प्याला बाला में दुहून ही में। सब ही ने जान्यो ठाक आनंद दूजाफा सो।
जोमदार जीवन को जोम को जगैया बड़ो। आयो अब जाड़ो जग करन जुराफा सो ५४।

कवित्त

झरझर झाँपे बड़े दरदर ढाँपे नापें। थर थर काँपे तऊ बाजत बतीसी जाय।
फेर परमीशन के चौहरे गलीचन पें। सेज मखमली सौरि सोऊ शरदी सी जाय।
ग्वाल कवि कहे मृगमद के धुकाये घूम। औढि औढि घरमार आगि हू छपीसी जाय।
छाके सुरा शीशी हून शीशी ये मिटेंगी कभू। जोलो उकसीली छाती सों न मीसी जाय। ५५।

कवित्त

उदर हिमाम जामें नाभि कुण्ड कमनीय। हीयचली अँगिठी जटित मनिमाला की।
मैन की उमंग सों अमंग है अगिन आछी। उरजन शीश कसतूरी रंग आला की।
ग्वाल कवि तन की सुगंध अंबरात रहे। मिलन प्रसंग की सो लिपट दुशाला की।
अंग अंग बाला के ये गरम मसाला सब। ये हो नंदलाला चलि लीजें मौज पाला की। ५६।

कवित्त

ऐसी तौन गरमी गलीचन के फारसो में। है न बेस कीमती बनात के दुमाला में।
में वन की लोज में न होय में हिमाम हूके। मृगमद मौज में न जाफरान जाला में।
ग्वाल कवि अंबर अतर में अगर में न। उमदा सेंवूर हूयें है न दीपमाला में।
द्वै द्वै दुशाला में न अमलों के प्याला में न। जैसी पाला हरन सकत प्यारी बाला में ५७।

कवित्त

बारियाँ महल की न हलकी मुदी है जहाँ। राशि परिमल की अंगीठियाँ अनल की।
जोतें मोम भलकी चँगेरे है नुकल को सु। प्यालियाँ अमल की पलंगे मखमल की।
ग्वाल कवि थल की सची सी लंक वल कीबो। फूल सम हलकी प्रभा में झलाझल की।
विपरीत ललकी कहे को बात कलकीसु। बाले छवि छलकी दुशाले में उछल की।५८।

कवित्त

गाले अति अमल भराले तोसकोमें फेर। ऊपर गलीचे बिछवाले जालवाले अब।
सेजन पें सेज बंद खूब कसवाले वाले। खाले रसवाले जे गजक बनवाले सब।
ग्वाल कवि प्यारी कों लगाले लिपटाले अंक। सोइ के दुशाले में मजाले अति आले जब।
मंजुल मसाले मिले सुरा के रसाले पिये। प्याले पर प्याले मिटे पाले के कशाले तब। ५९।

कवित्त

सोने की अंगीठिन में अंगीन अधूम होय। होय धूम धार हूतो मृगमद आला की।
पौन को न गौन होय भर क्यो सु भौन होय। मेवन के खौन हौय डबियो मसाला की।
ग्वाल कवि कहे हूर परी सें सुरंग वारी। नाचती उमंग सों तरंग तान ताला की।
बाला की बहार औ दुशाला की बहार आई। पाला की बहार में बहार बड़ी प्याला की। ६०।

कवित्त

कन्या के भयो अभूत पूत मजबूत महा। बल है अकूत द्यूत पनमें अलो रहे।
बाध बाध देत है समाध ऊर्ध्व रेतन की। रंकन अगाध आध व्याधन ढर्‌यो रहे।
ग्वाल कवि कहे पर घर का अपर घर। थर थर काँपैं तऊ नेक न डर्‌यो रहै।
एसो सात जबर निरखि रवि डरकर। हरबर घाम घन मकर पर्‌यों रहै। ६१।

कवित्त

कासमीर कारीगर काम के कमाये भये। कुंजदार क्यारिन में पसमीनी फरसें।
सेज मखमली पर मैनका सी मदभरी। मद को मुरादभरी मानिक सी सरसें।
ग्वाल कवि चादर सँकरी हो सरीर पर। आतस अनंग हो को अंगन में परसें।
समेके खिले पे खेल के खेले पें दिले। इतने मिले पें सीत दूरहू न दरसें। ६२।

कवित्त

कातिकादि चारों मास तखत बिछाई बैठ्यो। बदल सजल जग छत्र छबि छाई है।
तब तब मेह धार चौंर चारु ठोरियत। सुरहर पौन को वजीरी सरसाई है।
ग्वाल कवि बरफ बिछायत कोहर दल। ठिरनी प्रबल नीकी नौबत बजाई है।
शीत बादशाह सोन दूजो कोऊ दरसाय। पाय बादशाही बाँटे सबको रजाई है।६३।

शिशिर ऋतु वर्णन

कवित्त

रेनि घटि घटि कै बढ़न लाग्यो दिनमान। लागी है बढ़नि गरमान भान संग की।
शीरी शीरी पवन हितान लागो कबहूँक। धीरी धीरी आयत सुगंध हर रङ्ग की।
ग्वाल कवि कहे ठंड साँझ तें सवारे लग। उठत तरङ्ग तामें मदन उमंग की।
शिशिर में शीत की लगी है हौन डगमग। मग मग होन लागी जगमग रङ्ग की।६४।

बसन्त ऋतु वर्णन

सवैया

फूलि रही सरसों चहुँ ओरजो सोने की बेस बिछायत साँचे।
चीर सजे नर नारिन पीत, बढ़ी रसरीत बरङ्गना नाचें।
त्यों कवि ग्वाल रसाल के बौरन, भौंरन औंरन ऊधर माँचे।
काम गुरू भयो पराग शरू भयो, खेलियें आज बसन्त की पाँचे। ६५।

कवित्त

खेले बाग बाग में पगिहै प्रेम पाग में सु। लाल लाल पाग में टके है गुलताग में।
छके है रङ्ग राग में जके है जंग जाग में। भीजे रङ्ग राग में परे है अंग थाग में।
ग्वाल कवि दाग में रहे न होय लाग में। रस में समाज में मलिंद ज्यों पराग में।
कोई फबि फाग में अनेक अनुराग में सु। में तो विरहाग में लिखन निज भाग में।६६।

कवित्त

केती विरहाग में झरें तें मुख झाग में सु। दागी मे न दाग में बसी है ते विराग में।
प्रीतम समाज में जु में तो अनुराग में सु। (में तो) गूलताग में लगाऊँ लाल पाग में।
ग्वाल कवि राग में पगो हों प्रेम पाग में सु। डारौं अंग राग में भले जे बिच बाग में।
मेरे भाल भाग में विरंच या सुहाग में सु। लेख्यो मोदलाग में सु खेलों फवि फाग में। ६७।

कवित्त

प्रान पति आगम सुनायो सखियां न आन। करे है सुजान वातें कुलकुल की।
धायके वहाँ ते हाल हीरन जटिल हौज। केसर लबालब कराई खुल खुल की।
ग्वाल कवि प्यारी पिचकारी करधारी जोर। जेसी छबि छाई झुमकान झुलझुल की।
लाल लाल गिंदुक गुलाल लाल लाल गुल। गालिब गुलाब गोल गादी गुलगुल की। ६८।

कवित्त

एरी नन्दलाल ने मचायो ख्याल फागुन को। होत धुनि नीकी मुरली की करताल की
येते में अचानक ही राधिका रसीली आय। रंगन भिजोये भरी दोरी कोर भाल की।
ग्वाल कवि कुमक करी है कुंकमो की जब। रही न सुधि कंचुकी कच की न चाल की।
कूलनि उताल की सों किलकी खुसाल की सों। भरि भरि मूंठी लाय डारत गुलाल की॥ ६९॥

कवित्त

जाउगे कहाँ कों नंदगाम कों बबा के पास। खेल खेल होरी रंग बोरी इहि ठौर अब।
खेले तो जरूर पैन मानहु बुरो जो तुम। खेलो अजू जौक ते जितेके जिय दौर अब।
ग्वाल कवि प्यारे वह आई पिचकारी बचौ। प्यारी मूँठि मेरी हू बचाओ कछु तौर अब।
आँख में गुलाब गयो हाहा लाल पैयों परों। नेक रहो रहो रहो डारो जिन और अब।७०।

कवित्त

गावत धमार धूम धाम धाम धाम माँहि। धीर न धरात मौज फौज कै नगीच में।
बाल पिचकारी[1] की चलावनी बिहारी पर। गारी दे बिहारी नचे अबीर अलीच में।
ग्वाल कवि कहै ऐसें हुहुकी मिल मिल में। भूली सुधि देह गेह नेह नद बीच में।
प्यारी लाल छाप फूल मालन में पाई उत। लाल ने बुलाक पाई केसर की कीच में॥ ७१॥

सवैया

बालम मेरो न माने कह्यो करे, जंग और मंत्र घने बसुठी में।
पूछत व्याहित सों तुमसों, चितसों हटा दीजे बताइसुठी में।
त्यों कवि ग्वाल गुलाल की वादिन, देखी चलावनि री अनुठी में।
लालमुठी में कहा करतूज भयो, जिहि, ते वह लाल मुठी में॥७२॥

मूलपाठ—१. पीचकारी।

सवैया

फाग की फेल करी मिली ग्वालन, छैल विशाल रसालन ऊपर।
लाल की लाल मुठी को गुलाल पर्‌यो डहि बाल के बालन ऊपर।
यों कवि ग्वाल करे उपमा सुखमा, रही छाय सु ख्यालन ऊपर।
पंख पसारि सुरंग सुवा उड्‌यो, डोले तमाल की डालन ऊपर॥ ७३॥

सवैया

फाग में राग की लाग दिली खिली आँख मिलामिली प्रानन बारें।
बालके ऊँचे उरोजन ऊपर लालदई पिचकारि कीधों सारे।
तें उचटी कवि ग्वाल तबे तिहि की सुखमा उपमाजु उचारे।
मानो उतंग उमंग भरे सु छुटें हक रंग फुहारे हजारे॥ ७४॥

सवैया

सुन्दरी आवे अंगारी चली भली भाँति अदाय बतावत है।
श्री नन्दलाल चलावत कुंकुमे सूधे सफा सरसावत है।
ते लगें ऊँचे उरोजन पें कवि ग्वाल प्रभा दरसावत है।
हास के हेतहि कुम्भन पे मनो मैन गुलेल चलावत है॥ ७५॥

सवैया

जाहि लगे सो भजे न अंगे वहांत्री देई गिरे पै सके नहि ऊठे।
जो कहुँ कोऊक कूदि चलेतो तहाँ बिच ले जहाँ रंग अनूठे।
त्यों कवि ग्वाल खिलाखिल खेल में खीझे खिले बिन खोरि में रूठे।
मूठें गुलाल की बाल की यों पलैं ज्यों चले मंत्र विशाल की मूठें॥ ७६॥

सवैया

कैसे कलंक बचे दूपयाग में, झेलि है ग्वारिया भूरि बने।
भारि है फेंकि गुलाल की डारन, रेखें शरीर में पूरि बने।
यों कवि ग्वाल भिजोइहे रंग, भजा भज जातन दूर बने।
न्हाये बने जल जापें बने, जमुना पर जाये जरूर बने॥ ७७॥

सवैया

आवत ही ब्रजनारी जहाँ पिचकारी बिहारी चलाई उताल में।
दौर कें अंगना एक अचानक ले गह पीत पिछोरिया हाल में।
ढूंढ़ि थके कबि ग्वाल गुलाबन पाइ कहूँ वह राज के ख्याल में।
दे गुलचा वहो बाल मसाल सी जाय मिले है मसाल की माल में॥ ७८॥

कवित्त

आली ललितादि लैकैं चाली वृषभान सुता। फाग की वहाली लाली जोबन न साकी सब।
तास बादलेन के झलाके झला झलकत। चंद को कला की चंचला की छवि थाकी तब।
ग्वाल कवि आई नंदगाम की डगर पर। जगर मगर जोति जागि है मजा की जब।
फैल को वकैया आगें मिलिगौ छबीलो छैल। गैल रोकि रोकि कहे सैल करौ यहाँ की अब। ७९।

कवित्त

कौन से गरीब कौ तूं बालक है बिगरेल। गैल रोकि लीनी पर पाछें पछताइहै।
गैयाँ नवलाख बाबा नंद की सुनी कि नाहिं। ताको में कन्हैया कहा हमकों बताइहै।
ग्वाल कवि जोपें तूं लडाइतो है नंदजू को। तोपें का लडेती वृभभान की भिजाइहै।
या तो इत आवती न आई तो बबा की सोंह। खेले बिनहोरी अब केसें जान पाइहै।८०।

कवित्त

जानी हमजानी तोहि बाँधिकै नचायो हुतो। पाइपरि आयो बचि सूधोहोत सीव को।
गैया नव लाखको[1] सुनायत जो ताले बरी। ऐसे किते इनके जिवावत है जीव को।
ग्वाल कवि जोपें फाग खेल्यो ही चहत अब। तोपै खेलि हमसों ये साथ की परीन को।
खेल में बराबरी को दावो होत आयो सदा। बेटी यह भूपकी तू बालक गरीब को।८१।

कवित्त

तालेवरी रावरी न छीन हम लैहे कछू। लागि[1] है न उडिकें गरीबी तुम्हें खोरी सों।
राजन सों खेले रंक रंकन सों खेले राजा। ह्वै करि निशंक भरे अंक सदा बोरी सों।
ग्वाल कवि केती कला खेलो पेन मानो एक। जानो घर कठिन परेगो या मरोरी सों।
चोरी सों कि जोरी सों कि तोरी सोंह होरी आज। खेलेंगे जरूर हम गोरी सों किशोरी सों। ८२।

कवित्त

नंद जसुदा के सुने सूधे हो सुभाय सब। स्याम तुम मीले कहा बाँकपन जारियाँ।
खेलवो हू सबतें बबूल करि लीनो लला। तोमें तों पिछौरा पुसाखी दूत भारियाँ।
ग्वाल कवि ज़ब घर जैहे का बने है बात। कैसेकें छिपे है जो लगेगी पिचकारियाँ।
रेलिये रंग औ न खेलिये दगा को खेल। मेलिये गुलाल सूधे दीजिये[2] न गालियाँ।८३।

कवित्त

चाहो करि आओ जरि तामके लिबास तुम। चाहों सादे धारो रंग डारिहै पें डारिहै।
चाहो जाइ कंस पें पुकारो या पुकारो मत। फागुन की गारिन तें गारिहै पें गारिहै।
ग्वाल कवि जी में भल मानो या न मानो कछू। है न वरसानो आँगी फारिहै पें फारिहै।
घूंघट झरोखे झुकि झाकि हों अनोखे चोखे। तोपें हम धोखें मूठी मारिहैं पें मारिहै ८४।

मूलपाठ–१. लागी २. दिजीये

कवित्त

बोली तब बाल भलें आओ नंदलाल अब। देखे ख्याल तेरो भाँजि आयो फासि फासि कें।
सुनत गुपाल रंग अंगन पें डाल डाल। कुंकुम उताल खूब मारे कसि कसिकें।
ग्वाल कवि स्यामे गहि कोइक नचावे भले। कोइक छुडावें फेर आवें धसि पसि कें।
तानें ललिता पें मूठि डाले राधिका पें आये। चढ़ि चौंतरा पें देत तारा हँसि हँसि कें।८५।

सवैया

जा दिन तें जनमें तु स्यामजू तादिन तें तुमको यही भावे।
दूध दही मही चाखन चोरी औरु चुराय के बात बनावे।
त्यों कवि ग्वाल गुलाल चुराइ कें आँख चुराय कें आँख में नावे।
साहस तेरो तके जब लाल जो सामने बोलिकें मूठि चलावे। ८६।

कवित्त

हूजे सावधान अब सामने ही ऐहे हम। कहिके इतेक अब बेलिन में पिल गयो।
गहर गुलाल औ अबीरन की मूठई दे। धुंधकरि दीनि मनो भान आज गिल गयो।
ग्वाल कवि वाही धूम धाम में छबीलो छैल। ढूँढ़लीनी छिन में छबीली जामें दिल गयो।
हिल गयो हेत मंत्र किल गयो मोहन को। खिल गयो खेल खेल ही में मिल गयो।८७।

कवित्त

आइ केरी राधिका जमाइ के जुवति जूथ। फगुवा मचाइ केख दी ही छबि छाइ के।
जाइके तहाँई पे हूँ फास्यो वे उपाइ केरी। घाघरो पिन्हाइ कैं लयोरि में नचाइके।
गाईकें कवि ग्वाल लाई के गुलाल लाल। हँसत हँसाइ के में कुच गहे धाइके।
नेनन लजाइ कैंसु नैनन रिसाइ कैंजु। सैनन चलाइ कें गइ हमें बुलाइ के। ८८।

कवित्त

कह्यो नंदगाम ते नवल नंद नंद आज। फागुन समाजन के साज सब सजिकें।
गैल गैल ग्वालिन की ऐलसी मची ही तहाँ। छैल बके ऐल फेल वेऊ हँसे लजिकें।
ग्वाल कवि केतिन के कुच पिचकारि मारि। मुख मुरकाय कर्यो ख्याल एक वजिकें।
एक की सु आँखिन में भरिके गुलाल लाल। बाल दूजी के कपोल चूमि चले भजिकें।८९।

कवित्त

फागुन की फैलके गवैल औ उफैल लै लै। वंसीको वजेल छैलकीनी घन घोरी है।
लेकें पिचकारी एक नारी कों चलाइ चारु। वाने पिचकारी गहि ऐची निज ओरी है।
ग्वाल कवि लाल तब ख्याल कों हिलाये हाथ। परीसी परी पें जीरि आपहू परोरी है।
हँसि उठी गोरी डारे रोरी भरि झोरि जोरी। जोर जुरी आज कहे साँची यह होरी है ९०

कवित्त

जो पे बेगुनाही तो गुनाही सदा रावरो मैं । आपे जो गुनाही जो न खेलो खेल धूमके।
होत हुरिया इन लुगाइन की कूकें भलें । पिचकी अचूकें चले बूके लूम लूम के ।
ग्वाल कवि कैसो लाल लायो हों गुलाल हाल । पाऊँ तो हुकम तो लगाऊँ भाल भूम के ।
झूमके जड़ाऊ झूम झूम के झपाक हाथ । लेत ये कपोल गोल गोरे चूम चूम के ।९१।

कबित्त

मोहन औ मोहिनी[1] ने फागकी मचाइ लाग । बाग में बजत बाजे कौतुक विशाल है ।
केसर के रंग बहे छज्जन पें छातन पें । नारें पे नदी में ओ निकास पें उछाछ है।
ग्वाल कवि कुंकुम की घालन रसालन में । तालन तमालन पे फूटत उताल है ।
गंज गुल लालन पें लालन पें ग्वालन पे । बाल बाल बालन पे घुमड्यो गुलाल है ।९२।

कवित्त

आइ एक ओर तें अलीन लें किशोरी जोरी । आयो एक ओर ते किशोर वाम हाल पें ।
भाजि चल्यो छैल छड़ी छोर पें छबीलिन में । छड़ीकों उठाय धाय मारी उर माल पें ।
ग्वाल कवि हो हो कहिचोर कहि चेरो कहि । बीचमें नचायो मैं इतत थइ ताल पें ।
ताल पें तमाल पें गुलाल उड़ि छायो एसो । भयो एक और नंदलाल नंदलाल पें ।९३।

कवित्त

फाग में कि बाग में कि भाग में रही है भरि । राग में कि लाग में कि सोंहे खान झूठी में ।
चोरी में कि जोरी में कि रोरी में कमोरी में । कि झूम झकझोरी में कि झोरिन की
की ऊठी में ।
ग्वाल कवि नैनमें कि सैनमें कि बैनमें कि । रंगलै न दैनमें कि ऊजरी अंगूठी में ।
मूठी में गुलाल में ख्याल में तिहारे प्यारी । कामे भरी मोहनी सो भयो लाल मूठी में ९४

कवित्त

आज नंदलाल संग ले ले गोप ग्वाल बाल । खोले ख्याल दे दे ताल गावनि प्रसिद्धि की ।
कीरति की कुँवरि किशोरी गोरी लाखन लं । जोरी करी होरी होरी राति रूप रिद्धि की ।
ग्वाल कवि जुरि जुरि दे दे मूठि धूरि धूरि । झेलैं रंग मुरि सीमान नेह निधि की ।
केसर वही सो करे रोष के फानन पीरे । उड़िके गुलाल करी लाल लटे विधि की ९५

वसन्त वर्णन

कवित्त

अलिन के झुण्ड ते वितुण्ड झूमे ठौर ठौर । धवन तुरंग रंग रंग के गवन साज ।
ललित कुसुम्भ रथ कोकिल लियादे जादे । मैन फौजदार बन्यो औज मौज शिरताज ।
ग्वाल कवि कहै बेस बागन के धारन में । गइके गुलाब धरे रतनप्रभा समाज ।
आयो रितुराज तेरे उरनि नजर लैकें । लीजें आज यदुराज ब्रजराज महाराज ।९६।

मूलपाठ–१. मोहीनि ।

कवित्त

फूलि रही सरसों सरस खेत खेतमाँहि। अखिल अँगारन को पुंज सो सुहायो है।
किंशुक कुसंभ मंजु मुगदर मौजदार। पवन मरोर बाल जाल सरसायो है।
ग्वाल कवि कहै डारे दल बिन लेजिम लैं। कोकिल मलिंद वृंद पहन को छायो है।
वीर बलवंत ब्रजकंतजू वसंत आज। कुस्ती के दिखाइबे को जेठो बनि आयो है ॥९७॥

कवित्त

बाजी बाजी बिरियाँन शीतल उसन बात। मंद मंद तुतरात बालक सरूपिया।
जेठ की जलाका सी सलाका होय आवे कभू। सौरभ सुहावे तरुनायन अनूपिया।
ग्वाल कवि कहें अंग थर थर काँपे कभू। कछू न बस्याई जून चाहे भयो धूपिया।
आनंद के कंद रामचंद के अनंद देत। आयो छविवंत ह्वै वसंत बहुरूपिया। ।९८।

कवित्त

बाजत मुरज मंजु भारत मरोरदार। बीनको बनाव तुंब वृंद बिलसंत है।
ताल की आवाजें साजें चटक गुलाबन की। सुन्दर सुरंगी भौर गुन्ज सरसंत है।
ग्वाल कवि कहे तार तानत अमरबेल। साजे सुरकोकिल कुहुँक हुलसंत है।
राजे महाराजे रघुवीर वीरजू के जागें। आयो बने बानिक कलावंत वसंत है।९९।

कवित्त

बाग बन उब्बे पुब्बे फवनि अनेकनसों। सरसों प्रसून पुखराजन को छायो है।
मोतिये सु मोतिये सेवती सरस हीरे। ठौर ठौर बौर झौर पन्नन को लायो है।
ग्वाल कवि कहत कुसुम मंजु मानिक है। सौरभ पसार पुंज पानिप सुहायो।
शोभ शिरताज ब्रजराज महाराज आज। रितुराज जौहरी जवाहर ले आयो ह।१००।

कवित्त

दीसे जात जातके बिटप पाँत पात बिन। भाँत भाँत अरे पें डरावे छल छंद सों।
फूले है कुसुम कुल किंशुकहू बन बन। मानहु हुतासन की लागनि अमंद सों।
ग्वाल कवि त्यों ही नित गरल रसंत ताहि। कहत सुधाधर मयंक मतिमंद सों।
आयो है बसंत बिरहीन के नसंत काज। कहियो इकंत वा विलासी ब्रजचन्द सों।१०१।

कवित्त

ऊधो यह सुधो सो संदेसो कहि दीजो जाय। स्याम सों सितावी तुम बिन तरसत है।
कोप पुरहूत बचाई वारिधारन तें। तिनपे कलंकी चंद विष बरसत है।
ग्वाल कवि शीतल समीर जे सुखद होते। वेधत निशंक तीर पीर सरसत है।
जेई विषनागिन में बरत बचाइ हुती। तिन्हें विरहागिन में बारत बसन्त है।१०२।

कवित्त

ध्यानी जे इकंत के महंत मति ग्यानी तिन्हें। कीने रसवंत तंत में न फौजवारे नें।
कूजत है कोकिला कसाइन कलंक भरी। कतल करी है री मलिंद मतवारे नें।
ग्वाल कवि बाँधी सलतंत क्यों न एती तहाँ। कंत विरमाये जिहि देश दुखहारे ने।
हाय हाय वीर विरहागिन में बारि दई। बैरी बलवंत या बसन्त बज मारेने।१०३।

सवैया

नेह निवाह चलो ब्रजचन्दजू चन्दमुखी हिहूलत हूके।
बौरन बौरन भौरन झौरम कीनी गुन्जार सों वेधें अचूके।
त्यों कवि ग्वाल कुसंभ पलासन डार पें एसें अंगार भभूके।
कारि कसाइनि कूर कलंकित कंकिनि केलियाँ काढती कूकें। १०४।

कवित्त

जानि जिय आगम निदाघ रितु ग्रीषम को। विषम वियोग बान आनहियो पैठ्यो है।
कीने पात पात बिन बसन विशेष भेष। डारे रही सूख रूख रूख मैंन ऐठ्यो है।
ग्वाल कवि पुहुम पलास के सुरंग रंग। दीसत अभंग ये कछु इक अमेठ्यो है।
मानो रितुराज महबूब के मजेमें मजि। बन बनि आशक जुखाइ गुल बैठ्यो है।१०५।

कवित्त

पीरे बन बाज अनुराग भरे भाग भरे। अंग अंग रंग की उमंगन में पैठे है।
पीरे ही फरस पर पीरे ही वसन सन। पीरे ही रतन तन अतन अमेठे है।
ग्वालकवि पीरे गोल गेंहुवा पलंग पीरे। पीरे पान छाये पीरे हारहार ऐठे है।
है न ये बसन्त ह्वै बसन्त रहे राधिका के। दोऊ या बसन्त में बसन्त बनि बैठे है। १०६।

कवित्त

कूकें सुनि कोकिलान धोर को किला न रहे। आने कोकलान को कलान नजरें नहीं।
फूल से कुल कुसुमन कुसमन कुल आली। कुसमन हिये दुसमन ही डरे नहीं।
ग्वाल कवि किये परये वियोगनतें। परचे अँगारन सें परचे टरे नहीं।
ऐसे विसरे न मोहि नेको विसरे न हाइ। प्रान निसरेन ये पी प्रान निसरे नहीं।१०७।

कवित्त

त्रिविधि पवन परवानो पहुँचायो लाभ। तामे लिख्यो हाल सो सुनाऊँ बिन ढील है।
याते मृगनैनी प्रानगढ़ तजि आओ पास। नाँहि सो ढवाऊँ भेजि भौर पुञ्ज फील है।
ग्वाल कवि किंशुक कुसुम फौज ऐहे फेर। गहके गुलाब जोले करि डौर खील है।
कंत और नर को पढ़ायो यह आयो छायो। रतिकंत साहब वसन्त सो वकील है।१०८।

कवित्त

वाह वाहे आमकों बिहारी लाल ख्याल भरे । बाला बिरहागी तची अब न तचेंगी वह ।
बानी कोकिला की विषधार सी पचायो करी । अब लों पची सो पची अब न पचेंगी वह ।
ग्वाल कवि केत उपचारन सच्चाई करि । अब लों सची सो सची अब न सचेंगी वह ।
आयो पंचबान ले बसंत बजमारो वीर । अब लों बची सो बची अब न बचेंगी वह १०९

कवित्त

सरसों के खेत की बिछायत बसन्ती बनी । तामें खड़ो चाँदनो बसन्ती रतिकंत की ।
सोने के पलंग पर वसन बसन्ती बेस । सोनजुही भाले हाले हिये हुलसंत की ।
ग्वाल कवि प्यारो पुखराजन को प्यालो पूरि । प्यावत प्रियाकों करे बात बिलसंत की ।
राग में बसन्त बाग-बाग में बसन्त फूल्यो । लाग में बसन्त क्या बहार है बसन्त को । ११० ।

इति श्री ग्वालकृत षटऋतु सम्पूरणं ।

अथ अन्योक्ति प्रारंभ

तोतान्योक्ति

जाइ जिन तोता नारिकेर के बड़ेरे तरु। कौन अब धार जातें छिलका छिले है तूं।
छीलहू लियातो फेर फूटि है न तेरे पास। फोरि हू लियो तो गरी गरी को चवे है तूं।
ग्वाल कवि यातें लघु तरु पें विरमि रहु। बोज औ बकुल बिन सुफल चितै है तूं।
श्रमतें विनाही बेस किसमिस के झूमकागन। झूम झूम खैहे स्वाद लैहे सुख पै है तूं।१।

शिरीषान्योक्ति

पंकज गुलाब गुल मूल के महित सदा। चम्पक कों करकश गन्ध अति घेरे है।
यातें अहो शिरिष सिरफ एक तुम्हें जान। आयो दूर देश तजि अलिकी सु डेरे है।
ग्वाल कवि सुखद सबेई विधि ताक्यो तुही। पूजि है तु आश विसवास हिय मेरे है।
आयो मैं उछाहतें सुवास रस चाहिबे कों। आमें अब नेह को निवाह हाथ तेरे है।२।

भ्रमरान्योक्ति

मालती शिरिष औ कंदब के कंदबन तें। फैलत सुगन्ध दूर ही तें अति स्वच्छ है।
दौर दौर गयो जिन जिन पें जबेई तबे। पास हू गये मिलि परिमल लच्छ है।
ग्वाल कवि आगें केवडान की लपट लागे। धाइ मथो तिनही के धोखे खोलि अच्छ है।
पास पहुँचे तें पाई वह न सुवास रास। उडि न सकत कियो कंटक विपच्छ है।३।

घनान्योक्ति

शरद हिमन्त अन्त करिकें शिशिर तन्त। वितयो वसन्त गार्‌यो ग्रीषम कों थम्ब है।
आइ अब पावस समाज इक ठौरो भयो। घेरो भयो घनो फूल्यो बन नि कडम्ब है।
ग्वाल कवि त्रिविधि समीर को अण्डबर ह्वै। अम्बर में धनुष लखायो विकलम्ब है।
ये हो घन दीजे स्वाति बुन्द के कदम्ब मोहि। अम्ब की दुहाई एक तेरो अवलम्ब है।४।

मालाकारान्योक्ति

ऐके बागवान तें लगायो है रसाल पौधा। तासुकी वहालरीत पूर करी चाहिये।
तल ही सिरफ मूल मोंहि भर देइ वेते। चलत न काम स्वछा भूर करी चाहिये।
ग्वाल कवि देव की झुकाव की तरफ चाहे। वाटहू जातें नैको दूर करी चाहिये।
शीत धूप वरषा निवारिन निवित्त ताकों। त्रनन की छाया हू जरूर करी चाहिये।५।

भ्रमरान्योक्ति

गहरे गुलाबन के खेत ते तजे अचेत। जाइजो कमल पैं तौ कौन प्रतिबंध है।
सेवती न सेई ते न जान्यो कछु भेऊ अजो। चंपक तें चापो जहाँ हित को निबंध है।
ग्वाल कवि कहें क्यों बबूर के सुमन भ्रमे। बैठे तें छिदेंगी तेरी तम तन संध है।
पीरे पीरे देखि भयो तीरे तीरे याके अरे। मधुकर अंध यामें रस है न गंध है।११६।

गजान्योक्ति

बल में अपार देख्यो दल को सिंगार चारु। उथल पहार डारे, थल को न कोटी है।
पुष्ट-पुष्ट थंबन में पाये पग चार सुष्ट। पुच्छ पृष्ट पाँसुरी हु तुष्ट बोटी बोटी है।
ग्वाल कवि जैसो कुंभ कान दंत तुंड तैसो। तैसी फूतकार और चितार अति मोटी है।
ऐरे गजराज और साज सब ठीक तेरे। एपें या दराज देह माँहि आँख छोटी है।११७।

उलूकान्योक्ति

जाहिं ते विकास होत पदमिनि पुंजनि को। पहुँचे सुवास भाँति भाँति देवतान कौं।
जाहिं ते उदित होत उदित मुदित कोक। कोकी शोक ओक नाश करैं बिछुरान कौं।
ग्वाल कवि जाहिते उजेरो जग माँहि होय। हेरो परे अखिल बसेरो हरजान कौं।
जाही भासमान कै प्रकासमान होइ वेंतें। भाखत उलूक भयो रोग आसमान कौं।११८।

काकान्योक्ति

वाके चोंच चरन अरुन दोऊ सुनियत। याके मुखकारो पाय-नीले कहियत है।
वह मानसर को बसैया बिलसैया वर। यह नीच गैरहु लसैया लहियत है।
ग्वाल कवि वह मुकताहल चुनत नित। यह मंद वस्तु भाखे देखे दहियत है।
वह बोले मिष्ट यह दुष्ट करे काँइ काँइ। हंस को दिवान कहा काग चहियत है।११९।

कमलान्योक्ति

केतकी को केवड़ा को सेवती गुलाबन को। मधु को पिवैया औ करेगा चंपा चौर है।
मालती पे माधवी पें मोद को मनैया महा। ठौर ठौर खुसबो की गहकत जौर है।
ग्वाल कवि सदा तें पुराननतें सुनी बात। रात कों रखत मूँद भौरें कंज झौर है।
अजब अनूठो अदभूत अरविंद यह। जाने दिन रात राख्यो मूदि भले भौंर है।१२०।

पयपानहारान्योक्ति

धन्य धन्य तोहि मोहि जानिकै अनाश्रित सों। कियो उपकार धरियातु चतुराई को।
घेर लायो गैयाँ एसी और के न आवें हाथ। पोंछि पुचकार दुही गेह चंचलाई को।
ग्वाल कवि कहे ओटि ओटि अति मीठो कियो। कहाँ लौं बखानों गुन रावरी भलाई को।
पूरि सबकाज अब करत अकाज काहे। प्याइबे कों ल्याये भलो बासन खटाई को १२१

सिपाहान्योक्ति

ऐठी वेठी पांग बाँकी भोइलों झुकाई राखें। पाछे लटकाइ राखें पैंच वांकवाने सौं।
अकड़ि अकड़ि चले पकड़ि पकड़ि तेग। जकड़ि जकड़ि ढाल बाँधे इतराने सों।
ग्वाल कवि कहे पैशक बज तबल लेकें। निज बल भाखें राखे काम न लजाने सों।
लेकरि तमञ्चा चोट चार की बरूद बाँधि। बनिके सिपाही जुठ्यो चाहे तोपखाने सों।२२।

गायान्योक्ति

तेरे ही थनन की हिय में आश लगी रहै। जगी रहै छुधा मोहि अति अधिकाइ कैं।
छुटे छीर धार कितने ही पिये आइ आइ। मेंने करी कौन तकसीर भोरे भाइ कैं।
ग्वाल यह साखी में तो बछरा तिहारो दीन। दन्त को न धाइक न पीयक दुखाइ कैं।
एरी माइ गाइ अम्भू प्यावे तो भली है बात। ना तो फन्द काटि चारो चरु कहूँ जाइ कैं। २३।

लाल औ सुर्ख कहे हमसों जिन पालिबे की गति ने कली है।
देखि युगो तुही आयो हुतो पर पेट भर्‌यो नहि बेकली है।
त्यों कवि ग्वाल करीसो करी तुम में कहा त्यागहु टेक ली है।
जाल में आइ फँसे तो फसे यह नेह की रीति निवेकली है। २४।

इति अन्योक्ति

अथ प्रस्तावक नीति कवित्त

पाखण्ड सिद्धी विषे कवित्त–यमक

विमल विभूत धारें चाहत विभूत फिरे। पंचभूत मोहि भूत थापें होत जैसे है।
तेवर रंगीन राखे तूम्बर से गावे फेर। काहूँ तें कहत माँगि तूम्बर हमे सें है।
ग्वाल कवि कहे फेरें मनका विकारवे न। मनका फिरावें लोभ मनका धरे से है।
सिद्धि तौ न सिद्धि पर सिद्धि रूप बनि बनि। करे भोग सिद्धि प्रसिद्धि सिद्ध ऐसे हैं।

कवित्त–यमक

वासना विविध विधि भसम करी न गर्द। भसम को गोला जो पुत्तायोतो भयो कहा।
कामादिक पंचकतें भयो न भगों हौं कभू। वसन भगौ हौ रंगवायो तो भयो कहा।
ग्वाल कवि कहे जातवेद तज दियो जिन। जातवेद सों तन तपायो तो भयो कहा।
अलख में मन को लगायो छिन एक हन। हार हार अलख जगायो तो भयो कहा।२।

कवित्त

जाकी खूब खूबी खूब खूबन के खूबी इहाँ। ताकी खूब खूबी खूब खूबी न भगाहना।
जाकी बदजाती बदजाती इहाँ चारन में। ताकी बदजाती बदजाती व्हाँ ऊराहना।
ग्वाल कवि येई परि सिद्धि सिद्ध रैहै पर। सिद्ध वही जाकी है इहाँ वहाँ सराहना।
जाकी इहाँ चाहना है ताकी उहाँ चाहना है। जाकी इहाँ चाह ना है ताकी उहाँ
चाह ना ॥ ३ ॥

नेह निबाह विषे

चाहिये जरूर इनसानियत मानस में। नौबत बजे पें फेर भेर बजनो कहाँ।
जात औ अजात कहा हिन्दू औ मुसलमान। जातें कियो नेह फेर तातें भजनो कहाँ।
ग्वाल कवि जोक लिये शीश पें बुराइ लईं। लाजहू गँवाई कहो फेर लजनो कहा।
यातो रंग काहू के न रंगिये सुजान प्यारे। रंगे तो रंगेई रहे फेर तजनो कहा ॥ ४ ॥

जीविका विषे ब्रह्म उपालंभ

आवत जरा के जड़ बुद्धि होत साँची सुनो। याही ते सठयानोरे विरंचि गुनखान है।
जीविका विहीन क्यों बनाये जन जग बीच। जीविका के आसरे रखेंगे तन प्रान है।
ग्वाल कवि जाहर जहर होत जीविका तें। बाढ़त अछेइ जप जस को निदान है।
जीविका विहीन है न जीवन सु जीवन को। जीवन मरे तें जिन्हें जानस जहाँन है।५।

अस्तोदय विषे

देख्यो दुनिया में दौरि दीरघ तमासो यह। जब लौं सुदिन वीर सब लौं करार सब।
आनँद अछेह में सनेह करे गेह तजे। देह कौं गीने न धूप मेह के विचारे सब।
ग्वाल कवि सरस सुधा तें बैन भाखें फेर। अति अभिलाखे साखें पूरत अपार सब।
छोटे कहा मोटे है न टोटे के सँघाती कोऊ। भये दिन खोटे तब लोटे बन्धु यार सब।६।

चार पुरुषार्थ विषे

आय अवनी पे जात जीवन वृथा है बोत। कीन तीन बात ये न समय समाती जिन।
आनकान सान गुनमान सों दरव खान। आन सक्यो नाहि करी कीरति दिखाती जिन।
ग्वाल कवि पत जाम जप में जुर्‌यो न जाय। जानी जगदीसुरी न जोति सरसाती जिन।
चारु चन्द वदनी के चूमिकें कपोल गोल। खोलिकुच कचुंक लगाई है न छाती जिन।७।

मूर्ख राजा विषे

मूरखतें मन लावें सदा अरु मस्खरी में सरदार छ्ये सब।
पातुर कों पहुँचावत जे फिर वेई मुसाहब दीह भये सब।
त्यों कवि ग्वाल भले पहुँचैं नहीं बीचन नर्क के बीज वये सब।
है असराफन की गरदी गुन के दरदी उठि भागि गये सब॥ ८॥

दुर्जन सज्जन विषे

कौल हजार करैं कितने फिर एक हूतो तिनमें निबहे ना।
होइ सके न रती भर काम औ तोलन की भरे साख गहे ना।
त्यों कवि ग्वाल घने इमि दीखत पें न वे पुरूष पसू हुते है ना।
है बिरले नरसो जग में जो कहे सो करे औ करे सो कहेना॥ ९॥

कवित्त

होय जो तुरङ्ग ताहि कूदिवो शिखावे भले। कैसेकें शिखावे ये पे शीतलाके वाहने।
होय जो सुजान ताहि कविता सुनावे परी। मूरखें सुनावें तो करे जो पेर दाहिने।
ग्वाल कवि कहे करी कुम्भ कौं विदारैं सिंघ। जंबुक जमा तन को जोरदार काहने।
मानुषे रिझाऊँ पे रिझाऊं कौन भाँत ये जो। मानुष की मूरति बनी है बीच पाहने।१०।

उद्यम द्रव्य विषे

जिसका जितेक साल भरकें खरच उसके। चाहियें तो दूना पें सवाया तो कमा रहै।
हूर या परीसा नूर नाजनी सहूर वारी। हाजिर हुकम होय तो दिल बथमा रहै।
ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सौहबत हो। यादमें गुसैंया के हमेंश बिरमा रहै।
खाने को हमा रहे न काहू की तमा रहे न। गाँठ में जमा रहे तो खातिर जमा रहै।११।

पण्डित और कविन के कठिन कर्म विषे

पहिले तो मानुस को पढिवो कठिन अति। पढ़े ता प्रदेशन में जानो देश निंदके।
फेर अति कठिन सभान में पहुँचि जैबो। पहुँचि गयो तो शत्रु फन हैं फनिंदके।
ग्वाल कवि जोपे लये जीत उनहूँ को तोपे। रीझबो कठिन तन धारे जे नरिंद के।
रीझें तों न देय देइ जोपे तों मधुर बानी। याते हम जानी गुनी गुन ही गुबिंद के।१२।

गुनी गाइक पे जात विषे

मूँठन के मण्डल घमण्ड के उमड़े वही। बाग बलखण्ड बनखण्ड है सघन में।
जिनके सुभाहु निखासित निरस वारे। फूल फूल रहे फूल फूल अनगन पें।
ग्वाल कवि तिनतें हुलास कहुं पावे कौन। मौन करि गौन की जियत है लगन पें।
गुनी गुन गाइक पें ऐसें चलि जात जेसें। भौंर दौर जात है सुवास के सुमन पें।१३।

ईश्वर भजना और संतोष में रहना

रोजगार तेरा रोज लगा है कदम साथ। गम साथ क्या है अब सासक भीना लाने।
जिसने दिया दम वह दम नहीं देगा। यार बेगम गुजार बनाने कियों के दालाने।
ग्वाल कवि हाजिर खुदा की बंदगी में रहु। उसकी पसंदगी के कार सब बजा लानें।
दाना छितराना तहाँ जाना है जरूर अरु। पाना भी वही है जो दिलाना हुक्म
ताला ने ॥ १४ ॥

मूर्ख

बैठबे की उठिबे की बौलिबे की चलिबे की। जानत न एको चाल आइ जग ढाँचे में।
देखत में मानुष की आकृति दिखाई परे पर नर पशु औ परन्द है न जाँचे में।
ग्वाल कवि जानि कें विरञ्चि[1] तुच्छ जन्तुन को। डारै और ठौर लखि ख्याल ही के
खाँचे में।
कूकरतें सूकरतें गर्दभते उल्लूकतें। काढि काढि जीव डारे मानुष के साँचे में।१५।

कवि को खिझाइबे विषे

कविन के अपमानी देह की पतल करी। ताको नाम खण्ड औ मसाले वा कुचाल के।
गगन जलेबि नहिं तमन तिकोने धरी। खेड़ी रमन सेव सगन सम्हाल के।
ग्वाल कवि कहे इस आदि के अवाद सवाद। लाद लाद देवें बहु विजन जंजाल के।
पोसे अतिरोसे जोस जोसे बिन जोसे ऐसें। कविन के कोसें ते परोसें मानो काल
के। १६।

कवित्त

त्यालन के चोसे जैसें मूठके मसोसे जैसें। डाकुन के खोसें जैसें होत बदहाल के।
जहर के तोसे जैसें भालन के ठोसे जैसें। छरेंन के तोसें जैसें रहेना जमाल के।
ग्वाल कवि कहत चुरैलन के पोसे जैसें। पावक के बोसे जैसें विना धर्म जाल के।
रामजू के ऐसे जैसे तापिन[2] के दोसे ऐसें। कविन के कोसें तें परोसें आगैं काल
के। १७।

मूलपाठ :—१. विरंची। २. तापीन।

लबारी के लबारपन विषे

सिंघन के रोमन को जोर पाऊँ जुलिकार। उलिकरि और पाऊँ गंग की निकारी को।
पुंज परना नुन के ढोर पाऊँ जब तब। तोर पाऊँ फूल बीच बाग असुरारी को।
ग्वाल कवि सिंधु की हिलोर पाऊँ गिन गिन। फोर पाऊँ शृंगन सुमेर सुखकारी को।
तारन के तुंगन उत्तंगन बटोरि पाऊँ। पैन छोर पाऊँ काहू काहूकी लबारी को १८

झूठे मनुष्य विषे

द्वार पर झूठ पिछवारे पर झूठ झुक्यो। दोऊ ही किनारे पर झूठ उलहत है।
आँगन में झूठ और दलानन में झूठ भर्‌यो। कोठे माँहि झूठ छत ऊपर बहत है।
ग्वाल कवि कहत सलाहन में झूठे झूठ। सैनन में बैनन में झूठ ही कहत है।
हाथी भर झूठ जाके उर में बसत सदा। ऊँट भर झूठ जाकी मूंठ में रहत है॥१९॥

वचन फेर सरदार विषे

तरल तुरंग रंग रंग के मत्तंग संग। पालकी सुरंग सजेकार चोब कारी को।
भूषन वसन वेश कीमती विविध विधि। भोग करिबे कों पास पाँति बर नारी की।
ग्वाल कवि हाजिर हुकम सब भाँति पूर। पर इतने पे परिजात धूर ख्वारी की।
कौल करि बोल फेर बदलत तुर्त तातें। तौल मौल घटे कठ पोल सरदारी की २०

काम परे मनुष्य की परीक्षा होत

देखे अंग अंग के न मालुम परत कछु। कारे गोरे रंगहुतें जाँचन हुलत है।
एक ही सें सबही सफेद यो सहोसदार। बैठन औचन चितौन अतुलत है।
ग्वाल कवि क्योंहू गुन औगुन न जाने परें। ऐपे एक बात चतुरन में तुलत है।
दाम परे गौहर को एब गुन खुले जैसें। तेसें काम परे नर जौहर खुलत है॥२१॥

दुर्जन विषे

गंगा के न गौरि के गिरीश के न गोविन्द के। गोत के न जोत के न जाये राहगीर के।
काहू के न संगी रति रंगी भेन भानजी के। जीके अति खोटे सोटे खैहे जम भीर के।
ग्वाल कवि कहे देखो नारी कों खसम जाने। धर्म कों पसम जाने पातकी शरीर के।
निमक हराम वद काम करें ताजे जाजें। बाजे वाजे बेटोचोद गुरु के न पीर के २२

कवि पालिबे विषे

वाज गजराज नाज चीतें फोज बकामदार। राखिबो सहज जातें राज उपचार होय।
भाँड बहुरूपिया सरूपिया न चैमन कों। कंचनी कलाँवत को आदर अपार होय।
ग्वाल कवि कविन को राखिबो सहज है न। हमे वही राखे जाके लेख रेखाचार होय।
गुन को विचार होय अति रिझवार होय। उदित उदार होय सुजस लिलार होय।२३।

अंगों प्रति उपदेश

एरे हाथ जोपे बिन आसिख रहे न तोपें । सों ही जे न जोरे हाथ तिनकों तूठ के जिन ।
जोपें चारु चरचा बिना न रहें सोवें चित्त । जेहे हिय दाहक चाहक सों वके तिन ।
ग्वाल कवि जोपें लोभ तो हूँ सों रह्यो न जाय । तोपे जे अदाता ताके बैन रस छके तिन ।
ऐरे द्रग मेरे जो तका तकी तजे न तोपें । तोकूँ जे तके नतिन तन तुहूत के जिन ।२४।

दरीद्रता विषे

सबही के बाँके बोल सहने परत सदा । ढाँके न परत कछु मरमलु कौन तें ।
नैन नीचें करने परत हर एकन सों । बैन झूठे कहने परत छल भौनतें ।
ग्वाल कवि कहे जुलि रचनी परत लाख । लाजतें बँधत बैर प्यार होत मौनतें ।
बृत्ति होत शिथल लचारी कीजु क्रति होत । हित अनहित होत वित्त अनहोन तें ।२५।

भड़ुवा-लुच्चा सरदार विषे

आदर अपार कर शोभा पारवार कर । भाँत भाँत प्यार कर राजी करिबो करे ।
सभा में सुनावे कहे कंठ गज तुरी देवो । लाखन की बात नित ताजी करिबो करे ।
ग्वाल कवि कहे जब बिदा को सुनत नाम । सूरत हराम इतराजी करिबो करे ।
कबिन सौं दगाबाजी दमबाजी ठगबाजी । पाजीन को पाजी महापाजी करिबो करे ।२६

भड़ुवा-दंभी राजा विषे

सौख शेर मारिबे को सभा में सुनावे सदा । स्यारहु न मार्‌यो कभू झाड़ी की झरीनको
हाथ में न जोर यह शेरी के उगइबे को । जिभ्यातें उछार्‌यो करे पुंज शिखरीन को ।
ग्वाल कवि कहे श्री युधिष्ठिर सों साँचो बने । सबहीं को देत दम साम औ धरीन को,
कोई कोई भूप ऐसो बेशरम होइ जात । राख लेत हाथी चारो डारत चिरीन को ।२७।

पंडित निंदा

व्याकरन ज्योतिष कछूक धर्मशास्त्र पढि । द्रव्य औ पदार्थ गुण न्याय के भनत है ।
और कों बतावे ब्रह्म ज्ञान राग द्वेष तजो । आप महाकामी अति ईरषा सनत है ।
ग्वाल कवि द्वै द्वै चार चार शिख शुभ श्लोक । साहित के ग्रंथन के नाम को गनत है ।
आदि अंत एक हू न ग्रंथ गुन मंडित है । ऐसे किते खंडित ते पंडित बनत है ॥ २८ ॥

कलि विषे

ईरषा की सैन लिये कलियुग भूप आयो । झूठ के नगारे सो बजत दिन रात है ।
काम क्रोध लोभ मोह तेग तीर धनु नेजा । अदया अखंड तोप चंद घहरात है ।
ग्वाल कवि जब्बर गसीले गोल गोला चले । टोला कूट बचनों के पूर लहरात है ।
हूजियो हुस्यार पार साँच के मवासे माँहि । पाप की पताका आसमान फहरात है ।२९।

पुनः कलि विषे

देखो कलिजू के राजनीत को तमासो यह। वासो कियो आनि हर एक की अकल पें।
खान दान वारे पान दान लिये दौरत है। गान तान वारे बैठि जोवत महल पें।
ग्वाल कवि कहे चारु चतुरों को चैन है न। ऐस में रहत लेश कूर चढ़े बल पें।
मलमल धारे जे वे घूरन हैं मलमल। परमल खान वारे सोवे मखमल पें।३०।

लंपट व्यभिचारी

माया धारनो तें भाई भैन कहे जासों भै न। काहूको न होइतासों काकी कहि बोले है।
आपसी प्रकृति ताहि मौसी कहि मेले मन। जामें बड़ी मामता हि मामी कहि खोले है।
ग्वाल कवि देखो होनहार कों कहत भाभी। कलिके कलंकी ये विचार भरे डोले है।
जैसे तैसे जहाँ तहाँ जोई मिले सोई बाल। ह्वै कर निहाल काम के लिये कलोले हैं।११।

उदार दाता सोम विषे

बलि सर्वस्व देहि बस्य करि राखे विष्णु। अति उच्चता को अरब चढ़ि सरसात है।
शंकर को रावन नें दे दे शीश शंकरन। भयो तिहूपुर कौं भयंकर विख्यात है।
ग्वाल कवि राम दे विभीषने लंकेश पद। तोरिलई लंक जाकी अजौं बंक घात है।
सुमन को नाव जलहूपें फाटि डूबि जात। दातन की नाव तो पहार चढ़ि जात है ३२

उत्तम मित्रता विषे कवित्त

राम असमसतें तिया लें दशकंध चल्यो। भयो अंतरिक्ष तिय रोदन जु लाख्योई।
जानि निज मित्र सुत वधु कों विपक्ष भई। ग्रिहपथ जटायु उडि वज्र वाक्य भाख्योई।
ग्वाल कवि कहे जुट्यो पंजन तें पक्षन तें। चुंच सर तीक्षन तें रहय पहय नाख्योई।
लक्ष लक्ष घाव पृष्ट वक्ष में प्रतक्ष करि। ह्वै गयो विपक्ष तऊ पक्ष पक्ष राख्योई॥३३॥

पुनः कवित्त

दशरथ मित्र को तनय राम वे पिछान। ताकी तिया हरो दशकंध दुष्ट होत है।
रोदन सुनत उडि जुट्यो है जटायु गिद्ध। छेदि डार्यो ताको तिन कीनो मंद जोत है।
ग्वाल कवि कहे फेर आय व्है विपक्ष गिर्यो। निकर्यो चहत प्रान छुट्यो श्रोन सोत है।
दुस्सह वचन बानमारिबा तज्यो न तोऊ। जाहर जहान में सुमित्र ऐसे होत है॥ ३४॥

पुनः कवित्त

जैसो मुख आगें तैसो पीछे तैसौ ताके मरे। सुख दुःख एक सो चरित्र चाहियत है।
बदलौ न चाहे मन गदलौ करे न कभू। हर लौं लगे वे में विचित्र चाहियत है।
ग्वाल कवि सुक्रत सुबुद्धि मिष्ट हित बेनी। निज कुल माँहि सों पजित्र चाहियत है।
गिद्धप जटायु को सो प्रन घन सत्य शील। सर्वदा सुखद ऐसो मित्र चाहियत है॥३५॥

अधम मित्र विषे

संपति में रहे संग अंग बने रहे नीके। रंग रंग छल बैन बोले हरखाने के।
मित्र के दुपट्टा एक खरचि दुशाला चहै। कर्ज ले न देई बने रूप है बहाने के।
ग्वाल कवि कहे खोटे काम में फसाई देइ। दाइ दाइ खेंचें दाम साथी सीर्फ खाने के।
धर्म को न माने पर पीर कों न पहिचाने। ऐसे मित्र बहुत बिचर या जमाने के॥३६॥

प्रेम करायबे विषे नायिका प्रति दूती वचन

ना रहे संपति नित्य सदा मद छाये अनेक यही भ्रमजार है।
जात वृथा यह वैस वही हर एकन कों हर एक बिचार है!
त्यों कबि ग्वाल सही है वही जो लही जग में रसरीत[1] अपार है।
नेह के नेजन को झिलिबो हिलिबो मिलिबो खिलिबो यही सार है॥ ३७॥

दैव की विचित्र गति

कौन को मालुम ही जग में दशकंध हने जुग वाल प्रमाने।
तूंहै विभीखन लंकपती जिहकी अति सूधता लोक बखाने।
कौरवे जीतिहै यो कवि ग्वाल गरीब जे पांडव पीडित प्राने।
जाने जुगींदमुनिंद न इंद्रसु गोबिंद की गति गोविंद जाने॥ ३८॥

जाकों प्रभु सहाय ताको बिगरत नाँहि

धारे अंग अंग तेग तबल कटोरे कोट। मरद मुछारे बल भारे तेह ताव रे।
वित्त के भँडारे हितचित्त के करारे सब। कित उजियारे प्रन भारे तेज मंद रे।
ग्वाल तू अखारे वाम झारे द्रौपदी के वास। दुसासन सारे ही उघारे पें न उघरे।
चार भुज वारे जाके होत रखवारे ताके। दोइ भुजवारे के बिगारे कहा बिगरे।३९।

कवित्त

कंस से हत्यारे करे क्रोध विकरारे जिन। मारे कई बालक विचारे मृदु मंद रे।
बंद में उतारे वसुदेव जडे तारे जहाँ। जन विकरारे[2] भयकारे कारे कंदरे।
ग्वाल कवि गोकुल सिधारे अँधियारे सोई। सेत फन वारे छत्र ठाटे चले सुंदरे।
चार भुज वारे जाके होत रखवारे ताके। दोइ भुजवारे के बिगारे कहा बिगरे॥४०॥

इति प्रस्तावक कवित्तं

मूलपाठ–१. रसरित। २. वीकरारे।

द्रगशतकम् ग्रन्थ

मंगलाचरण–दोहा

प्रान प्रियासु महेश की। तिनके सुत गननाथ।
विघन विनासन सुमति दा। दासन के नित साथ॥ १॥

तिनके पद अरविंद को। हाथ जोरि शिर नाय।
बन्दी विप्रसु ग्वाल कवि। रचत ग्रन्थ मन लाय॥ २॥

ग्रन्थ संवत् १९१९

संवत निधि शशि निधि शशी। फागुन पख उजियार।
द्वितीया रवि आरंभ किय। द्रगसत सुख को सार॥ ३॥

दोहा

प्यारी तनसु प्रयाग में। नैन त्रिवेनी चारु।
ताकी चितवन न्हान तें। है बैकुण्ठ अपार॥ १॥

प्यारी द्रग हीरा परस। चुनी जटित दुहु धाँहि।
पुतरी सालिगराम ज्वै। क्यों न पाप नशि जाहि॥ २॥

प्यारी तो तन ताल में। फूले द्रग अरविंद।
चितवनि रस मकरंद हित। मो मन भयो मलिंद॥ ३॥

प्रान प्रिया के द्रगन की। शोभा इमि दरसाय।
मनो श्वेत अरविंद में। रह्यो मलिंद लुभाय॥ ४॥

रंग रसीले द्रगन में। पुतरी यों दरसाइ।
मनो अतन तन धारिके। रह्यो सरन है आइ॥ ५॥

मन हरनी तो द्रगन की। छबि ऐसी अभिराम।
फटिक[1] जंत्र में स्याम मनि। पूजि चढ़ाई काम॥ ६॥

पिक बैनी अखियान की। खूबी अजब सुहाइ।
लछमी लसे सुहाग की। मृगगद बिन्दु लगाइ॥ ७॥

गज गवनी द्रग भूमि में। समरस अति दरसाय।
सांत सिंगार विरोध तजि। बसे कूटि इक आय॥ ८॥

नित्त पनो निरबाह को। करि सलाह रस राइ।
बसे छबीली द्रगन में। हास विंगार उछाह॥ ९॥

---

१. मूलपाठ :—फटीक।

सुर असुरन अरु सम्भु को। पोषत तिय तो नैन।
अमी वारूनी गरल करि। करत इते कन चैन॥ १०॥

नहिं विधि आसन लछि। नहिं हरि हाथ वसिंद।
जैसी कछू सुवास छबि। तिय तो द्रग अरविंद॥ ११॥

बरुनी बखतर धर रहै। पुतरी ढाल सजोर।
चितवनि बाँकी असि सिये। नैन सिपाही तोर॥ १२॥

बरुनी सांमल सखिन से। तारा हरि सुख रास।
सितता श्री राधा लिये। द्रग चंचल रचि रास॥ १३॥

तन नद अखियाँ नाव वन। तारे खेवट त्यार।
मनहि मलाही सेवके। दोवत रूप सुधार॥ १४॥

प्यारी अँखियाँ रावरी। है सुखदर दरियाउ।
बरुनी सुहृद सिकंदरी। कहत न आउ न आउ॥ १५॥

द्रग कामद में लिख रहै। तारे प्रेम सु आँक।
जो बाँचे सो होत है। बौरो बके निशाँक॥ १६॥

नैना फन्दक फबि रहे। अरुनाई को जाल।
प्रेम किलिन की गद नितें। मन मृग फँसि बद हाल॥ १७॥

द्रग समता बन जाइ जो। तौ जीवन सफलाइ।
इहि हित मृग वन जाय रहि। मीन रहे वन जाइ॥ १८॥

अँखिया तेरी अंगना। है अति ही अभिराम।
अमी पियालिन बीच धसि। पीवत सालिगराम॥ १९॥

नैना नटुवा रावरे। पलक सु ढोल बजाहि।
दीठि कला बाजी करैं। राजी करन पियाहि॥ २०॥

मदते कबहूँ लाल से। कबहुँ होत कजरार।
कबहुँ विशद ह्वै जात है। द्रग बहु रूप सु धार॥ २१॥

जो उझके चितवें तनक। रहे वही न सँभाल।
नैन तिहारे लाडिली। है कह कह दीवाल॥ २२॥

तो चितवनि अंकड़ सद्रस। छेदत सूधो जाय।
खैंचत हू हरि लेत है। हृदय प्रान इक दाय॥ २३॥

कोमल बेधक होत नहिं। तो द्रग कमल दिखाय।
पै यह शर है मैन को। यों हि पार कढि जाय॥ २४॥

नैनारो ना काम के। परी काम की छाय।
क्यों न होय ये काम कर। कौन काम सर साय॥ २५॥

नेह भरे गुन के भरे। जोति बरे द्रग दीप।
निस दिन इक से सखि दुवै। द्वीप द्वीप के दीप॥ २६॥

बादशाह तिय द्रगन के। तेरे द्रग है बाल।
पलक छत्र बरुनी चँवर। चितवनि फौज विशाल॥ २७॥

मदन महीपति के जु ये। तेरे द्रग सु वकील।
क्योंकि बढावत काम गे। होन देत नहिं ढील॥ २८॥

सारस द्रग तेरे निरखि। सारस वेद बिजात।
सारस दल दल नये। सारस जोड़ सुहात॥ २९॥

तीरंदाजी जो सिखे। तो द्रग गुरु करि लेइ।
दूरंदाजी की कला। इन तें बढ़ि को देइ॥ ३०॥

चितवनि मीठी मेलि के। नहीं लखन विषमाँहि।
तो द्रग द्रग करि गाफिली। मन घन छाँडत नाहिं॥ ३१॥

तेरे द्रग शरतें छिद्यो। प्रान सिपाही सूर।
ससकत हूँ सों ही रहे। नेको होत न दूर॥ ३२॥

पलक गोदरी बरुनि गुन। पुतरी ताज सुधार।
अहाँ सदा करि लेत मन। द्रग येन यों तुम्हार॥ ३३॥

द्रग तेरे खंजन नहीं। खंजर खूबी खूंब।
यो धीरज बखतर कठिन। फोड़ि जात है दूब॥ ३४॥

पुतरी विष बोरे भये। बरुनी चढ़े खरसान।
तो द्रग सर विकलान करि। क्यों नहिं सोखे प्रान॥ ३५॥

और बान तें जे छिदत। ते रोवत दिन रात।
तेरे द्रग सर के छिदे। छिन छिन अति हुलसात॥ ३६॥

यह अचरज मों को महा। बुधि कछु करत न दौर।
तो द्रग सर छेदो हियो। छिदत चहत है और॥ ३७॥

तो द्रग कमलन तें कढ़े। चितवनि पावक बान।
त्यागो निज कुल धरम जिन। क्यों न जरावें प्रान॥ ३८॥

द्रग तरकस ही में इन्हें। अजी रहन तुम देउ।
तिरछी चितवनि सरन तें। मत प्रानन को लेउ॥ ३९॥

बडो पाप निरदेयनो। घायल पें फिर वार।
द्रग सर छिदे परे तिन्हें। छेदत पार हजार॥ ४०॥

तेरे द्रग सर के छिदे। जखमी अति बद हाल।
सीवन मलहम तेलहू। पूरि सकत नहिं साल॥४१॥

सूर सुधा प्याली उभय। धरी चंद में लाय।
ताहि पान हित असुर शठ। तामें बैठे आय ॥४२॥

त्रिपुर रूप विविकुँड के। प्रभा कटोरी ऐन।
किधौं जंत्र जग मोहने। के प्यारो के नैन ॥४३॥

तेरे नैनन की तुला। तोल्यो मन अरु प्रान।
स्वास समीरहु के लगे। रहतजु एक समान ॥४४॥

हरि सत विधि रज ईश तम। इक इक गुन आधार।
प्यारी तो द्रग गुनति हूँ। क्यों न करे भव पार ॥४५॥

मीन केत के मीन तें। सरस प्रिया के नैन।
वात घात सब करत यें। दे दे सुंदर सैन ॥४६॥

झख चख बिन पग चलत चल। पें द्रग की सम नाहि।
उनको नर मारत रहे। ये नर हने स चाहि ॥४७॥

इक इक रंग के मीन बहु। द्रग त्रै रंग रंगीन।
ये मारे अरु जिबाइ ले। वे इन गुनन विहीन ॥४८॥

झख जल में जल चखन में। वे जल चपल दिखाय।
ये बिन जल चंचल रहे। ये गुन सरस सुहाय ॥४९॥

रिस मुद मेल अमेल की। कहँ कमलन तें सैन।
ये गुन गन अनगिन भरे। प्यारी तेरे नैन ॥५०॥

रतिहूतें अद्भुत लखे। प्यारी तेरे नैन।
छीरधि सीपी उलटि कें। हरि धरि पूजत मैंन ॥५१॥

ललची हँसि ता शोक मय। रिसी उछाही पीन।
डरी संकुचित चकित सम। चितवनि नव रस लीन ॥५२॥

रात मुदें दिन में खुले। यां तें कमल बने न।
निस दिन प्रफुलित रहत है। प्यारी तेरे नैन ॥५३॥

प्यारी तेरे द्रगन में। बसत मंत्र ये चार।
आकषरन सु उचाटिबो। मोहन, मारन, त्यार ॥५४॥

चंचलाइ तो द्रगन की। लखि लखि खंजन मीन।
सीखत पें आवत नहीं। होत मलीन रु दीन ॥५५॥

मीत दरस के समय की। द्रग चपलाई जु आय।
सो लखि मीन मलीन के। डूबे जल में जाय ॥ ५६ ॥

लखि तिय चख की चपलई। खंजन गये खिस्याय।
चिंता चिनगिनतें जरे। कारे परे लजाय ॥ ५७ ॥

वन वन के आवत रहे। वन वन के उमगाइ।
लखि द्रग तारे सम अवन। वन मिस रोवत जाइ॥ ५८॥

अँखियाँ तेरी शशिमुखी। बिन पखियाँ उड़िजाइ।
लखियाँ परे न काहु को। सखियाँ चतुर भुलाइ॥ ५९॥

भयेहु जादू सबनतें। वाहू को इन वीर।
स्वादू किय बलवीर को। तो द्रग जादूगीर॥ ६०॥

नैन नेकहू ये शिखे। यातें ठीक ही नैंन।
मिले खिले पल में छलें। दले मले चित चैन॥ ६१॥

बिन कजरारी करत रद। कजरारी अँखियान।
बिन सरखान करे कतल। ये असि सी खरसान॥ ६२॥

तो अखियाँ मदहद भरी। ताज लाग लबरेज।
पे न दया नेकहु भरी। काटत रहत करेज॥ ६३॥

अखियाँ अद्भुत रावरी। पानी को नितवास।
चितवत ही लाबे अगिन। घूमन करे प्रकास॥ ६४॥

धनु तें शर छुटि ना फिरे। दृग शर इनि फिर आइ।
यह विधि असतर तुहि दियो। दई सिहाइ सिहाइ॥ ६५॥

अमल कमल दल दल मलन। छलिन छलन छविवंत।
चपलन में चपलन चख। तो द्रग चलन लखंत॥ ६६॥

सूधी चितवनि बानसी। होइ जात है पार।
बंक बिलोकत तो नयन। तब दारत है मार॥ ६७॥

चितवत चितवनि चीकनी। चुभत चुभत चुभि जाय।
रूखी चितवनि पलक में। करत हजारन घाय॥ ६८॥

सरसीले हरनीनते। रहे रसीले ऐन।
कीले रतिपति ने तऊ। गजवीले ये नैन॥ ६९॥

नैना बेधक कहत है। बेधन कहूँ दिखाय।
जो न बेधतो कढ़त क्यों। हिये हजारन हाय॥ ७०॥

हरनी के हमें लखें। औ हरनी के ऐन।
हरनी के द्रग तें भले। मन हरनी के नैन॥ ७१॥

शशिवदनी तेरे नयन। जगत जोति के जाय।
जोति दिखै मन की हरैं। यह अति अचरज आय॥ ७२॥

अरजुन हू के बान तें। द्रग बलवान अपार।
वे तन छ्वै बेधत हुते। ये बिन परसे पार॥ ७३॥

पहिले ही ये नैन है। बड़े नुकीले तोर।
तामें सुरमा नोक यह। करे दुनाली फोर॥ ७४॥

बरछी हू की अनियतें। तो द्रग अनी इजाद।
क्योंकि घायल हु चहत है। और बिंघन को स्वाद॥ ७५॥

नैन छबीले छल छके। छलत छलिन छित छोर।
छिय छिय छितरत छिनक में। छीनत चित बरजोर॥ ७६॥

खूबी तो द्रग खुलक की। करे खुसी में लीन।
खंजन खिसियाने रहे। खिन खिन होतें खीन॥ ७७॥

नजव नजर तू करत है। गजब नैन की कोर।
अजब विरह की अगिन में। गजब होत मन मोर॥ ७८॥

मृग नैनन से उड़ रहे। मृग मदहूँ[1] बिच ऐन।
भरै चौकड़ी मृगन सी। प्यारी तेरे नैन॥ ७९॥

और अंग साजे रहे। भूषन तें दिन रैन।
ये बिन भूषन ही दिपत। शशि मुखि तेरे नैन॥ ८०॥

पाँखें राखे तिनहु की। अभिलाखें रद होत।
नाखें साखें सुरिन की। ये आँखें जग जोत॥ ८१॥

ये मद लोचन रावरे। रोचन रँगे दिखात।
शोचन के मोचन महा। मन रोचन सरसात॥ ८२॥

जल छिर के जल केल में। कैसे अरुन सुहात।
मीन केत के मीन मनु। कुसुम हौज लहरात॥ ८३॥

बैरिन[2] की यह रीत है। मारत है सब खून।
द्रग खूनी दिन रात कै। इन तें बचे कभून॥ ८४॥

संदीपन उनमाद कर। मोहन सोषन ऐन।
संतापन शर समर के। बसे बाल के नैन॥ ८५॥

मालति आम अशोक नित। अरुन नील अरविंद।
ये प्रसून शर समर के। तिय द्रग वास बसिंद॥ ८६॥

छीन लई बरछीन की। नोकें पैनी छीन।
दीन किये सर समर के। तिय द्रग अनी रँगीन॥८७॥

है न्यारी सब तियनतें। ये अनियारी आँख।
अजब गजब करि डारतो। जो कहुँ होते पाँख॥८८॥

मूलपाठ :—१. मदहु २. बैरीन।

तो अँखियाँ नीकी कहत। भरी अनी की घात।
हिय वेधत कसकत नहीं। भीतर धसकत जात ॥८९॥

काजर की का जर हती। जो दृग शोभ बढ़ाय।
दृग ये अनुपमते प्रभा। काजर की सरसाय ॥९०॥

रवि किरन हूँ ते अधिक। तुव इक चितवन तेज।
ओट भये हू हिय जरे। बुझे न किय जल सेज ॥९१॥

रोकि रोकि री रोकि री। ये गजबीले नैन।
पल में कतल करें हियो। ऐसे देखें मैं न ॥९२॥

तीरथ के जे फल विमल। ते नित तो दृग तीर।
तीरथ के सब समर के। चले न कछु तदवीर ॥९३॥

किते मरे केते मरत। किते साल बे शाल।
अँखियाँ तेरी ही भई। पर खेली ब्रजबाल ॥९४॥

क्या लाली कोयेन की। क्या कजरारी रेख।
क्या अलबेली आँख ये। औ चितवनि अनिमेख ॥९५॥

अधखुलियाँ अँखियाँन की। अलसनियांसु चितौन।
अनियाँ वनियाँ पैनियाँ। नहिं भेदनियाँ कौन ॥९६॥

क्या जाने किहि लगन में। रचे गये तो नैन।
लाख लाख विधि करत विधि। ऐसे और बनैन ॥९७॥

ये इठलाहट की भरी। अलबेली अँखियान।
निरखि निरखि बचि है न ब्रज। करें राखि तू म्यान ॥९८॥

सुंदरता शशि ते खतम। मधुर पियूष परे न।
खूबी नैनन की खतम। करो तिहारे नैन ॥९९॥

प्यारी लोचन ब्रह्म में। मन लय ह्वेवो भुक्ति।
नजर ओर यें जात नहिं। होत जगत तें मुक्ति ॥१००॥

इति श्री द्रगशतकं सम्पूर्ण

भक्ति और शांत रस के कवित्त

कवित्त

काल की न खबर कहाँ सो होय मेरे मन। ख्याल को है काया यह पानी भरी खाल को।
पालकी में चढ़ि मत भूले मढि नालकी में। कढि करि तीरथ सुमति खुसहाल को।
भालको जताये जिन मालन में ग्वाल कवि। करि सतसंग बेड़ि काटि भायजाल की।
बालको बिलोकन विसारि हालाहाल की तूं। छवि दीन दयाल की विलोक नंदलाल की १

कवित्त

तात मात बहिन सुता औ सुत बनिता हू। भानजे भतीजे साथ चलि है न खेवामें।
हाथी हथियार हय गय ग्राम धाम घौर। भूखन वसन छुटि जैहे नेक ठेवामें।
ग्वाल कवि कीजें सतसंगत जो फूले अंग। राखि निज वृत्ति एक साँवरे की सेवामें।
कोऊ है न हित सब वित्त कै लिवैया अरे। भूले मत चित्त नित काल के कलेवामें।२।

कवित्त

काया जिन आपनी गिने तू मन मूँढ येरे। याके घने गाहक है तोप पोष भरिजा।
बात कहे मेरी बात कै तु कहे मेरी यह। नीर नीर जीव कहे मेरी मोहि भरिजा।
ग्वाल कवि ऐसें सब झगरो मचावे तहाँ। काल कहे मेरी यह काहू की न चरिजा।
यातें नंदनंदन कें नामकी बनाव नाव। संत जन केवट ले पार तूं उतरिजा।३।

कवित्त

चोवा मार चंदन कपूर चूर चारु ले ले। अत्तर गुलाब को लगाये तन धारी में।
खासा तनजेब के वसन वेश धारि धारि। भूषन सँवारि कहा सोवे सेज पारी में।
ग्वाल कवि साधन के साधन लगेन मंद। बैठि मसलंद पै भुलायो दगा रारी में।
मेरी यह तेरी सो बँधी है मजबूत वैरी। मेरी मेरी कहत मिलेगो अंत माटी में।४।

कवित्त

पनहैन तेरो कोऊ तन है न तेरो इहाँ। प्रन है न तेरो बनि बैठ्यो गर्व भारी सों।
पितु है न तेरो कोऊ हितु है न तेरो तकि। चित्त है न तेरो बस्यो ही में जोरवारी सों।
ग्वाल कवि मेरो यह तेरो सो अँधेरो भयो। ताहि करि दूर बोध चंद उजियारी सों।
नग है न तेरे नरनग है न तेरे संग। नग है न तेरे पग क्यों न नग धारी सों।५।

कवित्त

जाने क्यों न जिय में प्रमाने क्यों न राधे पद। आने क्यों न हिय में सराइसो वसेरो भव।
पंचभूत जाइकें मिलेंगे पंचभूतन में। दूतन के घेरे यों कहेंगें मिलि घेरो सब।
ग्वाल कवि रचासा की न आसा कछु राखे यह। आई बान आई रार समुझि सबेरो अब।
माने जो न एके आज काल में अकाल काल। काल करि लैहे सतकाल काल तेरो तब।६।

कवित्त

जानि पर्‌यो मोकों जग असत अखिल यह। ध्रुव आदि काहू को न सर्वदा रहन है।
यामें परिवार व्यवहार जीत हारादिक। त्यागकर सबही विकरि रह्यो मन है।
ग्वाल कवि कहे काइ रह्यो न मेरो क्योंकि। काहू के न संग गयो तन धन है।
कियो मैं विचार एक ईश्वर ही सत्य नित्य। अलख अपार चारु चिदानंन घन है।७।

कवित्त

राम घनस्याम के न नाम तें उचारे कभू। कामवस ह्वै कै वाम भरे बाँह डाली है।
एक एक स्वाँस ये अमोल कढ़े जात हाय। लोल चित्त यहै ढोल फोरत उताली है।
ग्वाल कवि कहे तू विचारे वर्ष बढ़े मेरे। एरे घटे छिन आयुकी बहाली है।
जैसें धार दीखत फुहारे की बढ़त आछे। पाछें जल घटे हौज होत आवे खाली है।८।

कवित्त

आयो तू कहाँ ते उपजायो कौन कौन विधि। पालि बढ़ायो कहो कौन करकस तें।
कौन सों करार कौन कौन करि आयो फेर। आयकें भुलायो छक्यो काम वरकस तें।
ग्वाल कवि कहे तें न आप में विलोक्यो ब्रह्म। जुदों हू न जानि भज्यो भज्यो अरकस तें।
स्वास स्वास माँहि स्वास अंग तें कढ़त ऐसें। जैसें जंग परे कढ़े तीर तरकस तें।९।

कवित्त

रंक जात कीने पंकजात जाके नैनन में। ऐसें स्याम गात कै न ध्यान में समात है।
चंदमुखी साम्हने दिखात हरखात ख्यात। संपति जमात में भुलात हुलसात है।
ग्वाल कवि जीवन के तातमात तातभ्रात। खोवे तिन घात नरदेही करामात है।
यह मतजाने दिन जात रात जात भैया। बात बात माँहि बात जात बात जात है।१०।

कवित्त

जोइ तन तनक न भूमि में लगन हुते। सोई तन भूमि खोदि गाड़े नोन संग में।
जोइ तन तन कसके न छूय कोई नर। सोई तन गीध स्वान चींथत उमंग में।
ग्वाल कवि जो तन दुशालन लपेटे हुते। सो तन जरत देखे चेतिका उतंग में।
जोई तन अतरन के हौज में तरे है सोई। सुबासे तरल डोले तोप के तरंग में। ११।

कवित्त

साथी सब स्वारथ के हाथी हय हेत वारे। हाथ पाँय अंग में भरोसो है न ताहू को।
माता पिता भ्राता मीत नाता रह्यो ताता पूर। पूत अपनो है पें विस्वास है न जाहूको।
ग्वाल कवि सुख में सुने ही है सभी के सब। दुख की दरेहन में होत है पनाहू को।
याते उरधार एक रामे पखवार तेरो। रामै रखवार और कोऊ है न काहू को। १२।

कवित्त

तात कहे तात अरु तात करे तात मेरो। भ्रात कहे भ्रात मेरो जात जात जपनो।
ताई कहे मेरो अरु भाई कहे मेरो लाल। बाल कहे वाह यह मेरो बाल थपनो।
ग्वाल कवि कहे कहे सासुरे जमाई मेरो। भैन कहे भाई मेरो दाई कहे ठपनो।
तजिकें विवेक नेक सजिकें कुटेक लेखो। देखो जीव एक कों अनेक माने अपनो।१३।

कवित्त

पापन की पारी लेउवारी उरधारी सदा। वृत्ति न सुधारी कहो मोसो और कौन है।
तारी कहवाई जोन मेरी तुम तारी वात। ये ही अफसोस कहो ऐसो और कौन है।
ग्वाल कवि गनिका उधारी नाम प्रनधारी[1]। ये ही आसभारी औ भरोसो और कौन है।
नारी जो विपति वारी सिला ही विपतिवारी। करी सो विपत्तिवारी तोसो और कौन है। १४।

कवित्त

रीझन तिहारी न्यारी अजब निहारी नाथ। हारी मति व्यास हू की पावत न ठौर है।
नाम लियो सुत को सो हिते को विचार्‌यो नित। गनिका पढ़ायो शुक तापें करि दौर है।
ग्वाल कवि गौतम की नारी ह्वै शिला सरूप, कियो कब तरिबे को कहो कौन तौर है।
पति की पतारी हुति पातिक कतारी ताहि। तारी तुम राम तारी तुमसो न और है। १५।

कवित्त

गिरिसें कुचन लाई तिन्हें सहरावे रमा। भावे वह आपको अजब उपचार है।
गौतम की नारी शिला[2] भारी ह्वै परी ही नाथ। ताही पें पधारे त्यागि मग मृदु तार है।
ग्वाल कवि कहे यातें इकथल और हूहे। ताहि में बताऊँ जातें रुचि सुखसार है।
शिला हूतें हृदय कठोर मेरो महाराज। तापें पगधारि भलें करिये विहार[3] है। १६।

कवित्त

ग्रस्यो ग्राहराज ने गहकि गजराज गोटे। बलके भरोंसें रोसें जोसें जीउ महतो।
ग्राह खैचे जलमाँहि गज खैंचे थल माँहि। खल बल माच्यो जल उछलत वहतो।
ग्वालकवि तब गज लैकें सुण्ड-पुण्डरीक। तुण्ड करी ऊँचो कही हरि मोहि गहतो।
त्योंही चल्यो चक्र हरि चक्रधर चिते परै। नहिं तो गरीबन निवाज कौन कहतो।१७।

मूलपाठ—१. प्रनधारि, २. शीला, ३. वीहार।

कवित्त

पानी पीयबे कों गज गयो हो गहकि कर। आइ ग्रस्यो ग्राहने अथाह बल भरकें।
जोर बहु पार्‌यो पें न टार्‌यो गयो ग्राह तब। दीन ह्वै पुकार्‌यो हरि हार्‌यो मैं तो लरिकें।
ग्वाल कवि सुनत सवारी तजि प्यारी तजि। धाये चित्त सारी तजि नांगे पाउँ ठरके।
जानी न परी है कब चक्र चक्रधर जूसों। चलि दल नक्र गयो कर चक्र धरकें।१८।

कवित्त

देवन को दुःख दंद देवकी को फंद कर्‌यो। कंस मति मंद की जमी है नींव काल की।
ब्रजवासी वृंद की भई जो बात ही पसंद। रूप की अमंद राशि खुलि परी ख्याल की।
ग्वाल कवि श्रुतिन को कंद सो स्वच्छन्द भयो। मोहन बुलंद भयो मूरति रसाल की।
अद्‌भुत चन्द भयो जसुमति नन्द भयो। नन्द के अनन्द भयो जै कन्हैया लाल की।१९।

कवित्त

ब्रह्म आइ बाल भयो लोकपाल पाल भयो। देवन कृपाल भयो सुषमा को थाल है।
मुनि मन माल भयो राधा उरमाल भयो। रूप तिहुँ[1] लोक को सुताल भो विशाल है।
ग्वाल कवि गौवन को अद्‌भुत ग्वाल भयो। गोपिन को ख्याल नेह जाल भो रसाल है।
ब्रज इकताल भयो जसुदा के लाल भयो। लाल के भये तें भयो नंदमुख लाल है।२०।

कवित्त

आज ब्रज के नंद के भयो अनंद कंद नंद। वारो कोटि चंद ब्रजचंद बेसवारे पर।
षटमुख गजमुख पंचमुख लिये उमा। चौमुख औ भानु इन्द्र आये मौन मारे पर।
ग्वाल कवि कूदत लचत उचकत फेर। ख्यालन खचित[2] गावे चारहूँ किनारे पर।
मोर नचे मूसा नचे नन्दी नचे सिंघ नये। हंस नचे हय नचे गज नचे द्वारे पर।२१।

इति शांतरस कवित्त

दीपावली के कवित्त

छाई छवि छित पें छहर छवि छैलन की। छम के छपाकर छटा सी बाल त्यारी पे।
उन्नत अनार अलगारन अगारन पें। आसमान तारे उठे ऊपर अगारी पे।
ग्वाल कवि जाहर जवाहर जगत जोर। जागत जुआरी जाम जाम जर जारी पे।
दीप दीप दीपन की दीपति दवरि आइ। जंबू दीप दीपन में दिपत दीवारी पे।२२।

मूलपाठ—१. तिहूँ २. खचित।

दोहा

श्री जगदंबा राधिका। त्रिभुवन पति की प्रान।
तिनके पद में मन रहे। श्री शिव दीजें दान॥ २३॥

इति श्री ग्वाल कवि कृत भक्तभावन ग्रन्थ सम्पूर्णम्।

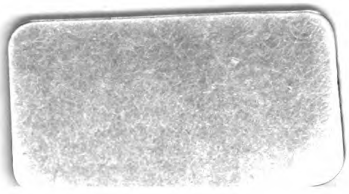
विक्रम संवत् १९५३ का माघ वदी १० शुक्रवार के दिन श्री सिहोर में खवास गोविन्द गीलाभाई ने यह ग्रन्थ मथुरा से कवि नवनीतजी की पास से मँगाय कें उन प्रति पर सें यह प्रति स्वार्थे स्वहस्ते लिख के पूरी की हैं।

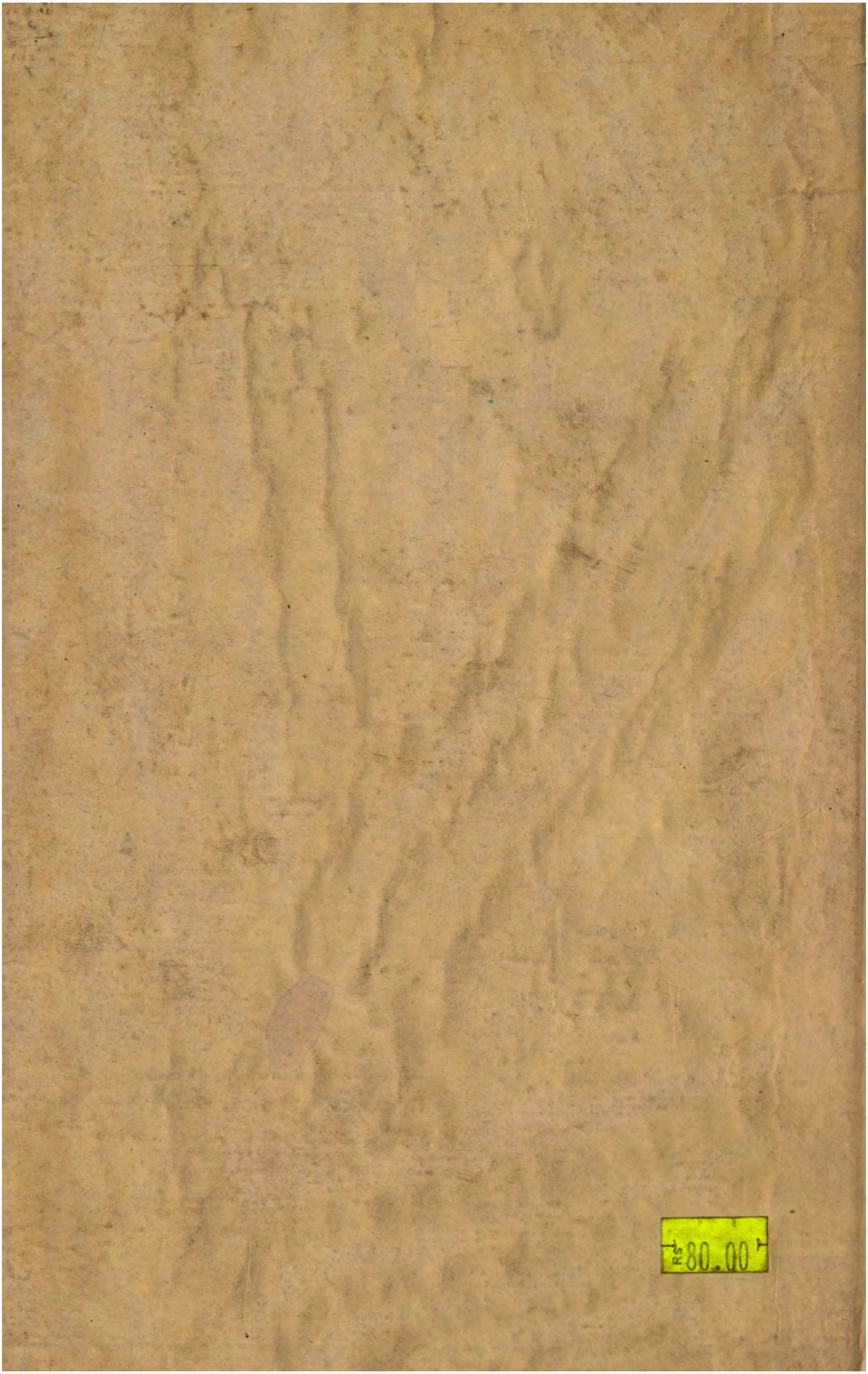
●



80
DKP
30
050499
LR






Rs 80.00